रघुवीर सहाय की कहानियाँ : संवेदना और शिल्प

(RAGHUVIR SAHAY KI KAHANIYAN: SAMVEDNA AUR SHILP)

एम.फिल् (हिन्दी) उपाधि हेतु लघु शोध-प्रबन्ध

2009

शोधार्थी

घनश्याम दास

शोध-निर्देशक

डॉ. गोबिन्द प्रसाद

सह-शोधनिर्देशक

डॉ. रामचन्द्र

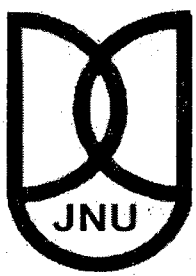

भारतीय भाषा केन्द्र

भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान

जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यलय

नई दिल्ली-110067

JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
Center of Indian Languages
School of Languages, Literature & Cultural Studies
NEW DELHI-110067, INDIA

Date 21.07.-2009

DECLARATION

I declare that the work done in this dissertation/thesis entitle "RAGHUVIR SAHAY KI KAHANIYAN: SAMVEDNA AUR SHILP" [STORIES OF RAGHUVIR SAHAY: SAMVEDNA AUR SHILP] by me is an original work and has not been previously submitted for any other degree in this or any other University/Institution.

GHANSHYAM DASS
(Research Scholar)

DR. GOBIND PRASAD
(Supervisor)
CIL/SLL&CS/JNU

DR. RAM CHANDRA
(Co-Supervisor)
CIL/SLL&CS/JNU

PROF. CHAMAN LAL
(Chairperson)
CIL/SLL&CS/JNU

समर्पित

स्वर्गीय माँ और पिताजी को सस्नेह

समर्पित, जिनके आशीर्वाद की छाया

मैं आज भी महसूस करता हूँ

भूमिका

रघुवीर सहाय एक ऐसे साहित्यकार थे जिनका साहित्य की सभी विधाओं पर समान अधिकार था। इन्होंने अपनी लेखनी से कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, बालसाहित्य आदि के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया।

रघुवीर सहाय जैसे महान साहित्यकार पर शोध का अवसर मिलना गौरव की बात है। विशेष रूप से इनकी कहानियों पर, क्योंकि हिन्दी-साहित्य जगत में इन कहानियों को उचित स्थान नहीं मिल पाया है। रघुवीर सहाय को एक कवि के रूप में तो जाना गया और सराहा गया, पर कहानीकार के रूप में इन्हें ज्यादा पहचान न मिल सकी। यह खेदजनक और दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि इतने महान साहित्यकार की कहानियों को उपेक्षा का शिकार होना पड़ा। वस्तुतः रघुवीर सहाय की कहानियाँ उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं जितनी इनकी कविताएँ।

रघुवीर सहाय की कहानियों के प्रति हिन्दी-साहित्य जगत की उदासीनता उचित नहीं जान पड़ती। दूसरे शब्दों में इसे इन कहानियों के प्रति अन्याय कहा जा सकता है। इस अन्याय को विराम देना आवश्यक है। इसी संदर्भ में यह शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस शोध-प्रबन्ध में चार अध्याय बनाए गए हैं।

पहला अध्याय रघुवीर सहाय के रचनाकार व्यक्तित्व विषय पर आधारित है। इसे चार भागों में बांटा गया है। इस अध्याय में रघुवीर सहाय का संक्षिप्त जीवन परिचय और साथ ही उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है। इनकी कविताओं के अन्तर्गत महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है। मसलन इनकी कविताओं

में राजनीति, आम आदमी, स्त्री चेतना आदि पर विचार किया गया है। साथ ही इन कहानियों की मूल संवेदना को भी रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

दूसरे भाग में रघुवीर सहाय के कहानीकार रूप और इनकी कहानियों को लिया गया है। इस भाग में इनकी कहानियों की मूल संवेदना को रेखांकित किया गया है, साथ ही इन कहानियों की शैली इत्यादि पर भी संक्षिप्त दृष्टिपात किया गया है।

इस अध्याय के तीसरे भाग में रघुवीर सहाय के पत्रकारिता कर्म को लिया गया है। इसके अन्तर्गत इनके पत्रकारिता क्षेत्र से लगाव पर विचार किया गया है। साथ ही इनके पत्रकारिता क्षेत्र में आगाज़ पर भी दृष्टिपात किया गया है। रघुवीर सहाय वास्तव में एक पत्रकार थे। मुख्य रूप से पत्रकारिता ही इनके जीवन का उद्देश्य था। अत: इस भाग के अन्तर्गत रघुवीर सहाय जी के पत्रकार जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

रघुवीर सहाय ने अनुवाद के क्षेत्र में भी सराहनीय कार्य किया है। इन्होंने विदेशी भाषाओं की कविता, नाटक आदि का हिन्दी भाषा में अनुवाद किया है। प्रथम अध्याय के चौथे भाग में रघुवीर के इसी रचनात्मक पहलू को लिया गया है। अत: प्रथम अध्याय के अन्तर्गत रघुवीर सहाय के व्यक्तित्व तथा समस्त रचना संसार को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

दूसरे अध्याय का विषय है- रघुवीर सहाय की कथा-दृष्टि। इसके अन्तर्गत सबसे पहले दृष्टि और उसके महत्त्व को बताने का प्रयास किया गया है। तत्पश्चात् कविता को लेकर रघुवीर सहाय की दृष्टि क्या थी अथवा इसके प्रति इनकी सोच क्या थी, इसे रेखांकित किया गया है। इसके बाद गद्य को लेकर रघुवीर की क्या

दृष्टि थी इस पर चर्चा की गई है एवं इसी के अन्तर्गत उनकी कहानियों पर भी विचार किया गया है। रघुवीर सहाय की दृष्टि में दया और सहानुभूति का क्या स्थान था, इस पर भी विचार किया गया है। रघुवीर सहाय की कथा-दृष्टि की प्रमुख विशेषताओं को इस अध्याय में स्पष्ट किया गया है।

तीसरे अध्याय के अन्तर्गत रघुवीर सहाय की कहानियों की संवेदना को उजागर किया गया है। इसके अन्तर्गत इन कहानियों में मानवीय संबंधों, सामाजिक यथार्थ, सामाजिक असमानताओं आदि को मूल संवेदना के रूप में समझने का प्रयास किया गया है। इन कहानियों की मुख्य 'थीम' पर भी इसी रूप में विचार किया गया है।

चौथे और अन्तिम अध्याय के रूप में इन कहानियों के शिल्प पर विचार किया गया है। शिल्प की अवधारणा के अन्तर्गत शिल्पकला को समझने का प्रयास किया गया है। इसके बाद इन कहानियों के अन्तर्गत शिल्पगत विशेषताओं पर विचार किया गया है।

वस्तुतः रघुवीर सहाय की कहानियों का शिल्प अत्यंत महत्वपूर्ण बिन्दु है। इन कहानियों की रचना और शैली परंपरागत कहानियों से एकदम भिन्न है। इसका कारण रघुवीर सहाय का अपना दृष्टिकोण ही था जिसके कारण वह कहानी में कहानी के पारंपरिक तत्वों को स्थान नहीं देते हैं। इसी कारण इनकी कहानियाँ कहानी न लगकर एक लेख ज्यादा लगती हैं। 'कहानी की कला', 'सीमा के पार का आदमी' ऐसी ही कहानियाँ हैं। इस अध्याय के अन्तर्गत इन कहानियों की भाषा पर भी विचार किया गया है।

अन्त में अपने शिक्षकों का आभार प्रकट करना भी मेरा कर्तव्य है जिनके मार्गदर्शन और उचित सलाह के कारण मेरा यह शोध कार्य उचित दिशा में जा सका। इनके मार्गदर्शन और उचित सलाह के बिना मेरा यह शोध कार्य सम्पन्न ही नहीं हो सकता था। इस सन्दर्भ में मैं डॉ. गोबिन्द प्रसाद और डॉ. रामचन्द्र जी का विशेष आभार प्रकट करता हूँ।

अपने मित्रों का धन्यवाद करना भी आवश्यक जान पड़ता है जिन्होंने समय-समय पर मुझे सहयोग और प्रोत्साहन दिया।

शोधार्थी

घनश्याम दास

अनुक्रमणिका

	पृ. सं.
भूमिका	i-iv
अध्याय-1 : रघुवीर सहाय का रचनाकार व्यक्तित्व	1-34
अध्याय-2 : रघुवीर सहाय की कथा-दृष्टि	35-62
अध्याय-3 : रघुवीर सहाय की कहानियों की संवेदना	63-85
अध्याय-4 : रघुवीर सहाय की कहानियों का शिल्प	86-98
उपसंहार	99-100
संदर्भ-ग्रंथ सूची	101-103

अध्याय-1

रघुवीर सहाय का रचनाकार व्यक्तित्व

भूमिका

''रघुवीर सहाय मेरे उन प्रिय कवियों में हैं जिन्हें मैं फुरसत के निहायत आत्मीय क्षणों में पढ़ता हूँ और पढ़ना चाहता हूँ। पढ़ता हूँ, सोचता हूँ, उत्साहित होता हूँ, प्रेरित होता हूँ, और जब कविता की इस दुनियाँ से निकलता हूँ तो थोड़ा भिन्न होता हूँ, भरा होता हूँ और संजीदा भी। जब मैं रघुवीर सहाय की कविताओं के प्रति अपनी पसंदगी और चाव के कारणों पर गौर करता हूँ तो मुझे साफ-साफ लगता है कि एक कारण तो उनकी कविताओं में रची-बसी गरीब, सीधे-सादे सामान्य भारतीय जन की तरफदारी।''[1]

यह कथन श्री विनय दुबे जी ने अपने लेख 'प्रिय कवि' में रघुवीर सहाय के लिए कहा है। इस कथन को पढ़ने से श्री रघुवीर सहाय जी की लोकप्रियता का अन्दाज़ा लगाना कठिन नहीं है। रघुवीर सहाय अपने चाहने वालों में जिस कदर लोकप्रिय थे उसे देखकर आभास होता है कि रघुवीर जी सिर्फ एक बड़े कवि ही नहीं थे, बल्कि वह कवि से भी कुछ अधिक थे। रघुवीर सहाय पर विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लिखे गए निबन्धों से यह बात साबित हो जाती है।

जीवन परिचय

रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसम्बर सन् 1929 ई. को लखनऊ, उत्तर प्रदेश में हुआ। इनके पिता का नाम श्री हरदेव सहाय था। श्री हरदेव सहाय जी साहित्य के अध्यापक थे। रघुवीर सहाय की माता जी का नाम श्रीमती तारादेवी था जिनका

---

1 रघुवीर सहाय, संपादक-विष्णु नागर, असद ज़ैदी, आधार प्रकाशन-पंचकूला-1993 (हरियाणा), पृ. 120

यक्ष्मा की बीमारी के कारण देहान्त हुआ। रघुवीर सहाय के पितामह श्री लक्ष्मी सहाय जी थे जो पहले पुलिस की नौकरी में थे और बाद में, नौकरी से सेवानिवृत्त होने के उपरान्त इन्होंने अपना शेष जीवन आर्य समाज की सेवा एवं उसके विचारों को फैलाने में लगा दिया।

रघुवीर सहाय के जीवन के आरंभिक दिनों पर दृष्टिपात किया जाए तो पता चलता है कि इनके बचपन के दिन कष्टमय बीते। इनकी माताजी श्रीमती तारा देवी जी रघुवीर जी को दो वर्ष का छोड़कर परलोकवासी हो गईं। रघुवीर जी जब दस वर्ष के हुए तो पिता भी दिवंगत हो गए। इतनी छोटी सी उम्र में ही रघुवीर को इस भारी विपत्ति से गुजरना पड़ा। लेकिन वह घबराए नहीं, अपने कर्म को छोड़ा नहीं और जीवन संघर्ष से जूझते रहे।

सन् 1944 ई. में इन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। 1946 ई. में इन्होंने इन्टर पास किया और इसी वर्ष इन्होंने प्रसारण-क्षेत्र में भी कदम रखा। इसे रघुवीर के पत्रकारिता जीवन का आगाज़ माना जा सकता है। इन्हें कविता का शौक आरंभ से ही रहा, 1946 ई. में ही इन्होंने अपनी पहली कविता लिखी- कामना। इसे हम इनके कवि जीवन का आगाज़ कह सकते हैं। यद्यपि इनकी जो पहली कविता छपी वह थी 'आदिम संगीत'। यह कविता 'आजकल' नामक पत्रिका के अगस्त अंक में प्रकाशित हुई थी। इसके साथ ही साथ इलाहाबाद से निकलने वाली 'विश्ववाणी' और 'संगम' पत्रिकाओं में भी यह कविता छपी थी। रघुवीर की कुछ और कविताएँ भी इधर-उधर छपती रहीं लेकिन इनको पहचान मिली 'दूसरा सप्तक' से। 'दूसरा सप्तक' के संपादक श्री अज्ञेय जी थे। 'दूसरा सप्तक' में रघुवीर जी के अलावा भवानी प्रसाद मिश्र, शकुन्त माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेरबहादुर सिंह, नरेश मेहता और धर्मवीर भारती जी थे।

'दूसरा सप्तक' के प्रकाशन वर्ष में ही यानी 1951 ई. में ही रघुवीर 'प्रतीक' में सहायक संपादक नियुक्त हुए और दिल्ली आ गए। इसी वर्ष लखनऊ विश्वविद्यलय से अंग्रेजी साहित्य में रघुवीर जी ने एम.ए. भी किया था। एम.ए. करने के पश्चात् रघुवीर जी प्रतीक में नियुक्त होकर दिल्ली चले आए थे। सन् 1952 ई. में अगस्त महीने में 'प्रतीक' बन्द हो गया और रघुवीर जी ने कुछ समय तक मुक्त लेखन किया।

कुछ समय के पश्चात् रघुवीर सहाय जी ने आवाज़ की दुनिया में कदम रखा और आकाशवाणी से जुड़ गए। सन् 1953 ई. में रघुवीर आकाशवाणी के समाचार विभाग में उपसम्पादक के पद पर नियुक्त हुए। सन् 1955 ई. में इनका विवाह विमलेश्वरी जी से हुआ। किसी कारणवश मार्च 1957 ई. में इन्होंने आकाशवाणी से त्यागपत्र दे दिया और कुछ समय तक मुक्त लेखन किया। इसी दौरान लखनऊ से निकलने वाली पत्रिका 'युगचेतना' से रघुवीर सहाय जी जुड़े। इसी पत्रिका में इनकी एक कविता छपी- 'हमारी हिन्दी' जिसे लेकर अनेक प्रकार के प्रश्नों से रघुवीर सहाय जी को दो-चार होना पड़ा। इस कविता को लेकर काफी बवाल मचा। इस कविता की आरंभिक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

''हमारी हिन्दी एक दुहाजू की नई बीवी है

बहुत बोलनेवाली बहुत खानेवाली बहुत सोनेवाली''[1]

इस कविता के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त किया गया। श्री विद्यानिवास मिश्र जी, जो सूचना विभाग में उपनिदेशक थे, ने पत्रिका की सरकारी खरीद की 400 प्रतियाँ खरीदने तक से मना कर दिया। इस कविता के कारण रघुवीर जी को चौतरफा विरोध झेलना पड़ा।

---

1 रघुवीर सहाय संचयिता, संपादक-कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 193

सन् 1957 ई. में इनकी प्रथम संतान मंजरी का जन्म हुआ। 1958 ई. में दूसरी पुत्री का जन्म हुआ जिनका नाम रखा गया- हेमा। 1960 ई. में इनके घर तीसरी बेटी ने जन्म लिया और नाम गौरी मिला। मार्च 1961 ई. में रघुवीर जी के घर एक बेटे ने जन्म लिया। उसे बसन्त नाम से जाना गया।

व्यक्तित्व

रघुवीर सहाय जी दिल्ली के मॉडल टाउन इलाके में अपने भैया और भाभी के साथ रहते थे। यहीं अनेक व्यक्तियों से इनका संपर्क हुआ जिनमे एक थे श्री मनोहर श्याम जोशी। श्री जोशी जी जल्दी ही रघुवीर के अच्छे मित्रों में शामिल हो गए। श्री जोशी जी जल्दी ही रघुवीर के ख़ास जानने वालों में सम्मिलित हो गए। श्री रघुवीर सहाय और मनोहर श्याम जोशी जी ने अपने जीवन का बहुत-सा समय एक साथ दिल्ली की सड़कों पर बिताया था। श्री जोशी जी ने रघुवीर को बहुत करीब से जाना था। श्री जोशी जी ने रघुवीर जी के व्यक्तित्व पर टिप्पणी करते हुए लिखा है-

> ''रघुवीर सहाय का व्यक्तित्व कुछ ऐसा गुरू गंभीर था कि ज्यादातर लोग उससे तक़ल्लुफ बरतना और उसे रघुवीर जी पुकारना पसन्द करते थे। मेरे मुँह से बहरहाल उसके लिए कभी रघुवीर जी नहीं निकल सका।...[1]

जोशी जी के इस कथन से सहज ही रघुवीर से उनकी मित्रता की गहराई का अनुमान किया जा सकता है।

श्री जोशी ने रघुवीर सहाय के स्वभाव के विषय में लिखा है-

''रघुवीर सहाय को मित्र बनाने की आदत नहीं थी। उसके दोस्त बस

---

[1] रघुवीर सहाय : रचनाओं के बहाने एक स्मरण, मनोहर श्याम जोशी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृ. 7

गिने-चुने हुआ करते थे और अक्सर वे साहित्यिक बिरादरी से बाहर के लोग होते थे।''[1]

वस्तुतः रघुवीर सहाय का व्यक्तित्व औरों से कुछ अलग हटकर था, मसलन वह जिसे उचित समझते थे उसका समर्थन वह बेधड़क करते थे एवं अनुचित कार्य को वह कदाचित सहन ही नहीं कर पाते थे। इसी वजह से इनके आस-पास के लोग इनसे कन्नी काटते थे। श्री जोशी जी ने इनके विषय में लिखा है-

''मैंने यह पाया कि ज्यादातर समकालीनों को रघुवीर खासा नकचढ़ा, तुनक मिजाज़ जरूरत से ज्यादा बारीकियाँ छाँट-छाँटकर अपने को तीसमारखाँ साबित करने में लगा हुआ और हर मुद्दे पर अपना अलग ही राग अलापने वाला अहंकारी प्राणी लगता था। तब रघुवीर छोटी से छोटी बात को बहुत बड़ा मुद्दा बना डालने और उस पर किसी भी समझौते के लिए तैयार न होने के लिए खासा बदनाम था।''[2]

श्री शमशेर बहादुर सिंह ने रघुवीर सहाय पर एक कविता लिखी है। इस कविता की कुछ लाइनें इस प्रकार से हैं-

''र. स. मुझे अच्छा लगता है। इसमें एक सादगी
है। सरलता के साथ सार-तत्व जैसा कुछ।''[3]

इसके अलावा शमशेर जी ने लिखा है-

तुमने इस कृतघ्न हिन्दी को
बहुत कुछ दिया। अनेक
रंग की कहानियाँ कई

---

1 रघुवीर सहाय : रचनाओं के बहाने एक स्मरण, मनोहर श्याम जोशी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृ. 12

2 वही, पृ. 13

3 रघुवीर सहाय, संपादक-विष्णु नागर, असद जैदी, आधार प्रकाशन-पंचकूला हरियाणा-1993, पृ. 18

मिजाज़ के छन्द और मुक्त छन्द

परछाइयाँ और रोशनियाँ।[1]

यह यूँ ही नहीं है कि शमशेर बहादुर सिंह रघुवीर जी पर कुछ लिखने बैठे और जो जी में आया लिख दिया। वस्तुतः रघुवीर जी का व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था जिसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता था।

रघुवीर सहाय का व्यक्तित्व सभी को आकर्षित करता था। रघुवीर जी की एक खास विशेषता थी- परोपकार। रघुवीर जी के अन्दर परोपकार की भावना का विशेष बाहुल्य था। किसी की भी सहायता करने में रघुवीर कभी हिचकते नहीं थे। इनके परोपकार के दायरे में मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षी सभी आते थे। इनकी कहानियों में इसके प्रमाण मिल जाते हैं। रघुवीर सहाय ने श्री मनोहर श्याम जोशी जी की अनेक बार सहायता भी की थी। जब वह (जोशी जी) दिल्ली आए तब रघुवीर जी ने ही कई प्रकार से उन्हें सहारा दिया था। जोशी जी को रोजगार का जरिया भी रघुवीर जी ने ही मोहय्या कराया था। श्री जोशी जी ने इनके विषय में लिखा है-

> ''मैं रघुवीर का यह आभार कभी नहीं भूल सकता कि केवल परिचित होते हुए भी उसने मेरा स्वातगत इस तरह किया मानों मैं उसका मित्र ही नहीं, अनुज भी होऊँ। उसी ने मेरे लिए लिखकर पैसा कमाने के रास्ते दिल्ली में खुलवाए''[2]

वास्तव में रघुवीर जी के मन में हरेक आदमी के लिए हमदर्दी थी। वास्तव में यह रघुवीर का व्यक्ति ही था जो इतने कष्टों में भी विचलित नहीं हुआ।

---

1 रघुवीर सहाय, संपादक-विष्णु नागर, असद जैदी, आधार प्रकाशन-पंचकूला हरियाणा-1993, पृ. 15

2 रघुवीर सहाय : रचनाओं के बहाने एक स्मरण, मनोहर श्याम जोशी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृ. 12

रघुवीर ने अपने जीवन में अनेक कष्ट देखे थे। लेकिन फिर भी वह हारे नहीं। उन्होंने कभी नहीं चाहा कि कोई उन्हें दया भरी नजरों से देखे। वह दया को अपमान समझते थे। वह नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें असहाय आदि समझकर उन पर किसी भी प्रकार का दया भाव दिखाए। इसका कारण उनका व्यक्तित्व ओर उनकी सोच थी। जोशी जी का यह वक्तव्य देखिए-

> "दया चाहने वाले और दया करने वाले तमाम इंसान उसे घटिया मालूम होते थे। इसीलिए हमेशा वह बहुत सतर्क रहता था कि कहीं किसी जरूरत मंद से मेरी हमदर्दी दया का रूप न ले ले।"[1]

लेकिन रघुवीर सहाय ऐसे हरेक शख्स को पसंद करते थे जो संघर्षशील हो। जो अपनी मुसीबतों के बावजूद अपने आत्मसम्मान के लिए लगातार संघर्षरत हो रघुवीर ऐसे व्यक्ति की सहायता के लिए हमेशा तैयार रहते थे। यह रघुवीर के व्यक्तित्व की बहुत बड़ी विशेषता थी जो उन्हें महान बनाती थी।

रघुवीर सहाय संवेदनशील प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनकी संवेदनात्मक अभिव्यक्तियाँ उनके गद्य-साहित्य ओर पद्य-साहित्य दोनों में सहज ही मिल जाती हैं। इनकी संवेदनात्मक प्रवृत्ति इनकी कहानियों में देखने को मिल जाती है। मेरे और नंगी औरत के बीच, एक जीता जागता व्यक्ति, सेब आदि इसी प्रकार की कहानियाँ हैं।

रघुवीर सहाय का काव्य संसार

रघुवीर सहाय को साहित्य-जगत एक कवि के रूप में अधिक जानता है। रघुवीर की प्रसिद्धि एक कवि के रूप में ही अधिक है। हालांकि रघुवीर ने गद्य-साहित्य में भी अपनी लेखनी का भरपूर इस्तेमाल किया है। इन्होंने कविता के अलावा कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, बालसाहित्य आदि भी लिखा।

---

1 रघुवीर सहाय : रचनाओं के बहाने एक स्मरण, मनोहर श्याम जोशी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृ. 17

रघुवीर सहाय की प्रारंभिक कविताएँ 'दूसरा सप्तक' में संकलित हैं। यहीं से रघुवीर सहाय को कवि रूप में प्रसिद्धि मिली। 'दूसरा सप्तक' में इनकी कुल पन्द्रह कविताएँ हैं जिनका अपना महत्व है। यह कविताएँ रघुवीर के कवि-जीवन की शुरूआती कविताएँ हैं, अतः यदि साहित्य जगत् (हिन्दी साहित्य जगत) में इन्हें विशेष स्थान नहीं मिला तो इसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। रघुवीर की इन कविताओं पर गिरिजाकुमार माथुर और हरिवंशराय बच्चन का प्रभाव था जिसे रघुवीर ने 'दूसरा सप्तक' के वक्तव्य में स्वीकार किया है।

'दूसरा सप्तक' की कविताएँ, जो रघुवीर जी ने लिखी हैं उनका स्वर गीतात्मक है। इनमें कुछ कविताएँ प्रकृति से संबंधित हैं। इन कविताओं में ग्रामीण परिवेश को भी अभिव्यक्ति मिली है। इस संदर्भ में 'सायंकाल' कविता को देखा जा सकता है-

खिंचा चला जाता है दिन का सोने का रथ
ऊंची-नीची भूमि पार कर
अब दिन डूब रहा है जैसे
कोई अपनी बीती बातें भुला रहा हो,
परती पर की दूब घास में अरझ-अरझ कर
उजले-उजले अनबोये खेतों से होकर
धूप अनमनी-सी वापस लौटी जाती है।[1]

तथा-

''हारों से लौट रहे हैं जन
फैले-फैले मैदानों में बहने वाली
लग रही हवाएँ उन के चौड़े सीनों से''[2]

सायंकाल, मुँह अंधेरे, वसन्त, पहला पानी आदि कविताओं को पढ़कर यह भ्रम पाठक वर्ग को हो सकता है कि रघुवीर सहाय ग्रामीण परिवेश से जुड़े हुए

---

1 दूसरा सप्तक, संपादक-अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन-1996, पृ. 152

2 वही, पृ. 152-53

व्यक्ति हैं। परन्तु यह केवल भ्रम ही है, क्योंकि रघुवीर ग्रामीण जीवन के न तो व्यक्ति हैं और न ही कवि। इस संदर्भ में इतना ही कहा जा सकता है कि व्यक्ति कभी-न-कभी ग्रामीण परिवेश के संपर्क में आता है और उससे प्रभावित होता है। यह स्वभाविक भी है। रघुवीर जी के सन्दर्भ में भी ऐसा ही समझना चाहिए। इस सन्दर्भ में श्री नन्द किशोर 'नवल' जी के विचार अवलोकनीय हैं-

> ''उनके पुरखों का घर उन्नाव जिले में है। चौदह-अट्ठारह की उम्र में वे कई बार गाँव गए थे और वहाँ रहते हुए डायरी भी लिखी थी।''[1]

रघुवीर जी के पुरखों का रहन-सहन उन्नाव जिले में होने के कारण यह स्वभाविक था कि वह वहाँ जाते, जैसा की नवल जी ने कहा है कि वह 14-18 वर्ष की उम्र में वहाँ कई बार गए थे। अत: उन पर वहाँ के परिवेश का प्रभाव अवश्य पड़ा और चूंकि उनका मन एक कवि का मन था तो स्वभाविक ही वह असर कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्ति पाता, और जिसने पाई। अत: 'दूसरा सप्तक' की कविताएँ इसी संदर्भ में देखी जानी चाहिएँ।

कविता संकलन

रघुवीर सहाय का पहला काव्य-संकलन 1960 ई० में छपा- 'सीढ़ियों पर धूप में', इस संकलन में हालांकि इनकी कविताओं के अलावा कहानियाँ और निबन्ध भी सम्मिलित हैं। अत: इसे एक मिला-जुला संग्रह कहना अनुचित न होगा।

रघुवीर सहाय का दूसरा कविता संग्रह-'आत्महत्या के विरुद्ध' 1967 ई० में प्रकाशित हुआ। इस कविता-संग्रह के विषय में रघुवीर ने कहा है कि इस संग्रह की कविताएँ अकविता के विरोध में लिखी गई कविताएँ है। इसके बाद सन् 1975 ई० में रघुवीर सहाय का एक और काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ-'हँसो हँसो जल्दी हँसो।' इस कविता-संग्रह की विशेषता यह है कि इस संग्रह की कविताओं का

---

1 समकालीन काव्य यात्रा, नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन-2004, पृ. 83.

शिल्प बदला हुआ है। दूसरे शब्दों में कहें तो 'हँसो हँसो जल्दी हँसो' संग्रह की कविताओं का शिल्प अलग है। इनके अलावा 'लोग भूल गए हैं' और 'कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ' काव्य संग्रह क्रमशः 1982 एवं 1989 ई० में प्रकाशित हुए।

'सीढ़ियों पर धूप में' कविता संग्रह में अनेक विषयों से संबंधित कविताएँ संकलित हैं। इनमें व्यंग्यात्मक कविताएँ भी हैं। इसमें मध्यवर्गीय दुःखों में घिरे हुए आम आदमी का चित्र खींचा गया है। इन कविताओं में मध्यवर्गीय पीड़ा को व्यंजित किया गया है। 'हमने यह देखा' ऐसी ही कविता है। अभावों से जूझते आदमी से यह कविता निकट का रिश्ता रखती है। कुछ पंक्तियों पर गौर किया जाना आवश्यक है-

"यह क्या है जो इस जूते में गड़ता है
यह कील कहां से रोज निकल आती है
इस दुःख को रोज समझना क्यों पड़ता है।"[1]

इस कविता का संबंध हर उस शख्स से जुड़ जाता है, जो अभावों में जी रहा है। इसी कविता की कुछ और पंक्तियां भी दृष्टव्य हैं-

हमने यह देखा दर्द बहुत भारी है
आवश्यक भी है जीवन भी देता है
यह नहीं कि उससे कुछ अपनी यारी है[2]

यह दर्द भारी तो है, लेकिन इसमें जीवन जीने की कला छिपी है। रघुवीर की यह कविता आदमी को संदेश देती है कि दुख से भागो नहीं, उसका मुकाबला करो क्योंकि इसी से जीवन सुखमय होगा। वास्तव में रघुवीर की यह कविता बड़ी महत्त्वपूर्ण है।

रघुवीर की कविता का दुख आम आदमी का दुख है। रघुवीर ने आम आदमी की पीड़ा को बड़ी गहराई से महसूस किया था। इनकी कविता दर्द का

---

1 रघुवीर सहाय संचयिता, संपादक-कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 271

2 वही, पृ. 272

अहसास तो कराती ही है, साथ ही उसमें एक टीस भी महसूस होती है। यह टीस एक आम आदमी की उदासीनता से उपजी हुई टीस है। इस संदर्भ में रघुवीर की एक कविता है-रामदास। इस संदर्भ में इस कविता जैसी और कविता मिलना मुश्किल है। रघुवीर ने एक आम आदमी की हत्या को जिस रूप में दिखोया है, उससे पता चलता है कि रामदास कोई एक व्यक्ति ही नहीं है, जो मरा है, बल्कि वहाँ एकत्रित सारी भीड़ रामदास जैसे लोगों का ही समूह है, जिनकी एक-एक करके हत्या हो जाएगी।

हत्यारा मात्र एक व्यक्ति है और भीड़ में सैकड़ों लोग मौजूद हैं फिर भी-

भीड़ ढेलकर लौट गया वह
मरा पड़ा है रामदास यह
देखो-देखो बार-बार कह
लोग निडर उस जगह खड़े रह
लगे बुलाने उन्हें जिन्हें संशय था हत्या होगी।[1]

रघुवीर सहाय ने इस कविता के माध्यम से मरते हुए समाज का चेहरा दिखाने की कोशिश की है। इसमें व्यंग्य का बड़ी अच्छी तरह से इस्तेमाल किया गया है। उपरोक्त पंक्तियों में अन्तिम लाईन में व्यंग्य का बड़े अच्छे ढंग से प्रयोग है।

इस कविता में भीड़ ढेलकर हत्यारे का लौट जाना बहुत ही बड़ी और दुखद घटना है। भीड़ को ढेलकर हत्यारा निकल जाता है और कोई आवाज तक उठाने वाला नहीं। क्या यह समाज मरे हुए बेजान लोगों का समूह मात्र है, शायद रघुवीर सहाय का इशारा इसी तरफ है। यहाँ व्यक्ति की, समाज की संवेदना मर चुकी है। आज रामदास मरा है, कल कोई और मार दिया जाएगा, परसों किसी और की हत्या हो जाएगी। यह वाक्या (सिलसिला) यूँ ही चलता रहेगा जब तक कि समाज

---

[1] रघुवीर सहाय, संपादक विष्णु नागर, असद जैदी, आधार प्रकाशन-पंचकूला, 1993, पृ. 52

की आँखें नहीं खुलती। हत्यारे का अकेला होते हुए भी भीड़ से निकल जाना लोगों की उदासीनता का ही परिणाम है। यह समाज संवेदनाहीन समाज बन गया है। तभी कोई हत्यारे को पकड़ नहीं पाता। यह समाज मात्र मूक दर्शक बनकर तमाशा देखता है क्योंकि-

लोग सिर्फ लोग हैं, तमाम लोग, मार तमाम लोग
लोग ही लोग हैं चारों तरफ लोग, लोग
मुँह बाए हुए लोग और आँख चुंधियाए हुए लोग
कुढ़ते हुए लोग और बिराते हुए लोग[1]

तथा-

''गरजते हैं, घिघियाते हैं
ठीक वक्त पर चीं बोल जाते हैं''[2]

स्पष्ट है कि रघुवीर सहाय समाज के उन लोगों की ओर इशारा कर रहे हैं जो गीदड़ भभकियाँ तो देना जानते हैं, लेकिन समय आने पर सचमुच के गीदड़ बन जाते हैं। इस कारण समाज में अपराध बढ़ता है, हत्याएं होती है।

रघुवीर सहाय की कविता में जहाँ आम आदमी के दु:ख और उसकी समस्याओं का चित्रण है, वहीं उसमें राजनीतिक मोहभंग की कविताओं का भी प्रमुख स्थान है। 'आत्महत्या के विरुद्ध' संग्रह की कविताएँ इसी मोहभंग की कविताएँ है। संभवत: ये कविताएँ भारतीय स्वाधीनता ओर संसदीय जनतंत्र से होनेवाले रघुवीर सहाय के मोहभंग के ही कारण पल्लवित अथवा उद्‌भूत हुईं। वास्तव में 1962 ई. में होने वाला चीन का आक्रमण पूरी तरह से नेहरू-युग और उसके दिखाएँ सपने दोनों को छिन्न-भिन्न कर देता है। इसके बाद कवि-दल में जैसे खलबली मच गई। रामधारी सिंह दिनकर ने 'परशुराम की प्रतीक्षा' की रचना की जो इसी आक्रमण के प्रतिक्रिया स्वरूप अस्तित्व में आई। धूमिल जैसे

---

1 समकालीन काव्य यात्रा, नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 95

2 वही, पृ. 95

क्रांतिकारी कवियों की लेखनी रूक न सकी। अतः रघुवीर सहाय पर भी इसका प्रभाव पड़ना स्वभाविक था और अवश्य पड़ा। अतः राजनीति रघुवीर सहाय की कविता का मुख्य विषय बन गई। हाँ इतना अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि रघुवीर की राजनीतिक कविताएँ दलीय राजनीति से प्रेरित नहीं रहीं।

रघुवीर सहाय ने अनेक राजनीतिक कविताएँ लिखीं।

मेरा प्रतिनिधि' कविता की कुछ पंक्तियाँ देखिए-

सिंहासन ऊँचा है सभाध्यक्ष छोटा है
अगणित पिताओं के
एक परिवार के
मुँह बाए बैठे हैं लड़के सरकार के
लूले काने बहरे विविध प्रकार के
हल्की-सी दुर्गन्ध से भर गया है सभाकक्ष।[1]

इस कविता में रघुवीर ने भारतीय संसद का चित्र खींचा है जो बहुत ही विडम्बनापूर्ण है और साथ ही बीभत्स एवं कुत्सित भी। 'हल्की-सी दुर्गन्ध से भर गया है सभाकक्ष', इस पंक्ति में कटु व्यंग्य का सहारा लिया गया है। दुर्गन्ध सभा में मौजूद सभासदों के बदन से न आकर उनके चरित्र से आ रही है, उनकी आत्मा से आ रही है। सभासदों का आचरण ही कुछ ऐसा है कि उससे संसद जैसी महत्वपूर्ण जगह भी जैसे अशुद्ध हो गई है। एक उदाहरण और प्रस्तुत है-

टूटते-टूटते
जिस जगह आकर विश्वास हो जाएगा कि
बीस साल धोखा दिया गया
वहीं मुझे फिर कहा जाएगा विश्वास करने को
पूछेगा संसद में भोलाभाला मंत्री
मामला बताओ हम कार्रवाई करेंगे।[2]

---

1 समकालीन काव्य यात्रा, नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 103

2 वही, पृ. 104

इस कविता का नाम है 'एक अधेड़ भारतीय आत्मा'। इस कविता में नेता लोगों के धोखेबाज होने की ओर इशारा किया गया है। भोलाभाला मंत्री में व्यंग्य के माध्यम से रघुवीर सहाय ने यह बताने की कोशिश की है कि ऐसे लोग भोले भाले दिखते जरूर हैं, लेकिन अक्सर ऐसा होता नहीं है। ये लोग 'संसद जैसी गरिमापूर्ण जगह को भी दूषित कर देते हैं। इसी कविता में रघुवीर ने आगे लिखा है-

''दल का दल
पाप छिपा रखने के लिए एकजुट होगा
जितना बड़ा दल होगा उतना ही खाएगा देश को''[1]

अत: स्पष्ट है कि रघुवीर सहाय के विचार राजनेताओं को लेकर कितने तल्ख़ थे। राजनीति वास्तव में बुरी चीज़ नहीं होती, बल्कि नेता लोग उसका गलत इस्तेमाल करके उसे भी गलत बना देते हैं। रघुवीर के विचार राजनीतिक दलों को लेकर किस प्रकार के थे वह इन पंक्तियों में लक्ष्य किया जा सकता है-

पांच दल आपस में समझौता किए हुए
बड़े-बड़े लटके हुए स्तन हिलाते हुए
जांघ ठोंक एक बहुत दूर देश की विदेश नीति पर
हौंकते डौंकते मुँह नोच लेते हैं
अपने मतदाता का[2]

राजनीतिक दल वास्तव में सिर्फ अपनी कुर्सी को बचाने के चक्कर में लगे रहते हैं। उन्हें मतदाता की जरूरत सिर्फ वोट लेने तक ही होती है। उसके बाद उस मतदाता का ही मुँह नोच लिया जाता है। वास्तव में यह हमारे लोकतंत्र की विडम्बनात्मक स्थिति है।

---

1 समकालीन काव्य यात्रा, नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 104

2 वही, पृ. 104

साधारण जन

रघुवीर सहाय की कविताओं में साधारण जन अथवा यो कहें कि एक आम आदमी का विशेष स्थान है। रघुवीर आम आदमी से जुड़े हुए कवि हैं और एक आम आदमी की ज़िंदगी में किस कदर समस्याओं का जमावड़ा रहता है वह उसे बख़ूबी जानते थे। वह स्वयं अभावों में जिए थे, अत: इन अभावों से एक साधारण आदमी किस तरह लड़ता है, उन्हें इस बात का एहसास था।

रघुवीर सहाय की कविता में 'भीड़' शब्द अक्सर देखा जा सकता है। वास्तव में इस 'भीड़' में खड़ा लगभग हर शख्स एक आम आदमी ही है, एक साधारण आदमी है। यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि उनकी अधिकतर राजनीतिक कविताओं के केन्द्र में एक आम आदमी ही खड़ा हुआ है। 'हँसो हँसो जल्दी हँसो' की कविताओं के विषय में श्री नंद किशोर नवल जी के विचार देखने योग्य हैं-

> ''राजनीति 'हँसो हँसो जल्दी हँसो' की कविताओं का भी एक मुख्य विषय है लेकिन इन कविताओं का असली नायक साधारण जन है। जो कविताएँ राजनीतिक हैं, उनके पार्श्व में भी साधारण जन ही खड़ा है या फिर साधारण जन के नजरिए से ही कवि ने किसी राजनीतिक घटना या चरित्र को देखा है।''[1]

'रामदास' कविता तो एक आम आदमी का ही दूसरा प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करती है। इसमें रामदास तो एक आम आदमी की भूमिका में है ही, साथ ही सड़क पर मौजूद भीड़ आम आदमियों का ही समूह है। यह भीड़ साधारण जन की ही भीड़ है।

'रामदास' कविता में जो दहशत लोगों के मन में (रामदास के माध्यम से) दिखाई गई है वह लोगों की उदासीनता का परिणाम है। यहाँ कोई किसी का साथ नहीं देता। अत: एक आम आदमी अकेला पड़ गया है-

---

1 समकालीन काव्य यात्रा, नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 111

''धीरे-धीरे चला अकेले
सोचा साथ किसी को ले ले
फिर रह गया, सड़क पर सब थे
सभी मौन थे सभी निहत्थे
सभी जानते थे यह उस दिन उसकी हत्या होगी''[1]

अकेला चलने वाला रामदास है। 'सड़क पर सब थे' का मतलब उस जनसमूह से है जिसकी संवेदनाएं मर चुकी हैं। रामदास को पता है कि कोई उसका साथ देने आगे नहीं आएगा, अत: उसे अकेले ही चलना होगा, और वह अकेला चल पड़ता है। इस कविता को लेकर लीलाधर जगूड़ी के विचार देखने योग्य हैं-

''क्या हम सब खुद को इस सिमटी हुई भीड़ में नहीं देख रहे हैं जो 'रामदास' की हत्या देखने आयी है। यहाँ बचे रहने की कोई संभावना नहीं है। न व्यक्ति के बचे रहने की न संवेदना के बचे रहने की।''[2]

यहाँ लीलाधर जगूड़ी जी ने एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है। रामदास की हत्या देखने वाली भीड़ में खुद पर भी नजर जाती है।

'रामदास' कविता में एक और बात ध्यान देने योग्य है। इसका एक स्वर क्या व्यवस्था की ओर उँगली नहीं उठाता? हत्यारा खुले आम आता है और हत्या करके चला जाता है। व्यवस्था का कोई पुर्ज़ा हरकत में नहीं आता। क्या शासन व्यवस्था, कानून व्यवस्था इतनी लचर है कि किसी को उसका भय नहीं है। और ऐसे में मारा जाता है एक आम आदमी। हत्या होती है एक साधारण जन की। इस कविता के माध्यम से रघुवीर सहाय का व्यवस्था के प्रति विरोध प्रकारांतर से व्यक्त हुआ है। जिस समय देश आजाद हुआ था, उस समय भारतीय जन-मानस

---

1 रघुवीर सहाय संचयिता, संपादक- कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 31

2 रघुवीर सहाय, सं. विष्णु नागर, असद ज़ैदी, आधार प्रकाशन, पंचकूला हरियाणा, 1993, पृ. 52

के मन में अनेक सुखद सपनों ने जन्म लिया जो धीरे-धीरे दुखद सपनों में बदलने लगे। भारतीय जन-मानस ने जो सोचा था वह हुआ नहीं, जो चाहा था वह मिला नहीं। जो डर, जो लाचारी परतन्त्रता के दिनों में लोगों के मन में थी, वह बहुत हद तक आजादी के बाद भी कायम रही।

कवि एक भावुक और संवेदनशील व्यक्ति होता है। अत: वह इन सब बातों को बड़ी गहराई से देखता है और समझता है। रघुवीर सहाय भी इसके अपवाद नहीं हैं। अत: उनकी कई कविताएँ शासन व्यवस्था के लचर रवय्ये के विरोध में दिखती हैं, जिसमें 'रामदास' कविता का अहम स्थान है। एक आम आदमी की बेबसी और लाचारी को इस कविता के माध्यम से दिखाया गया है।

रघुवीर सहाय की एक कविता है- 'हँसो हँसो जल्दी हँसो।' इस कविता में डर की स्थिति देखिए-

> हँसो तुम पर निगाह रखी जा रही है
> हँसो अपने पर न हँसना क्योंकि उसकी कड़वाहट
> पकड़ ली जाएगी और तुम मारे जाओगे
> ऐसे हँसो कि बहुत खुश न मालूम हो
> वरना शक़ होगा कि यह शख्स शर्म में शामिल नहीं
> और मारे जाओगे''[1]

ऐसी व्यवस्था किस काम की जहाँ हँसने पर भी सो बार सोचना पड़े। यहाँ मारा जाने वाला भी एक आम आदमी ही है।

रघुवीर सहाय की कविताओं में साधारण-जन अथवा आम आदमी अपनी समस्याओं, भय चिंता आदि के साथ उपस्थित होता है। जनता हमेशा शोषित होती हुई आई है। लोकतंत्र के नाम पर उसे छला गया है। उसे मात्र एक मतदाता बनाकर छोड़ दिया गया है।

---

1 रघुवीर सहाय संचयिता, सं. कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृ. 45

रघुवीर सहाय की कविताएँ व्यंग्यात्मक ढंग से कई प्रकार की समस्याओं विसंगतियों बुराईयों आदि को बड़े ही सशक्त ढंग से व्यंजित करती है। 'आपकी हँसी' कविता की ये लाइने देखिए-

निर्धन जनता का शोषण है
कहकर आप हँसे
लोकतंत्र का अंतिम क्षण है
कहकर आप हँसे
सबके सब हैं भ्रष्टाचारी कहकर आप हँसे
चारों ओर बड़ी लाचारी
कहकर आप हँसे[1]

'हँसो हँसो जल्दी हँसो' कविता संग्रह की यह कविता अपने आप में विशिष्ट है। व्यंग्यात्मक ढंग से रघुवीर सहाय ने इस कविता में समाज और राजनीति का सच्चा चित्र पेश किया है। 'लोकतंत्र का अंतिम क्षण है' यह कोई साधारण कथन नहीं है। आजाद भारत में लोकतंत्र सबसे बड़ा हथियार है। लेकिन अब लोकतंत्र के नाम पर ही गलत कार्य हो रहे हैं। रघुवीर सहाय इसके प्रति लोगों को सचेत करना चाहते हैं। वह एक आम आदमी को सचेत करना चाहते हैं।

स्त्री चेतना

रघुवीर सहाय की कविताओं में जहां राजनीति, आम आदमी आदि मुख्य विषय के रूप में देखे जा सकते है, वहीं स्त्री भी रघुवीर की कविताओं में मुख्य विषय के रूप में ही आई है। स्त्री को लेकर रघुवीर सहाय ने कविता भी लिखी है और कहानी भी। ध्यान देने वाली बात यह है कि स्त्री के दु:खों और उसकी तकलीफों की ओर रघुवीर ने बहुत ध्यान दिया है। स्त्री के प्रति संवेदना, रघुवीर की कविताओं का मुख्य प्रयोजन रहा है। रघुवीर ने समाज का ध्यान स्त्री की समस्याओं की तरफ खींचने की कोशिश की है। यह कोशिश इनके काव्य में होने

---

[1] रघुवीर सहाय संचयिता, सं. कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृ. 45

के साथ-ही-साथ गद्य साहित्य में भी है। इन्होंने उनकी समस्याओं को लेकर कहानियाँ भी लिखी हैं।

रघुवीर सहाय के मन में स्त्रियों के प्रति कितनी संवेदना थी, इसका अनुमान हम उनकी कविता 'चढ़ती स्त्री' को देखकर लगा सकते हैं-

बच्चा गोद में लिये
चलती बस में
चढ़ती स्त्री
और मुझमें कुछ दूर तक घिसटता जाता हुआ।[1]

यह कविता 'आत्महत्या के विरुद्ध' संग्रह में है। यह कविता बस इतनी ही है, लेकिन फिर भी कई अर्थों में महत्वपूर्ण है। यह कविता पाठक वर्ग के अंतश्चेतन को बहुत दूर तक स्पर्श करती है।

कवि के अनुसार उसमें 'कुछ' दूर तक घिसटता हुआ जाता है। कविता की मूल संवेदना भी इन्हीं शब्दों में है, बल्कि कहा जाना चाहिए कि दूर तक घिसटने में है। आखिर यह 'कुछ' क्या है, जो कवि को बेचैन करता है, इस पर विशेष ग़ौर करने की आवश्यकता है। मेरे विचार में यह 'कुछ' मानव-मन की सहज और स्वाभाविक संवेदना है जो दूसरे के भावों के साथ तादात्मय स्थापित कर लेती है। संवेदना तो कवि की एक बड़ी विशेषता होती है।

एक आम आदमी के चारों ओर अनेक घटनाएँ घटती हैं, लेकिन संभवतः उसका ध्यान उधर जाता ही नहीं है और जाता भी है तो भी वह उनसे असम्पृक्त ही रहना चाहता है। लेकिन कवि का भावुक मन इनसे अछूता नहीं रहता है। 'चढ़ती स्त्री' कविता इसी बात की ओर संकेत करती है। बच्चा गोद में लिए हुए किसी स्त्री का बस में चढ़ना कोई बड़ी घटना प्रतीत नहीं होती। एक आदमी का इसकी ओर ध्यान नहीं जाता, लेकिन एक आम आदमी और एक कवि में अन्तर

---

[1] रघुवीर सहाय संचयिता, सं. कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृ. 65-66

होता है। अत: कवि को इस छोटी-सी घटना में वह दिखाई दे जाता है जो और कोई नहीं देख पाता एवं कवि की संवेदना एक प्रकार से उस स्त्री की बस में चढ़ने में सहायता करती है अथवा करना चाहती है। कुछ दूर तक घिसटता हुआ जाना इस कविता का मर्म है, यही इस कविता की मूल संवेदना है।

स्त्रियों से संबंधित रघुवीर ने अनेक कविताएँ लिखी हैं जिनमें स्त्रियों की पीड़ा मुखर हुई है। बैंक में लड़कियाँ, किले में औरत, बड़ी हो रही है लड़की आदि इसी तरह की कविताएँ हैं।

'किले में औरत' कविता में जहाँ स्त्रियों की समस्याओं का चित्रण है, वहीं 'दयावती का कुनबा' कविता में दयावती की पीड़ा पाठक वर्ग को द्रवीभूत करती है। पाठक वर्ग की संवेदना इनके प्रति तादात्मय स्थापित कर इनकी पीड़ा पर आँसू बहाने को मजबूर करती है। 'दयावती का कुनबा' कविता से उदाहरण द्रष्टव्य है-

इच्छाएं दाबकर बदलकर स्वभाव को
जैसे ससुराल में पसन्द था
रोगों को झेलकर, दिखलाकर सगुन
चार बच्चे पैदा किए।[1]

इस उदाहरण की पहली लाईन संवेदना की दृष्टि से बड़ी महत्वपूर्ण है। दयावती को ससुराल की पसन्द के अनुसार स्वयं को बदलना पड़ता है। उसे अपनी सब इच्छाएं मारनी पड़ती हैं।

इस कविता में स्त्री के दर्द को, उसकी पीड़ा को उजागर किया गया है। दयावती की पीड़ा जैसे समस्त स्त्री जाति की पीड़ा बन जाती है, उसके दर्द और तक़लीफें समस्त स्त्री जाति की हो जाती हैं। भावनात्मक स्तर पर पाठक स्त्रियों की इस दशा पर विचलित अवश्य होता है। इस कविता की अन्तिम पंक्तियाँ संवेदना की दृष्टि से अहम् हैं-

---

[1] रघुवीर सहाय संचयिता, सं. कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृ. 66

तो अन्तिम सांस तक घिसटती दयावती
दोनों विधवाओं को छोड़ गुजर जाती है
पोतियों की खबर हमको पता नहीं
वे अपनी दादी की तरह कहाँ
बोझ कम करने के लिए विदा होती हैं।[1]

अतः आने वाली पीढ़ी को भी दयावती की भांति ही जीना होगा, तभी तो वह बोझ कम करने के लिए विदा कर दी जाती हैं। इन अन्तिम लाईनों में जैसे कविता की मूल संवेदना प्रकट होती है।

'हँसो हँसो जल्दी हँसो' कविता-संग्रह में एक कविता है- 'किले में औरत'। यह कविता भी स्त्री-चेतना को लेकर लिखी गई रघुवीर की सशक्त कविता है। इस किले में जो औरतें हैं उनके विषय में रघुवीर लिखते हैं-

वे ठिगनी थीं वे दुबली थीं
वे लम्बी थीं वे गौरी थीं
वे कभी सोचती थीं चुपचाप न जाने क्या
वे कभी सिसकती थीं अपने सबके आगे।[2]

इस कविता के माध्यम से रघुवीर सहाय ने औरतों की तकलीफों और समस्याओं की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया है।

'किले में औरत' शीर्षक से रघुवीर सहाय ने एक कहानी भी लिखी है जो 'रास्ता इधर से है' कहानी-संग्रह में है। कविता और कहानी में अन्तर यह है कि कविता में बीस औरतें किले में (अर्थात् घर में) थीं और कहानी में मात्र एक औरत है जिसे नंगा होना पड़ता है। कविता 'किले में औरत' में पहली ही पँक्ति है-

उस घर में बीस औरतें थीं[1]

TH-17817
Nehru Memorial Library

---

1 रघुवीर सहाय संचयिता, सं. कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृ. 67

2 वही, पृ. 79

अत: रघुवीर सहाय ने एक ही शीर्षक- 'किले में औरत' से दो रचनाएँ कविता ओर कहानी लिखीं। इनमें समानता यह है कि दोनों में ही स्त्रियों की समस्या और पीड़ा को मुखरित किया गया है।

इन कविताओं के अलावा 'पढ़िए गीता', 'बड़ी हो रही है लड़की', 'बैंक में लड़कियाँ' आदि कविताएँ भी स्त्री की समस्याओं और दु:खों को व्यंजित करती हैं जिनका अपना महत्व है। इनकी ये सभी कविताएँ आज भी प्रासंगिक लगती हैं।

रघुवीर सहाय भाषा के स्तर पर हिन्दी की दशा को लेकर भी चिंतित दिखाई देते हैं। हिन्दी को लेकर इन्होंने कई कविताओं की रचना की है, जिसमें हमारी हिन्दी कविता से उदाहरण देना उचित होगा-

हम लड़ रहे थे
समाज को बदलने के लिए एक भाषा का युद्ध
पर हिन्दी का प्रश्न अब हिन्दी का प्रश्न नहीं रह गया
हम हार चुके है[2]

इस कविता में हिन्दी की दयनीय दशा पर रघुवीर परेशान दिखाई देते हैं। वह हिन्दी के पक्षधर रहे हैं। अत: हिन्दी की ऐसी दशा पर उनका विचलित होना स्वभाविक ही है। इस कविता की अन्तिम पंक्तियाँ महत्वपूर्ण हैं-

जो इस पाखंड को मिटाएगा
हिन्दी की दासता मिटाएगा
वह जन वही होगा जो हिन्दी बोलकर
रख देगा हिरदै निरक्षर का खोलकर[3]

हिन्दी की स्थिति को लेकर रघुवीर अत्यंत गंभीर थे। इन्होंने एक कविता लिखी- 'हमारी हिन्दी'। यह कविता 'आत्महत्या के विरुद्ध' कविता-संग्रह में मौजूद

---

1 रघुवीर सहाय संचयिता, सं. कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृ. 79

2 वही, पृ. 194

3 वही, पृ. 195

है। इस कविता पर साहित्य-जगत में खूब बवाल मचा और हिन्दी-साहित्य-जगत ने इस कविता का पुरजोर विरोध किया। मुख्यतया इस कविता की पहली पँक्ति ही विवाद का विषय बनी-

हमारी हिन्दी एक दुहाजू की नई बीवी है
बहुत बोलने वाली बहुत खानेवाली बहुत सोनेवाली[1]

इस कविता में 'हिन्दी को एक दुहाजू की नई बीवी' बनाना रघुवीर के प्रति विरोध का मुख्य कारण बनी।

श्री कृष्ण कुमार जी ने अपनी पुस्तक 'रघुवीर सहाय संचयिता' में इस विषय पर लिखा है-

> ''भाषा का सवाल राष्ट्रीयता की पुट अवश्य लिए है, पर उसकी तह में हर जगह समाज की वर्गीय और जातीय विषमता दिखाई देती है। रघुवीर सहाय के लिए हिन्दी का संघर्ष मूलतः एक सामाजिक संघर्ष था।[2]

अतः निश्चित ही भाषा का सवाल रघुवीर सहाय के लिए राष्ट्रीय का सवाल है। अतः रघुवीर सहाय की कविता में हिन्दी के लिए संघर्ष भी दिखता है।

कहानीकार के रूप में

रघुवीर सहाय प्रख्यात रचनाकार रहे हैं। उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। रघुवीर सहाय ने कविता के क्षेत्र में तो योगदान दिया ही है, साथ ही कहानी, नाटक, उपन्यास, ललित लेख आदि के क्षेत्र को भी अपनी लेखनी से समृद्ध किया है।

---

1 रघुवीर सहाय संचयिता, सं. कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003, पृ. 193

2 वही, पृ. 17

एक कहानीकार के रूप में रघुवीर सहाय ज्यादा प्रसिद्ध नहीं हैं, लेकिन इससे इनकी कहानियों की महत्ता कम नहीं हो जाती। इन्होंने लगभग 35 कहानियाँ लिखी हैं जिनका साहित्य जगत में महत्वपूर्ण स्थान है।

रघुवीर सहाय के तीन कहानी-संकलन हैं-

1. सीढ़ियों पर धूप में।
2. रास्ता इधर से है।
3. जो आदमी हम बना रहें हैं।

इसमें पहला संकलन एक मिला जुला संकलन है, मसलन, इसमें कहानियाँ तो हैं ही साथ ही इसमें कविताएँ और टिप्पणियाँ भी शामिल हैं। यह संकलन सन् 1960 ई. प्रकाशित हुआ था। 'रास्ता इधर से है' कहानी संकलन सन् 1972 ई. में प्रकाशित हुआ और 'जो आदमी हम बना रहें हैं' का प्रकाशन वर्ष 1982 ई. है।

रघुवीर सहाय की कहानियाँ वास्तव में हिन्दी-साहित्य जगत में उपेक्षित रही हैं। इन्हें उचित सम्मान नहीं मिल पाया है। इसका एक बड़ा कारण शायद रघुवीर की कहानियों का ढंग है, यानी जिस ढंग से ये कहानियाँ लिखी हुई हैं, कभी-कभी यह कहानी न लगकर लेख-ज्यादा लगती हैं।

अलका सरावगी जी ने रघुवीर सहाय की कहानियों के प्रति जो विचार व्यक्त किए हैं वह रघुवीर की कहानियों के सन्दर्भ में विचारणीय हैं-

> ''संभवतः रघुवीर सहाय की कहानियों से ही उनके कवि रूप का उन्मेष हुआ है और यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि उनकी कविताओं के संसार में प्रवेश की एक कुंजी उनकी कहानियों में मिल सकती है। यहाँ यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि समसामयिक कहानी आन्दोलन से अलग होने के कारण और खुद

रघुवीर सहाय का एक आनुसंगिक रचनाकर्म होने के कारण उनकी कहानियाँ हिन्दी आन्दोलन में लगभग उपेक्षित रही हैं।''[1]

जो भी हो, यह तो नितांत सच है कि रघुवीर की कहानियों के प्रति हिन्दी-साहित्य जगत उदासीन रहा है।

श्री सुरेश शर्मा जी ने 'रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2 की भूमिका (आदमी की दुनिया) में रघुवीर सहाय की एक टिप्पणी का हवाला दिया है।

''जो आदमी हम बना रहे हैं की भूमिका में वे लिखते हैं : कहानी अन्य विधाओं की तरह जीवन की एक समझ पैदा करती है और जब नहीं कर पाती तो कहानी नहीं होती है, मगर जब कर पाती है तो उस पर यह बन्धन भी नहीं रहता कि वह कहानी ही रहे।''[2]

वास्तव में रघुवीर सहाय का नजरिया ही कहानियों के प्रति ऐसा था कि उनकी कहानियाँ कभी-कभी कहानी न होने का भ्रम उत्पन्न करती हैं। लेकिन रघुवीर जी के विचारों से अवगत होने के पश्चात् इस भ्रम का कोई स्थान नहीं रह जाता। रघुवीर सहाय की कहानियों में वस्तुतः कहानी के पारंपरिक तत्वों का अभाव है। कहने का अभिप्राय यह है कि रघुवीर सहाय ने कहानी लिखते वक्त कहानी के तत्त्वों की बिल्कुल परवाह नहीं की है।

श्री सुरेश शर्मा जी ने रघुवीर जी की दो कहानियों 'स्पष्टवादिता' और 'हिन्दी के एक संपादक से भेंट' कहानियों के विषय में कहा है-

---

1 रघुवीर सहाय, सं. असद जैदी, विष्णु नागर, आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा-1993, पृ. 152

2 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, सं.-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 9 (भूमिका)

''ये दो कहानीनुमा रचनाएँ जीवन की एक समझ तो पैदा करती हैं लेकिन कहानी के पारंपरिक तत्त्वों का उनमें अभाव है। सहाय जी अपनी कहानियों में इन तत्त्वों की परवाह नहीं करते।''[1]

वास्तव में रघुवीर सहाय उस अर्थ में कहानियाँ नहीं लिख रहे थे जिसमें अन्य कहानीकार कहानियाँ लिखते थे या लिख रहे थे। कहानी लिखने के पीछे उनका एक खास नज़रिया था। वह मानवीय संबंधों पर विश्वास करते थे। श्री सुरेश शर्मा जी के अनुसार-

''कहानी में उनका उद्देश्य है बदलती परिस्थितियों के बीच बदलते मानव-संबंधों की पहचान। अपनी कहानियों में वे इस 'पहचान' को प्राथमिकता देते हैं। कहानी के अन्य तत्त्व उनके लिए ज्यादा महत्व नहीं रखते।''[2]

वास्तव में रघुवीर सहाय ने कहानियों को एकदम अलग स्वरूप देने की कोशिश की है। संभवत: रघुवीर सहाय की विशेषता इन्हीं मानव-संबंधों की पहचान में है। इनकी अधिकांश कहानियों की थीम मानव-संबंधों से ही प्रेरित है। एक जीता-जागता व्यक्ति, सेब, मेरे और नंगी औरत के बीच, कोठरी, प्रेमिका आदि इन्हीं संबंधों का समर्थन करती हुई नज़र आती हैं।

रघुवीर सहाय की कहानियों की एक खास विशेषता है- इनकी कहानियों का यथार्थ के अधिक निकट होना। कभी-कभी तो संशय उत्पन्न होता है कि यह कहानियाँ रघुवीर का भोगा हुआ यथार्थ ही हैं। यदि ऐसा होता भी है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। 'किले में औरत' और 'मेरे और नंगी औरत के

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, सं.-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 9 (भूमिका)

2 वही, पृ. 9 (भूमिका)

बीच', कहानियाँ इसी प्रकार की कहानियाँ हैं। रघुवीर सहाय ने 'कहानी की कला' कहानी में अपने विचार कुछ यूँ व्यक्त किए हैं-

> ''मैं जानता हूँ कि ऐसे कोई कहानी नहीं कही जाती कि यह हुआ फिर वह हुआ और अन्त में यह हुआ इति। मगर यह खूब जानता हूँ कि कहानी होती ऐसी ही है।''[1]

इससे पहले रघुवीर जी लिखते हैं-

> ''मुझे तो केवल घटना का वर्णन करना है, केवल यह बताना है कि जब दो व्यक्तियों, दो मानवों के बीच एक संबंध टूटा और दूसरा बना तो उसमें क्या कहानी पैदा हो गई।''[2]

इस प्रकार से रघुवीर सहाय की कहानियाँ मानवीय-संबंधों के यथार्थ की कहानियाँ हैं।

इस दृष्टि से इनकी कहानी 'मेरे और नंगी औरत के बीच' को देखा जा सकता है। इस कहानी में कथाकार का एक ऐसी औरत से बेनाम संबंध जुड़ता है जो सर्दी के मौसम में बिना कपड़ों के रेलगाड़ी में बैठी हुई है। कथाकार की संवेदना स्त्री के प्रति जुड़ जाती है। अब कथाकार अपना ओढ़ा हुआ कम्बल उस स्त्री को उढ़ाना चाहता है ताकि वह स्त्री सर्दी से बच सके।

> ''अचानक उसे कोई गरम कपड़ा उढ़ा देने के लिए छटपटा उठा।''[3]

और अंततः कथाकार उस स्त्री को अपना कम्बल उढ़ा देता है।

यह कहानी एक मानव को दूसरे मानव से जोड़ती है। पाठक स्वयं इस कहानी से अलग नहीं रह पाता।

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, सं. सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 49

2 वही पृ. 49

3 वही, पृ. 77

रघुवीर सहाय की कहानी 'गुब्बारे' जिनती संवेदना के स्तर पर पाठक को झकझोरती है, उतनी ही सामाजिक विषमता के यथार्थ रूपी धरातल की ओर ले जाती है। इस कहानी में एक गरीब बच्चे को सर्दी के भयानक मौसम में नंगे पैर सड़क पर गुब्बारे बेचते हुए दिखाया गया है। इस कहानी को पढ़कर पाठक के मन में बच्चे के प्रति दया और करुणा का भाव उमड़ता है। इस कहानी में बालमन की सूक्ष्म परतों को रघुवीर ने चित्रित किया है। उस बच्चे को औरों के व्यवहार आदि का ज्ञान बचपन से ही हो रहा है। उसे कम से कम यह ज्ञान तो हो ही चुका है कि कौन गुब्बारे खरीदेगा और दाम कौन देगा। अतः वह लोगों की मनोंभावनाओं को धीरे-धीरे समझ रहा है। जीवन के संघर्ष ने उसे यह सब सिखा दिया है-

> ''बच्ची कभी गुब्बारों के लिए मचलती कभी चप्पलों के लिए। वह स्वयं नहीं जानती थी कि उसे क्या चाहिए। रामू ने पुरुष चेहरे की ओर देखा, क्योंकि वह जानता था, दाम यही देंगे।''[1]

रामू का पुरुष चेहरे की ओर देखना संवेदनात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। पाठक अनायास ही रामू के प्रति दया और से करुणा से भर उठता है।

रघुवीर की एक कहानी है- विजेता। यह कहानी जिस ढंग से लिखी गई है, वह अद्‌भुत है। शायद ही इससे पहले इस ढंग की कोई कहानी लिखी गई हो। जिस प्रकार से इस कहानी को लिखा गया है, उससे पाठक अभिभूत भी हो उठता है और साथ ही चमत्कृत भी। यह कहानी आज के समय में भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी अपने रचनाकाल में रही होगी। रघुवीर सहाय की यही विशेषताएँ उन्हें अन्य कहानीकारों से अलग करती हैं। इस कहानी में ऐसे बच्चे का जिंदगी से संघर्ष दिखाया गया है जिसने अभी तक जन्म भी नहीं लिया है। एक पिता जो अपने अजन्में बच्चे को गर्भ में मार डालना चाहता है, उसे सफलता नहीं मिलती और बच्चा संसार में सही-सलामत आता है। वह इस जीवन की जंग में

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, सं. सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 34

विजयी हुआ है, अतः वह सच्चे मायनों में विजेता है। इस कहानी की अन्तिम पंक्तियाँ बड़ी ही मार्मिक है। पाठक जैसे इस स्थिति से अपने को अलग ही नहीं कर पाता-

> ''लड़के ने अपने बाप की ओर देखा ही नहीं, न कुछ समझा कि यह कौन है और क्या चाहता है। उसे जरूरत भी न थी। आँखें बन्द किए वह निस्पृह भाव से अपना काम करता रहा और कद्दू जैसा पड़ा रहा। उसने एक लड़ाई जीत ली थी, और वह वहाँ था, अक्षत और संपूर्ण, जैसा कि वह दूसरों के बावजूद बना था और कुल इतने से ही उसे फिलहाल मतलब था।''[1]

रघुवीर सहाय और पत्रकारिता कर्म

रघुवीर सहाय एक कवि होने के साथ ही एक अच्छे गद्य लेखक भी थे। इन्होंने कहानियाँ भी लिखीं और निबन्ध, उपन्यास, लेख आदि भी लिखे। साथ ही इन्होंने नाटक भी लिखे।

रघुवीर सहाय की लेखनी का एक पक्ष पत्रकारिता से गहरा संबंध रखता है। अगर यह कहा जाए कि ये जितने बड़े और प्रतिष्ठित कवि थे, उतने ही बड़े पत्रकार थे तो संभवत अतिश्योक्ति नहीं होगी।

आरम्भ से ही पत्रकारिता के प्रति रघुवीर सहाय का गहरा लगाव था। वह पत्रकारिता को आजीविका के साधन के साथ-साथ जनसेवा का एक रूप मानते थे। पत्रकारिता समाज में फैली बुराईयों के खिलाफ़ लड़ती है। रघुवीर भी समाज की बुराईयों से संघर्ष करते नजर आते हैं। अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं में लिखे लेख इसी बात का सुबूत है।

रघुवीर आरंभ में रेडियो की दुनिया से जुड़े हुए थे। आकाशवाणी में श्री

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, सं. सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 82

अज्ञेय जी के साथ रघुवीर जी ने बहुत समय बिताया था। रघुवीर सहाय जी अज्ञेय के निकट लोगों में थे।

सन् 1953 ई. में रघुवीर सहाय आकाशवाणी से जुड़े और समाचार विभाग में नियुक्त हुए। समाचार विभाग में ये उपसम्पादक के पद पर नियुक्त हुए थे। यह अलग बात है कि सन् 1957 ई. में इन्होंने वहाँ से त्याग-पत्र दे दिया। रघुवीर सहाय के त्यागपत्र देने के पीछे श्री मनोहर श्याम जोशी ने लिखा है।

> ''मुझे याद है कि एक मर्तबा आकाशवाणी के हिन्दी बुलेटिन में रघुवीर ने 'जब तक ऐसा हो तब तक...' से शुरू होने वाला कोई वाक्य लिखा था जिसे समाचार-वाचक शिवसागर मिश्र ने, जो दिनकर जी के दामाद थे और स्वयं भी कहानी लेखक थे, बदलकर 'जब तक ऐसा न हो तब तक' कर दिया। इस पर रघुवीर ने दो बातें कहीं। पहली यह कि समाचार-वाचक को सम्पादक के लिखे हुए पर कलम चलाने का अधिकार नहीं होता और दूसरी यह कि आपको लेखक होने के बावजूद जब तक ऐसा हो और जब तक ऐसा न हो के अर्थभेद में तमीज़ करना नहीं आता। शिवसागर जी फोन उठाकर दिनकर जी से निर्णय कराने चले तो रघुवीर ने फोन काट दिया और कहा जो मैंने लिखा है, सो आप पढ़िएगा।' शिवसागर बोले,मैं आपका लिखा नहीं पढ़ूँगा।' रघुवीर ने उनके हाथ से बुलेटिन छीना और यह कहकर स्टूडियो की ओर चल दिया, ठीक है तो बहैसियत शिफ्ट इंचार्ज बुलेटिन मैं पढ़ूँगा।''[1]

रघुवीर सहाय को इसके कुछ ही समय पश्चात् त्यागपत्र देना पड़ा। अतः रघुवीर जी को आकाशवाणी से अलग होना पड़ा। 1959 ई में रघुवीर फिर से आकाशवाणी से जुड़े।

---

1 रघुवीर सहाय : रचनाओं के बहाने एक स्मरण, मनोहर श्याम जोशी, वाणी प्रकाशन-2003, पृ. 13

रघुवीर सहाय ने 'प्रतीक' पत्रिका में भी सहायक-सम्पादक के पद पर कुछ समय कार्य किया। 1963 ई. में रघुवीर जी दैनिक पत्र 'नवभारत टाइम्स' में विशेष संवाददाता के पद पर नियुक्त हुए। इस समय तक रघुवीर जी आकाशवाणी से अलग हो चुके थे। 1968 ई. में समाचार-सम्पादक के रूप में दिनमान से जुड़े। श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन जी बतौर सम्पादक के पद पर दिनमान में थे। 1969 ई. में वात्स्यायन जी ने त्यागपत्र दे दिया और रघुवीर सहाय कार्यकारी सम्पादक बन गए एवं 1970 ई. में रघुवीर जी 'दिनमान' के सम्पादक नियुक्त हो गए। दिनमान से रघुवीर जी 1983 ई. में अलग हुए। इसके एक वर्ष क पश्चात् 'जनसत्ता' अखबार में 'अर्थात्' नाम से कॉलम लिखना शुरू किया जो पूरे 6वर्ष तक चलता रहा। यानी 1984 ई. से 1990 ई. तक रघुवीर ने 'जनसत्ता' में 'अर्थात्' कॉलम में लेख लिखा।

रघुवीर सहाय के जीवन का एक लंबा दौर पत्रकारिता से गुजरा था। वह सच्चे अर्थों में एक कर्मठ पत्रकार थे। पत्रकारिता के माध्यम से रघुवीर ने अपनी जीविका तो चलाई ही साथ ही इन्होंने देश और लोगों की सेवा की। इन्होंने जनता की चेतना को पत्रकारिता के माध्यम से जगाने का प्रयास किया।

रघुवीर सहाय पत्रकारिता में खबर पर विशेष ध्यान देते हैं। 'सूचना' और 'खबर' में पर्याप्त अन्तर है। सूचनाएँ तो अनेकों होती हैं, लेकिन उनमें 'खबर' कौन सी है, यह एक अलग सवाल है। रघुवीर सहाय जी इस बात के प्रति सजग थे। श्री कृष्ण कुमार जी कहते हैं-

> ''निरन्तर आ रही सूचनाओं में खबर किसे बनाया जा रहा है और जो बात खबर नहीं मानी गई है तो क्यों नहीं मानी गई है? यह सवाल उन सभी संस्थाओं की सेहत और उन तमाम लक्षणों की जाँच का जरिया बन जाता है जिन्हें हम आधुनिकता के आधार

विषय मान सकते हैं। इन संस्थाओं और लक्षणों की 'खबर' रघुवीर सहाय कविता, कहानी या निबन्ध के ऐसे प्रत्येक उत्प्रेरण में ढूँढ रहे होते हैं जो अन्त में एक टिकाऊ रचना बनेगा।''[1]

वास्तव में रघुवीर सहाय ने 1950 ई. में ही पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रख दिया था। लखनऊ के दैनिक 'नवजीवन' से रघुवीर ने इस कदम की शुरूआत की थी। इसके बाद पत्रकारिता जैसे इनके जीवन का हिस्सा बन गई और रघुवीर आजीवन पत्रकारिता से जुड़े रहे।

वास्तव में रघुवीर सहाय पत्रकारिता को समाज सेवा का एक विशिष्ट साधन मानते थे। पत्रकारिता के संबंध में रघुवीर की अवधारणा औरों से अलग थी। उन्होंने 'खबर' पर अपनी टिप्पणी देते हुए लिखा-

''वही खबर नहीं है जो लोगों को चौंकाती है, खबर वह भी है जो लोगों को भरोसा देती है, हिम्मत बंधाती है और समाज में अपनी शक्ल का प्रतिबिंब देखने को देती है।''[2]

अतः रघुवीर सहाय के रचनाकर्म का एक पक्ष पत्रकारिता से बहुत गहरा संबंध रखता है। इन्होंने आजीवन पत्रकारिता के माध्यम से देश सेवा की।

रघुवीर सहाय और अनुवाद कर्म

रघुवीर सहाय एक ऐसे साहित्यकार रहें हैं जिनकी लेखनी साहित्य की लगभग हर विधा में चली है। रघुवीर सहाय के साहित्यिक पक्ष का एक पहलू अनुवाद कर्म से भी जुड़ा हुआ है।

इन्होंने विश्व की अनेक भाषाओं से कविताओं का हिन्दी अनुवाद किया है। वियतनाम, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, तुर्की, जर्मनी, सोवियत संघ, ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशों की अच्छी कविताओं का रघुवीर जी ने हिन्दी भाषा में अच्छा अनुवाद

---

1 रघुवीर सहाय संचायिता, सं.-कृष्ण कुमार राजकमल प्रकाशन-2003 पृ. 2

2 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 13

किया है। अच्छी कविताओं का कहने का मेरा अभिप्राय यह है कि रघुवीर ने जो भी विदेशी भाषाओं की कविताएँ अनुदित कीं, वह उन कवियों की अच्छी कविताओं में गिनी जातीं हैं। रघुवीर सहाय ने अपने वक्तव्य में कहा है-

''किसी अच्छी कविता को जब मैं अनुवाद के लिए चुनता हूँ तो इतना तो जानता हूँ कि वह एक अच्छी कविता है- कम से कम इतनी अच्छी कि काश! मैंने खुद लिखी होती।''[1]

सोवियत संघ के कवि 'व्योचेस्लाव कुप्रियानोव' की कविता 'बच्चे चीखे हम तो सिर्फ लड़ाई लड़ाई खेल सकते हैं' से हिन्दी में किया गया अनुवाद देखिए-

फुरसत में प्रवक्ता
शब्दों से खेल करें
मजे की खातिर नहीं
आत्मा की खातिर
मनुष्यों की खातिर[2]

इसके अलावा इन्होंने विश्व के अनेक कवियों की कविताओं के हिन्दी अनुवाद किए हैं।

रघुवीर सहाय ने कविता के अलावा विदेशी नाटकों का भी हिन्दी अनुवाद किया है। इन्होंने शेक्सपियर के नाटक 'मैकबेथ' का 'बरनम-वन' नाम से अनुवाद किया। शेक्सपियर के ही एक और नाटक 'ऑथेलो-द मूर ऑफ वेनिस' का 'ऑथेलो' नाम से ही हिन्दी अनुवाद किया। इसके अलावा 'ट्वेलफ्थ नाइट' और 'ए मिडसमर नाइट्स ड्रीम' का क्रमशः 'बारहवीं रात' और 'फाल्गुन मेला' नाम से हिन्दी अनुवाद किया। ये नाटक भी शेक्सपियर के ही हैं।

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 447

2 वही, पृ. 459

इसके अलावा रघुवीर ने 'लोर्का' के नाटक 'द हाउस ऑफ बरनाडा एल्बा' का बिरजीस क़दर का कुनबा' नाम से हिन्दी अनुवाद किया।

रघुवीर ने 'इवो आंद्रिच' जो कि युगोस्लाव उपन्यासकार थे, के उपन्यास का भी हिन्दी अनुवाद किया। इनके अलावा रघुवीर सहाय ने कुछ चीनी कहानियों का भी हिन्दी में अच्छा अनुवाद किया है। हंगारी नाटकों का भी रघुवीर सहाय ने हिन्दी में अनुवाद किया है।

इस प्रकार से यदि रघुवीर सहाय के रचनाकार व्यक्तित्व पर दृष्टिपात किया जाए तो पता चलता है कि रघुवीर सहाय बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इन्होंने कविताएँ तो बड़ी संख्या में लिखी ही हैं साथ ही इन्होंने कहानियाँ, निबन्ध, लेख, बाल साहित्य, नाटक उपन्यास आदि की भी रचना की है। इन्होंने हिन्दी-साहित्य जगत को अपनी लेखनी के माध्यम से समृद्ध किया है।

अध्याय-2

रघुवीर सहाय की कथा-दृष्टि

दृष्टि और उसका महत्व

'दृष्टि' शब्द का शाब्दिक अर्थ देखना है। दृष्टि (VISION) एक क्रिया है जो मनुष्य की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। दृष्टि का तात्पर्य नज़रिए से है।

इस संसार में अनेक प्रकार के जीव पाए जाते हैं। मनुष्य इन सबसे हटकर अपनी एक अलग पहचान रखता है। इसका कारण मनुष्य की वह क्षमताएँ हैं जो शेष प्राणियों में नहीं हैं। मनुष्य में पशु-पक्षियों से अलग प्रतिभाएँ हैं। वह प्रत्येक पहलू को अपने किसी विशिष्ट नजरिए से परखता है। पशु-पक्षी भी अपना पेट भरते हैं और मनुष्य भी। परंतु आज मनुष्य ने पशु-पक्षियों के साथ-साथ प्रकृति पर भी लगभग विजय पा ली है। प्रत्येक चीज आज मनुष्य के वश में है। वह विशिष्ट सोच सकता है तथा उसके अनुसार कार्य कर सकता है। पशु-पक्षी ऐसा नहीं कर सकते। अतः मनुष्य के पास ईश्वर प्रदत्त विशेष शक्तियाँ हैं जो उसे दूसरों से अलग करती हैं। इन शक्तियों में से एक है 'दृष्टि' अथवा 'नजरिया' (VISION), मनुष्य का यही विशिष्ट गुण (नजरिया) उसे विशेष बनाता है।

प्रत्येक व्यक्ति का अपना अलग नजरिया होता है। विभिन्न व्यक्तियों की दृष्टि विभिन्न मुद्दों पर विभिन्न हो सकती है, एक के सोचने का तरीका कुछ और होता है, दूसरे का कुछ और। यही विभेद विभिन्न वस्तुओं के विषय में विभिन्न राय बनाता है।

दृष्टि का अपना अलग महत्व होता है। दृष्टि बदल जाने पर तथ्य भी बदल जाते हैं, परिप्रेक्ष्य बदल जाते हैं। परिप्रेक्ष्य के निर्माण में दृष्टि का विशेष योगदान होता है। दृष्टि बदल जाने पर परिप्रेक्ष्य का बदल जाना स्वाभाविक है। हमारे विचार किसी तथ्य पर किस प्रकार के हैं, यह सब हमारे नज़रिये पर ही आधारित होता

है। उदाहरणार्थ, किसी विशेष अवसर पर (धार्मिक-उत्सव) देवी-देवताओं को पशु-बलि देना धार्मिक लोगों की नजर में धर्म है तो निरीश्वरवादी अथवा नास्तिक लोगों की नजर में यह अधर्म और घोर पाप का प्रतीक है। अंधविश्वासों के विषय में भी दृष्टि का ही योगदान होता है। कोई विशिष्ट समुदाय यदि भूत-प्रेत, टोन-टोटके आदि पर विश्वास करता है तो दूसरा समुदाय इनकी सत्ता मानने में संकोच करता है यह सब दृष्टि-दृष्टि का फर्क है।

किसी भी 'दर्शन' (PHILOSOPHY) में दृष्टि ही कार्यरत होती है। 'कामायनी' में प्रसाद जी का अपना दृष्टिकोण कार्य कर रहा है। इतिहास और कल्पना के मेल से कामायनी में जिस जीवन-दर्शन को दर्शाया गया है, वह प्रसाद जी की स्वयं की दृष्टि का ही फल है। हिन्दी-साहित्य के इतिहास के अंतर्गत भक्ति के उपजने को लेकर शुक्ल जी के विचार कुछ और हैं और द्विवेदी जी के विचार तो उनसे सर्वथा भिन्न हैं। शुक्ल जी का विचार है कि भक्ति मुस्लिम शासन से त्रस्त हिन्दू जनता की भगवतशरण में जाने की देन है, जबकि उससे भी बहुत पहले दक्षिण में भक्ति की एक परंपरा विद्यमान थी जिसने समयानुसार अपने कदम उत्तर भारत की ओर बढ़ाए। इस प्रकार से भक्ति के उद्‌भव के संबंध में दोनों साहित्यकारों के मतों में भिन्नता होने का कारण उनका अलग-अलग दृष्टिकोण ही था।

इन कतिपय उदाहरणों को देने के पीछ मेरा अभिप्राय दृष्टि (दृष्टिकोण, नज़रिया) के महत्व को बताने से है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक दृष्टि होती है। साहित्यकार होने के संबंध में इस दृष्टि का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। साहित्यकार किसी आम आदमी से ज्यादा भावुक, संवेदनशील और क्रियाशील व्यक्तित्व का स्वामी होता है। जिस वस्तु पर एक आदमी का ध्यान नहीं जाता उस वस्तु में साहित्यकार कुछ विशेष देख लेने की क्षमता रखता है तथा उस विशेष को

अपनी रचना का हिस्सा बना देता है। यही एक साहित्यकार की महानता है रचना का सार्थक होना ही रचनाकार का पारितोष है।

रघुवीर सहाय की कविता और उनकी दृष्टि

रघुवीर सहाय मूलतः एक कवि हैं, इसी कारण वह भावुक भी हैं और संवेदनशील भी। कवि का भावुक और संवेदनशील होना स्वाभाविक है और उचित भी। भावुकता और संवेदनशीलता के अभाव में कोई अच्छा कवि नहीं बन सकता। आदिकवि वाल्मीकि जी भी अत्यंत भावुक थे। संवेदना भी उनमें असीम थी। इसी कारण एक क्रौंच जोड़े की केलि-क्रीड़ा को देखकर वह अत्यंत गद्‌गद् और रोमांचित हो रहे थे। 'व्याध' के द्वारा उस पक्षी जोड़े में से एक को मार देने पर वह अत्यंत शोकाकुल हो उठते हैं और इसी मनोस्थिति में उनके द्वारा यह श्लोक शापवश निकल पड़ता है-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुना देकमवधी काममोहितम्।।[1]

जब वह शोक से बाहर आते हैं तो उन्हें एहसास होता है कि वह व्याध को अत्यंत कठोर शाप दे चुके हैं। लेकिन अब क्या हो सकता था। यह सब भावुकता वश हुआ था। भवभूति तो भावना के अथवा कहना चाहिए भावुकता के चरम पर पहुँच जाते हैं। उनके ग्रंथ में राम के साथ पत्थर भी रो पड़ते हैं। अतः कवि में भावुकता और संवेदनशीलता होना स्वाभाविक ही है। रघुवीर सहाय भी एक कवि थे, रचनाकार थे। अतः उनमें भी भावुकता और संवेदनशीलता का होना स्वाभाविक ही था।

रघुवीर सहाय की कविता में एक विशेष बात गौर करने लायक है, वह है- 'सजगता'। रघुवीर भावुक भी हैं और साथ ही सजग भी। 'दो अर्थों का भय', 'हँसो-हँसो जल्दी हँसो, जैसी कविताएँ इसी बात का समर्थन करती हैं। रघुवीर 'दो

---

[1] भारतीय काव्यशास्त्र, डॉ. सत्यदेव चौधरी, अलंकार प्रकाशन, नई दिल्ली 2003, पृ. 10

अर्थों का भय' नामक कविता में कोई भी शब्द बोलने से पहले इस विषय पर सोचते हैं कि कहीं उनके द्वारा प्रयोग किए गए शब्द के दो अर्थ तो नहीं निकल रहे। 'हँसो-हँसो जल्दी हँसो' कविता में भी वह हँसने जैसी प्राकृतिक और स्वाभाविक क्रिया पर सजग हैं कि कहीं उनकी हँसी पर कोई किसी प्रकार का शक तो नहीं कर रहा है। वह एक नागरिक को सोच-समझकर हँसने की सलाह देते हैं। अत: 'सजगता' उनकी कविताओं में देखी जा सकती है। इनकी लोकतंत्र और राजनीति से प्रेरित अथवा कहना चाहिए कि जहाँ रघुवीर ने अपनी कविताओं का विषय लोकतंत्र और राजनीति को बनाया है, वहाँ उन्होंने सजगता से काम लिया है। इस संदर्भ में एक उदाहरण इस रूप में दिया जा सकता है-

ऐसे हँसो कि बहुत खुश न मालूम हो,
वरना शक् होगा कि यह शख्स शर्म में शामिल नही
और मारे जाओगे।[1]

रघुवीर सहाय ने व्यंग्यात्मक ढंग से एक आम आदमी को सजग होने के संकेत दिए हैं। अत: हँसों भी तो ऐसे हँसो कि किसी को तुम पर शक न हो। रघुवीर सहाय की कविताओं का मुख्य स्वर राजनीति ओर लोकतंत्र के इर्द-गिर्द ही सुनाई देता है।

रघुवीर सहाय की कविताओं में आम आदमी को सचेत करने का स्वर सुनाई देता है। वह अपने काव्य के माध्यम से समाज को, एक आम आदमी को जगाना चाहते हैं-

हमको तो अपने हक सब मिलने चाहिंए
हम तो सारा का सारा लेंगे जीवन
कम-से-कम वाली बात न हमसे कहिए।[2]

रघुवीर की दृष्टि समाज के, अभावों में जी रहे लोगों के दु:ख-दर्द की ओर

---

1 रघुवीर सहाय संचयिता, संपादक-कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 45

2 वही, पृ. 273

स्वत: ही चली जाती है। इसका कारण शायद रघुवीर जी का स्वयं दु:ख-दर्दों और अभावों का जीवन है। रघुवीर जी का बचपन चूँकि कष्टमय था और काफी लंबा समय इन्होंने दुखों में गुजारा था, अत: किसी के भी दु:ख-दर्द को देखकर इनका द्रवित हो उठना स्वाभाविक था। फिर भी रघुवीर सहाय अपने कर्त्तव्य और निष्ठा के प्रति जागरूक रहे, सजग रहे। इन्होंने लोकतंत्र को अपनी कविताओं के माध्यम से मजबूत करने का प्रयास किया।

लोकतंत्र में 'नारी' की स्थिति क्या है और क्यों है? इस विषय में रघुवीर नारी की सामाजिक स्थिति का आकलन करते हैं। जिस समय देश आजाद हुआ उस समय भारतीय जन-मानस में कई सुन्दर सपनों ने जन्म लिया। लेकिन जल्दी ही यह सपने धुँधले होने लगे और धीरे-धीरे जैसे इन सपनों का कोई अर्थ ही नहीं रह गया। कवि की लेखनी इन सपनों के टूटने से तिलमिला उठी और कई कविताएँ अस्तित्व में आई। धूमिल की 'संसद से सड़क तक', रामधारी सिंह दिनकर की 'परशुराम की प्रतीक्षा' आदि कविताएँ इसी प्रकार की है। चीन के आक्रमण ने सारी व्यवस्था की पोल खोलकर रख दी। दोस्त ने दुश्मन बनकर पीठ में छुरा घोंप दिया। अब सभी को यह एहसास हो चुका था कि हम कहाँ हैं और हमारी स्थिति क्या है? इन सभी चीजों को लोकतंत्र के बरअक्स रखकर देखना आवश्यक हो जाता है। रघुवीर जी ने इन घटनाओं को बड़े नजदीक से देखा और महसूस किया था। अत: रघुवीर की कविताएँ समाज की विसंगतियों और गन्दी राजनीति की मुख़ालफ़त करती नज़र आती हैं।

रघुवीर सहाय अपनी कविताओं में नारी-स्थिति को लेकर अत्यंत चिंतित दिखाई देते हैं। यह चिंता रघुवीर की नारी के प्रति आदर और सम्मान की दृष्टि के कारण थी। वह स्त्रियों की दुर्दशा पर चिंतित दिखाई देते हैं। यह चिंता काव्य के माध्यम से व्यक्त हुई है-

जब वह कुछ कहती है
उसकी आवाज में
एक कोई चीज
मुझे एकाएक औरत की आवाज लगती है जो
अपमान बड़े होने पर सहेगी।[1]

इस कविता का अभिधार्थ समझ आने पर पाठक स्त्रियों की ऐसी स्थिति के प्रति चिंतामग्न हो जाता है। इनकी भाव संवेदना से कोई भी पाठक बचकर नहीं निकल सकता है। 'अपमान बड़े होने पर सहेगी' का निहितार्थ मस्तिष्क को झकझोरता है जिससे संवेदना की लहरें जोर मारने लगती हैं। इसी प्रकार की कई कविताएँ रघुवीर के रचना-संसार में देखी जा सकती हैं।

रघुवीर सहाय की कविता के प्रति एक अलग सोच थी। उन्होंने हिंसा, हत्या अथवा हत्या की संस्कृति पर कई कविताओं की रचना की है। उन्होंने मानव-जाति की नृशंसता को काव्य के माध्यम से उद्घाटित किया है। 'रामदास' कविता इसी मायने में अहम है और विशिष्ट भी। अहम इसलिए क्योंकि 'रामदास' कविता में जिस प्रकार हत्या के खुलेपन और समाज की उदासीनता को दिखाया गया है वह प्रत्येक व्यक्ति, समूह-समाज आदि को एक सन्देश देती है। इसमें 'रामदास' कोई एक व्यक्ति नहीं है, बल्कि वह समाज का एक अहम हिस्सा है, एक पुर्जा है। अत: रामदास की हत्या का असर पूरे समाज पर पड़ेगा। आज रामदास मरा है, कल कोई और मरेगा ओर परसों कोई और।

हत्यारा मात्र एक आदमी है, जबकि वहाँ मौजूद भीड़ में बहुत से लोग हैं, वह चाहें तो हत्या को रोक सकते हैं और हत्यारे को सबक भी सिखा सकते हैं। लेकिन ऐसा नहीं होता, भीड़ उदासीन रहती है और रामदास की हत्या हो जाती है। इसके बाद जो होता है वह मानव-जाति के लिए बहुत ही लज्जाजनक बात है-

---

1 रघुवीर सहाय संचयिता, संपादक-कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 80

भीड़ ठेलकर लौट गया वह
मरा पड़ा है रामदास यह
देखो-देखों बार-बार कह
लोग निडर उस जगह खड़े रह
लगे, बुलाने उन्हें जिन्हें संशय था, हत्या होगी।[1]

कितना घृणित और खेदजनक दृश्य है यह। इस कविता में सारी भीड़ जैसे मरे हुए लोगों का झुण्ड मात्र है अत: समाज में एक अजनबीपन है, अकेलापन है, जहाँ सभी लोग अजनबी लगते हैं, भीड में सभी अकेले हैं। एक और कविता में इस अकेलेपन को रघुवीर ने व्यक्त किया है-

''कितना अकेला हूँ मैं इस समाज में''[2]

यह कविता है- 'कोई एक मतदाता'। इस लाईन में रघुवीर ने समाज की जैसे पूरी हकीकत खोलकर रख दी है। इस अजनबीपन और अकेलेपन को इनकी कई कहानियों में भी देखा जा सकता है।

रघुवीर सहाय की कविता-दृष्टि के विषय में नारी को लेकर कुछ चर्चा की जा चुकी है। लेकिन सही मायनों में स्त्री के संबंध में लिखी गई रघुवीर की कविताओं को देखने से लगता है कि 'स्त्री-दशा' रघुवीर जी की कविता दृष्टि का एक अहम पहलू है। अत: इस पर व्यापक चर्चा की आवश्यकता है।

स्त्री पर हो रहे अत्याचार, उसकी पीड़ा, घुटन, दुख-दर्द आदि पर रघुवीर ने कई कविताएँ लिखी हैं। यह उनकी काव्य-दृष्टि के मुख्य विषय में से एक है। जहाँ रघुवीर सहाय ने समाज में अकेलापन और अजनबीपन महसूस किया, वहीं समाज में 'स्त्री की स्थिति' पर भी काफी विचार किया। यह बात उनकी कविताओं के माध्यम से साबित हो जाती है। किले में औरत, बड़ी हो रही है

---

1 रघुवीर सहाय, संपादक-विष्णु नागर, असद ज़ैदी, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा) 1993, पृ. 52

2 वही, पृ. 82

लड़की, पढ़िए गीता, दयावती का कुनबा, आदि इसी प्रकार की कविताएँ हैं। इनके अलावा और भी कई कविताएँ रघुवीर ने स्त्री की दशा को लक्ष्य करके लिखी हैं। 'किले में औरत' कविता की कुछ पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं-

वे ठिगनी थीं वे दुबली थीं
वे लम्बी थीं वे गोरी थीं
वे कभी सोचती थीं चुपचाप न जाने क्या
वे कभी सिसकती थीं अपने सबके आगे।[1]

इस कविता में रघुवीर सहाय ने स्त्रियों की बेवसी को बड़े ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। श्री मैथिलीशरण गुप्त जी ने बहुत पहले ही स्त्री की सम्पूर्ण कहानी का सार 'यशोधरा' नामक काव्य-कृति में इस प्रकार दिया था-

अबला-जीवन, हाय! तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी![2]

अत: समाज में औरत के स्थान को लेकर साहित्य-जगत में बहुत पहले से काव्य-सृष्टि हो रही है।

रघुवीर सहाय ने स्त्री की दशा को लेकर कविताएँ भी लिखी हैं और लेख भी। कहानियों में भी इस विषय पर गंभीर सोच रघुवीर जी ने व्यक्त की है।

'जनसत्ता' अखबार में 'अर्थात्' नामक 'कॉलम' में रघुवीर सहाय ने एक लम्बे अरसे तक लेख लिखे। इसमें उन्होंने एक लेख लिखा 'बलात्कार का नैतिक अधिकार'। यह लेख 1989 ई. में इस 'कॉलम' में छपा था। इसमें उन्होंने समाज में स्त्री की विवशता और एक प्रकार से उनके दुर्भाग्य को ही शब्दबद्ध किया है। इसे ध्यान से पढ़ने पर स्त्री की दशा के प्रति रघुवीर की क्या सोच थी, क्या दृष्टि

---

1 रघुवीर सहाय संचयिता, सं.-कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 79

2 यशोधरा (खंडकाव्य), मैथिलीशरण गुप्त, साकेत प्रकाशन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 47

थी; इसका पता चलता है। रघुवीर स्त्री की शोचनीय दशा को लेकर कितने चिंतित थे, कितने सजग थे, इस लेख से काफी हद तक पता चल जाता है-

> ''राजनीति के आज के दौर में औरत का अपमान अनेक स्तरों पर होने लगा है। आज से कई दशक पहले औरत के प्रति आदर्श व्यवहार यह माना जाता था कि पुरुष उसे एक ओर पूजा की और दूसरी ओर दया की चीज़ माने। सन् साठ के दशक में लोहिया ने यह समझ दी कि स्त्री जाति समाज का सबसे अधिक शोषित वर्ग है और शोषितों के अधिकारों की कोई भी लड़ाई नर-नारी की समता की लड़ाई के बिना पूरी नहीं हो सकती। पर दस साल बाद यानी सन् सत्तर से अस्सी के बीच में जिस तेजी से राजनीति केवल सत्तानीति बनती गई, उसी अनुपात में स्त्री पर अत्याचार बढ़ता गया।''[1]

रघुवीर सहाय ने स्त्री-जाति को समाज मे उचित सम्मान दिलाने की हमेशा वकालत की। यह अलग बात है कि कहीं भी वह स्पष्ट शब्दों में ऐसा कहते नहीं दिखते, लेकिन इनकी कविताओं का वास्तविक स्वर यही था। इनके लेखों में, कविताओं में, कहानियों आदि सभी में यही भाव विद्यमान है।

रघुवीर सहाय का गद्य-साहित्य और उनकी दृष्टि

राजनीति और उसके पुरोधाओं को लेकर रघुवीर सहाय की दृष्टि अथवा उनकी सोच एकदम स्पष्ट थी। देश आजाद होने के समय जो विश्वास मन में जगा था, वह समय के साथ-साथ कमजोर पड़ता गया। देश की आंतरिक स्थिति बगड़ती गई ओर देश को आपातकाल जैसी स्थिति का सामना करना पड़ा। रघुवीर सहाय इन परिस्थितियों के बीच से गुजरे थे, निश्चय ही उनकी चेतना पर इन

---

1 अर्थात्-रघुवीर सहाय, संपादक-हेमंत जोशी, राजकमल प्रकाशन-1994, पृ. 96

परिस्थितियों का प्रभाव पड़ा था। यह स्वाभाविक भी है। स्वाभाविक इसलिए है क्योंकि कोई भी चेता साहित्यकार इन परिस्थितियों से मुँह मोड़कर नहीं चल सकता। उनके मन का दर्द, अकुलाहट, झुँझलाहट सभी उनकी रचनाओं के माध्यम से वाणी पाते हैं। रघुवीर सहाय भी इससे अछूत नहीं रहे।

कथा-साहित्य के अंतर्गत रघुवीर साहय के अनेक लेखों के माध्यम से, कहानियों के माध्यम से हम उनकी झुँझलाहट, बेचैनी आदि को देख सकते हैं। भारत में भगदड़, दुर्घटना भारत की झाँकी, राजनीति प्रबंध, भारतीय साम्राज्यवाद आदि अनेकों ऐसे लेख हैं जिन्हें इस सन्दर्भ में देखा जा सकता है। 'दुर्घटना भारत की झाँकी से एक उदाहरण देखिए-

> हमारा देश किसी अंधेरे में छिपता जा रहा है। अब यह सिर्फ उनको दिखता है जो स्वयं यातनाएँ उठाते हैं; उनको भी वह उतना ही दिखता है जितना उनके इर्द-गिर्द नष्ट हो चुका होता है; जो यातना के प्रत्यक्ष अनुभव से बाहर हैं, वे तो कभी-कभी बिल्कुल नहीं देख पाते।[1]

ये कौन लोग हैं जिन्हें देश में अंधकार दिखता नहीं है! कौन हैं जो यातना के प्रत्यक्ष अनुभव से बाहर हैं! निश्चित रूप से शासन तन्त्र के वो जुमले (हुक्मरान) जो जनता की तकलीफों और उनके दुखों से वाकिफ नहीं है। शायद यह कहना असंगत और गलत होगा कि उन्हें जनता की तकलीफों का पता नहीं है। अवश्य पता है, वह सब जानते हैं। लेकिन वह अपनी आँखों पर पट्टी बाँधे हुए हैं। अपना मुँह बन्द किए हुए हैं। उन्हें पता है कि भारत में किस प्रकार की परेशानियाँ हैं, फिर भी वह उचित कदम नहीं उठाते हैं। ऐसे लोग केवल राजनीति का खेल खेलते हैं। उन्हें जनता की तकलीफों से कोई मतलब नहीं है। उन्हें

---

1 रघुवीर सहाय संचयिता, संपादक-कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 57

मतलब है, मात्र अपनी 'सत्ता' से। वह जनता से नहीं कुर्सी से लगाव रखते हैं। सच बोलने वाले का मुँह बन्द कर दिया जाता है। यह राजनीति का कुत्सित और घिनौना चेहरा है जिसे गरीब जनता समझ नहीं पाती है, अगर समझती भी है तो कुछ कर नहीं पाती है।

रघुवीर सहाय ने ऐसी ही भ्रष्ट राजनीति को अपनी कविता के माध्यम से तो पेश किया ही, साथ ही अपनी कहानियों, लेखों आदि के माध्यम से व्यंग्यात्मक तरीके से इनकी पोल खोली है। 'दुर्घटना भारत की झाँकी' नामक रघुवीर का लेख ऐसा ही है।

लोकतंत्र के नाम पर हो रहे राजनीतिकरण को रघुवीर सहाय ने अपने लेखों के माध्यम से जनता को दिखाने की कोशिश की है। उन्होंने देश को मुश्किल परिस्थितियों से गुजरते हुए देखा था। रघुवीर सहाय के लेखों को पढ़कर उनकी लोकतंत्र के प्रति दृष्टि का, उनकी सोच का पता चलता है। रघुवीर सहाय का एक बड़ा ही प्रभावशाली लेख है- 'लोहिया अस्पताल में लोहिया की मौत'। यह लेख 1985 के 'प्रतिपक्ष' में छपा था। इस लेख में रघुवीर के लोकतंत्र संबंधी विचारों का काफी हद तक पता चलता है-

> ''कोशिश तो यह हुई है कि मत का अधिकार भी दूसरे अधिकारों से काटकर अलग से एक सुन्दर वस्तु बनाकर दिखाया जाए। मताधिकार रहने दिया गया था और अभिव्यक्ति का अधिकार दबा दिया गया था।''[1]

स्पष्ट है कि रघुवीर सहाय मताधिकार के हनन् को लेकर चिंतित हैं। इन चन्द लाइनों में राजनीति के दोगलेपन को पहचाना जा सकता है। मताधिकार तो

---

1 रघुवीर सहाय संचयिता, संपादक-कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 217

रहने दिया जाता है, लेकिन अभिव्यक्ति पर अंकुश लगा दिया जाता है। यह लोकतंत्र का एक प्रकार से हनन् है और उस पर कुठाराघात है। लोकतंत्र ऐसी बातों का समर्थन कतई नहीं करता। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि जनता सब कुछ जानती है, पर वह चुपचाप रहती है और अपने अधिकारों का हनन् होते हुए देखती है।

रघुवीर सहाय के साहित्य में 'भीड़' शब्द अनेकशः देखा जा सकता है। 'भीड़' शब्द के अपने विशेष मायने हैं। यह यूँ ही नहीं है कि जहाँ 'भीड़' शब्द आया है वहां 'हिंसा' शब्द भी लगभग मिलता है। 'हिंसा' किसके प्रति होती है- भीड़ के प्रति और भीड़ उन मतदाताओं का समूह है जो अपने मताधिकार के बल पर राजनेताओं को कुर्सी पर बिठाते हैं, वह राजनेता जो पहले तो घर-घर जाकर मतदाओं के पैर पकड़ते हैं और कुर्सी मिलने के बार उन मतदाताओं को मात्र एक 'भीड़' के रूप में देखते हैं। रघुवीर सहाय ने कहा है कि 'लोकतंत्र' लोगों की स्वतंत्रता के बगैर सिर्फ एक बाजारतंत्र बनकर रह जाता है। इससे देश टूटता है और बिखरता है। 'लोहिया अस्पताल में लोहिया की मौत' नामक लेख में इस विषय पर रघुवीर के विचार देखिए-

> ''लोकतंत्र को पटरी से उतारकर फिर पटरी पर खड़ा करने का जो काम 1975 ओर 1977 में हुआ उसकी असलियत की जाँच हो रही है- हर बार जब देश में संप्रदायों की मुठभेड़ होती है और हिंसा एक निर्दलीय शक्ति के रूप में ताकतवर होती जाती है, हमारे सामने यह निष्कर्ष प्रकट होता है कि लोकतंत्र लोगों की स्वतंत्रता के बगैर सिर्फ एक बाजारतंत्र रह जाता है। हर बार जब हम समाज को इस तरह बदलने का दावा करते हैं कि समाज बदलकर लोगों को सौंप

दिया जाए और लोग कहें कि हमने इसे पसन्द किया, तो हम लोकतंत्र को कमजोर करते हैं और गांधी को नकारा।[1]

दरअसल रघुवीर सहाय समाज को और देश को मजबूत देखने के पक्षधर रहे हैं। यह तभी संभव है जबकि लोगों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी जाए।

रघुवीर सहाय 'लोकतंत्र' और 'गांधीवाद' दोनों के प्रबल समर्थक रहे हैं। लोकतंत्र को मजबूत बनाने में अपना योगदान देने के लिए एक रचनाकार को हमेशा तैयार रहना चाहिए। रघुवीर सहाय ने समाज की बुराईयों को देखा और फिर अपने लेखन के माध्यम से उसे औरों को दिखाया ताकि ऐसी बुराईयों से लोग अवगत हो सकें और उन्हें दूर कर सकें। रघुवीर सहाय के लेखों और कहानियों आदि से यह बात साबित हो जाती है।

रघुवीर सहाय अपनी कहानियों में जिन पात्रों को उठाते हैं, जिन घटनाओं को दिखाते हैं उनका समाज से कही-न-कहीं संबंध होता है। पाठक के मन में इनके प्रति एक लगाव बनता जाता है। यह लगाव पाठक को जैसे बेचैन कर देता है और यह बेचैनी उसे कुछ करने के लिए प्रेरित करती है। यह कुछ करना ही वह सब-कुछ है जिसे रघुवीर सहाय अभिव्यक्ति देना चाहते हैं। इनकी कहानियों को इसी संदर्भ में देखा जा सकता है।

रघुवीर सहाय की कहानियाँ वस्तुतः परंपरागत ढंग से हटकर लिखी हुई कहानियाँ हैं। इन कहानियों की शैली अलग है। रघुवीर की दृष्टि की यह खास विशेषता है कि वह उस छोटी-से-छोटी घटना पर भी कहानी लिख डालते हैं, जिसकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। रघुवीर सहाय इस दृष्टि से अन्य कहानीकारों से बिल्कुल अलग नजर आते हैं। देखने में इनकी कहानियाँ साधारण

---

[1] रघुवीर सहाय संचयिता, संपादक-कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 217

लग सकती हैं। लेकिन एक सजग पाठक इनमें वह पा लेता है जो अन्य कहानियों में नहीं पा सकता।

रघुवीर सहाय की एक कहानी है 'मेरे और नंगी औरत के बीच'। इस कहानी में एक औरत जो रेलगाड़ी के डिब्बे में लगभग नंगी ही बैठी है उसे कहानीकार अपना कम्बल ओढ़ाने के लिए बेचैन होता है। कंम्बल इसलिए क्योंकि ठंड का मौसम है और कड़ाके की ठंड पड़ रही है। कहानीकार का कम्बल उढ़ाने का यह प्रयास कोई साधारण प्रयास नहीं है। इसमें वह मानवीयता छुपी हुई है जिसकी मानव-जाति को आज विशेष आवश्यकता है। इस कहानी में घटना बड़ी साधारण सी है। इसमें सिर्फ एक दृश्य है जिसमें व्यक्ति औरत को मानवतावश ठंड से बचाने के लिए कम्बल ओढ़ाना चाहता है। इसी बात को लेकर वह एक कश्मकश में भी पड़ जाता है। यह कश्मकश जैसे पाठक की अपनी कश्मकश बन जाती है। यह वो मानवीय पक्ष है जो दूसरों की सहायता के लिए प्रेरित करता है। लेकिन वह व्यक्ति (कहानीकार) कम्बल उढ़ाने में झिझकता है क्योंकि रेलगाड़ी में और भी कई मुसाफिर-बैठे हुए थे। यदि वहाँ और लोग मौजूद न भी हों तो भी यह झिझक मौजूद रहेगी। शायद इससे औरत के अहम को, उसके आत्म सम्मान को ठेस पहुँच सकती है। कहानीकार ऐसा नहीं चाहता। इसी झिझक और कश्मकश में कहानी आगे बढ़ती है।

> ''अचानक उसे कोई गरम कपड़ा उढ़ा देने के लिए मैं छटपटा उठा।''[1]

रघुवीर सहाय ने छोटी-सी घटना को जिस प्रकार से जीवन्त रूप में पेश किया है वह काबिले-तारीफ है। इस कहानी का जो कथानायक (कहानीकार) है, वह जैसे प्रत्येक सहृदय व्यक्ति का, पाठक का प्रतिनिधि बन जाता है।

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2 संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 77

रघुवीर सहाय की कथा- दृष्टि की यह अन्यतम विशेषता के रूप में देखी जा सकती है कि वह अपनी करुणा को दया का रूप नहीं लेने देते। क्योंकि दया से व्यक्ति कमजोर बनता है। उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुँच सकती है। अतः रघुवीर की दृष्टि सभी के स्वाभिमान की चिंता करती है। यही बात अथवा रघुवीर की यही कथा-दृष्टि रघुवीर को खास बताती है, विशेष बनाती है।

> ''मैं इसे कम्बल क्यों देना चाह रहा हूँ? क्या मुझे इस पर दया आ रही है, क्योंकि इसके पास नहीं है और मेरे पास है?''[1]

रघुवीर जी आगे कहते हैं-

> ''एक मानव को दूसरे पर दया करने का क्या अधिकार है? प्यार मैं कर सकता हूँ, पर क्या मैं सचमुच प्यार कर रहा हूँ, दया बिल्कुल नहीं? क्या मैं विश्वास से कह सकता हूँ।''[2]

रघुवीर 'दया' को दूसरे व्यक्ति के आत्मसम्मान के लिए खतरा समझते हैं।

वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति को सोचने का, समझने का अपना एक नजरिया होता है। प्रत्येक व्यक्ति की चीजों को परखने की एक खास 'दृष्टि' होती है। किसी रचनाकार, साहित्यकार आदि के सन्दर्भ में तो इसका बड़ा महत्व होता है, यानी साहित्यकार अथवा रचनाकार का नजरिया, दृष्टिकोण एक आम आदमी से अलग होता है। उसकी सोचने की शक्ति अलग होती है। एक रचनाकार छोटी-छोटी बातों के घटनाओं में रचना के उत्स ढूंढ लेता है। एक साधारण व्यक्ति का ध्यान इन पर नहीं जाता। रघुवीर सहाय चूँकि एक कवि थे, साहित्यकार थे, अतः वह छोटे-से-छाटे विषय को भी अपनी संवेदना से जोड़कर देखते हैं। 'मेरे

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2 संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 77

2 वही पृ. 77

और नंगी औरत के बीच' कहानी देखने में तो एकदम साधारण-सी लगती है, लेकिन इसका प्रभाव व्यापक रूप में पड़ता है। यही रघुवीर की कथा-दृष्टि की विशेषता भी है।

वास्तव में रघुवीर सहाय का कथा कहने का ढंग निराला था। वह साहित्यिक भाषा का खूब जमकर प्रयोग करते हैं। लेकिन फिर भी जटिल अथवा दुरूह नहीं है। रघुवीर सहाय की रचनाएँ एक आम आदमी को केन्द्र में रखकर चलती हैं।

'रास्ता इधर से है', कहानी-संग्रह में रघुवीर की एक कहानी है- 'किले में औरत'। इसे एक लेख के तौर पर भी देखा जा सकता है। इसमें रघुवीर ने एक होटल में ठहरने क़ा जिक्र किया है। इस होटल में क्या-कुछ होता है, कैसे लोगों से उनकी मुलाकात होती है, इसका एक प्रकार से ब्यौरा कहानीकार ने दिया है। लेकिन इस ब्यौरे की विशेषता यह है कि यह अत्यंत साहित्यिक भाषा में है। इसमें कहानीकार बताता है कि किस प्रकार इस होटल में एक औरत अपना पेट पालने के लिए नाचती है। उस औरत को अपने कपड़े तक उतारने पड़ते हैं और उसे नंगा होना पड़ता है। यह कोई कामुक दृश्य नहीं है बल्कि इससे पाठक में औरत के प्रति करुणा जागृत होती है। औरत मजबूर है यह सब करने के लिए। इस कहानी के माध्यम से रघुवीर ने ऐसी स्त्रियों की दशा की तरफ समाज का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की है। एक पाठक का ध्यान अवश्य इस औरत की मजबूरी की ओर जाता है। उसके मन में अमुक औरत के प्रति संवेदना जागृत होती है।

एक सजग पाठक इस कहानी में औरत के प्रति कारुणिक हो उठता है। पाठक को अहसास होता है कि आज की अनेक स्त्रियों को अपना पेट पालने के लिए अपना तन तक बेचना पड़ता है-

''औरत ने साए के अन्दर से एक जाँघिया निकालकर दोनों हाथों में लेकर उसका आकार सबको दिखाया। उसे हवा में नचाकर उसने फेंक दिया। गिटार बजाने वाला एक आदमी बड़ी अदा से उठाकर उसे ले गया। औरत ने साया समेटकर एक जाँघ दिखाई।''[1]

रघुवीर सहाय जो कहना चाहते हैं कभी स्पष्ट शब्दों में कह देते हैं और कभी-कभी वह व्यंग्य का सहारा लेते हैं। इन पंक्तियों में व्यंग्य का सहारा न लेकर स्पष्ट शब्दों में उस औरत की हकीकत को रघुवीर ने व्यक्त किया है।

माननीय-संबंधों का यथार्थ और रघुवीर सहाय की दृष्टि

रघुवीर सहाय की कथा-दृष्टि यथार्थ का आग्रह करती है। यानी रघुवीर सहाय यथार्थ के पक्षधर रहे हैं। रघुवीर का यथार्थ के प्रति आग्रह उनके पत्रकार जीवन से जुड़ता है। चूँकि एक पत्रकार सच्ची घटनाओं को जनता के समक्ष पेश करता है, रघुवीर भी एक पत्रकार थे, अतः उनका यथार्थ के प्रति आग्रह स्वाभाविक ही है। यहाँ एक बात और महत्वपूर्ण हो जाती है। वह यह कि इनका यथार्थ मानवता से जुड़ता है। यानी रघुवीर सहाय जो कुछ भी कहते हैं वह मानवता के साथ कहीं-न-कहीं जुड़ा होता है।

रघुवीर सहाय की कहानियों की बात करें तो इसमें हमें इसी बात के प्रमाण मिलते हैं। रघुवीर सहाय की कहानियों की मुख्य विशेषता है- मानव-समाज के बीच परिवेशगत मानव-संबंध अर्थात् परिस्थितियाँ जो लगातार बदल रही हैं उनमें मानवीय-संबंध किस प्रकार के बन रहे हैं और किस प्रकार टूट रहे हैं। श्री सुरेश शर्मा जी ने 'रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2' की भूमिका में लिखा है-

कहानी में उनका उद्देश्य है बदलती परिस्थितियों के बीच बदलते मानव-संबंधों की पहचान। अपनी कहानियों में वे इस पहचान को

---

[1] रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2 संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 123

प्राथमिकता देते हैं। कहानी के अन्य तत्त्व उनके लिए ज्यादा महत्त्व नहीं रखते।[1]

कहानी 'विधा' को लेकर रघुवीर की दृष्टि कुछ अलग हटकर थी। इसका कारण रघुवीर सहाय के परंपरागत ढंग से अलग हटकर सोचने का ढंग था। यानी वह परंपरागत कहानी-तत्वों पर चलने के पक्षधर नहीं थे। साहित्य-जगत में कहानी के तत्वों को लेकर जो अवधारणा चली आ रही थी, रघुवीर उसके अनुसार चलने के पक्षधर नहीं थे। शायद यही वजह रही कि रघुवीर सहाय को एक कहानीकार के रूप में पहचान न मिल सकी और उनकी कहानियाँ साहित्य-जगत में लगभग उपेक्षित रहीं। यह भी एक कड़वा सच है कि अधिकांश हिन्दी के ही पाठक यह नहीं जानते कि रघुवीर सहाय ने कहानियाँ भी लिखी हैं। यह न्यायसंगत नहीं लगता।

रघुवीर सहाय की कहानियाँ बेशक उपेक्षित रही हैं लेकिन यह भी एक सच है कि इनकी कहानियाँ अनेक जाने-माने कहानीकारों की कहानियों से किसी भी प्रकार कम नहीं है। बल्कि कुछ कहानियाँ तो अद्‌भुत हैं और अन्य कहानियों से ज्यादा प्रभावशाली हैं। यह कहानियाँ देखने में बेशक साधारण-सी लगें लेकिन यह कहानियाँ पाठक को झकझोर देती हैं, सोचने पर मजबूर कर देती हैं।

रघुवीर सहाय की कहानियों के प्रति विशेष दृष्टि ही इनकी कहानियों को विशिष्ट बना देती है। इनकी कहानियों के विषय अक्सर ऐसे होते हैं जिन पर किसी का ध्यान नहीं जाता। यह विषय आम जिन्दगी में ज्यादा महत्व के नहीं लगते। लेकिन रघुवीर सहाय इन विषयों पर भी अच्छी कहानियाँ लिख डालते हैं। उदाहरण के लिए विजेता, इन्द्रधनुष, उमस के बाहर, मूँछ, फुटबाल, एक छोटी-सी यात्रा ऐसी ही कहानियाँ हैं। इन कहानियों के विषय एकदम साधारण हैं लेकिन इनका प्रभाव साधारण नहीं है।

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2 संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ.

कहानी के संदर्भ में रघुवीर सहाय की अलग दृष्टि थी, अलग सोच थी। 'जो आदमी हम बना रहे हैं' संग्रह की भूमिका में रघुवीर सहाय जी ने कहानी के विषय में कहा है-

> कहानी अन्य विधाओं की तरह जीवन की एक समझ पैदा करती है और जब नहीं कर पाती तो कहानी नहीं होती है, मगर जब कर पाती है तो उस पर यह बन्धन भी नहीं रहता कि वह कहानी ही रहे।[1]

रघुवीर सहाय के इन विचारों को देखकर उनकी कहानी के प्रति दृष्टि का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

वस्तुत: साहित्य की कोई भी विधा हो, जैसे- कहानी, उपन्यास, रेखाचित्र संस्मरण आदि, सभी जीवन के किसी-न-किसी पक्ष को अवश्य धारण किए हुए रहती है। कारण, रचनाकार की रचना जीवन से जुड़ी हुई होती है। रचनाकार चूँकि स्वयं एक मनुष्य ही होता है, अत: उसके जीवनानुभव और विचार उसकी रचना में अभिव्यक्त होते हैं, निहित होते हैं। यह अलग बात है कि रचनाकार अपनी रचना में अपने अनुभवों, विचारों आदि को किस प्रकार वाणी बद्ध करता है। हर किसी की अपनी अलग दृष्टि होती है।

इस सन्दर्भ में हम जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' का उदाहरण दे सकते हैं। कामायनी में वेदकालीन आख्यान और ऐतिहासिकता का सहारा लिया गया है। फिर भी इसमें स्वयं जयशंकर प्रसाद जी के जीवनानुभवों को इस रचना में देख सकते हैं। कामायनी वास्तव में प्रसाद जी के जीवन और उनकी समस्याओं को प्रकारांतर से व्यंजित करती हुई नजर आती है। इसके लिए प्रसाद जी ने 'फैण्टेसी' का सहारा लिया है। गजानन माधव मुक्तिबोध ने कामायनी के विषय में लिखा है-

---

[1] रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2 संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 9

> मनु मानव-मात्र का, मन का, मानव-मात्र के मन का, प्रतीक नहीं, वह केवल उस मन का प्रतीक है जो प्रसाद जी का अपना या उन जैसा मन है। इस बात को हम दूसरे शब्दों में यो कहेंगे कि मनु उस जीवन-समस्या का प्रतीक है, कि जो जीवन-समस्या किसी-न-किसी अंश में, प्रसाद जी की अपनी समस्या रही है।[1]

अतः मुक्तिबोध जी के अनुसार कामायनी स्वयं प्रसाद के अपने जीवन की समस्याओं आदि का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करती है। इसमें मनु की जो स्थिति है, वह प्रसाद जी की कहीं-न-कहीं अपनी स्थिति ही है। एक बात जो विशेष गौर करने लायक है, वह यह है कि इस उद्धरण से यह तात्पर्य नहीं निकाला जाना चाहिए कि प्रत्येक रचना उसके रचनाकार के जीवन से पूर्णतः जुड़ी हुई होती है। इस उद्धरण का आशय यह है कि चाहे रचना कोई भी हो, वह रचनाकार के स्वयं के जीवन-अनुभवों से प्रेरित अवश्य होती है।

यदि हम मुंशी प्रेमचन्द्र जी के रचना-संसार में झाँके तो वहाँ भी कमोबेश यही बात दिखती है। प्रेमचन्द जी जो समस्याएँ अपनी कहानियों, उपन्यासों आदि में उठाते हैं, उनसे प्रेमचन्द जी अवश्य रूबरू थे। उन्होंने उन समस्याओं को अपने जीवन में देखा था। उन समस्याओं के बीच वह रहे थे और उन्हें अनुभव भी किया था। अतः उनकी रचनाओं में वह समस्याएँ, पीड़ाएँ मुखरित हुई हैं।

रघुवीर सहाय की रचनाओं के विषय में भी ऐसा ही कहा जा सकता है। उनकी कविताओं में राजनीति मुख्य विषय के रूप में आई है। इस राजनीति का एक आदमी की जिंदगी पर कैसे और क्या प्रभाव पड़ा रघुवीर ने उसे देखा, महसूस किया। वही चीज उनकी कविताओं में भी दिखाई देती है। उनकी कहानियों में भी यही बात लागू होती है। वास्तव में रघुवीर सहाय ने उन घटनाओं को, उन

---

[1] कामायनी : एक पुनर्विचार, गजानन माधव मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, चौथा संस्करण, 2007, पृ. 8-9

परिस्थितियों को ज्यों-का-त्यों बयाँ कर दिया जिन्हें उन्होंने देखा और महसूस किया।

रघुवीर सहाय की कहानियों को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि उनकी कहानियाँ यथार्थवादी धरातल पर लिखी हुई कहानियाँ हैं। जैसे- प्रेमिका, कुत्ते की प्रतीक्षा, उमस के बाहर, लड़के, एक छोटी-सी यात्रा, कूड़े के देवता, इन्द्रधनुष आदि। यह यथार्थवादी धरातल पर लिखी हुई कहानियाँ जान पड़ती है।

इन कहानियों का यथार्थ मानव-संबंधों से जुड़ा हुआ यथार्थ है। वस्तुतः रघुवीर की कहानियों का यथार्थ एक अलग प्रकार के रूप में दिखाई देता है। इसे एक उदाहरण से प्रस्तुत किया जा सकता है। मान लीजिए कि कोई व्यक्ति आग के पास बैठा है। उस व्यक्ति को यह भली-भांति ज्ञात होगा कि आग गर्म है। आग का गर्म होना एक सच्चाई है जिसका उस व्यक्ति को ज्ञान है। जबकि यदि वह व्यक्ति उस आग को किसी तरह स्पर्श करता है तो उसे अत्यधिक जलन का अनुभव होगा। अब वह व्यक्ति आग से, पहले से अधिक दूर हटकर बैठने का प्रयास करेगा। अतः आग का गर्म होने का पता होना और स्पर्श होने पर उसको अनुभव करना, महसूस करना अलग-अलग यथार्थ हैं। यानि यथार्थ तो एक ही है, लेकिन दोनों में अन्तर है। रघुवीर सहाय के कथा-साहित्य का यथार्थ भी इसी प्रकार से दूसरे यथार्थ, अनुभव पर आधारित यथार्थ है। वह यथार्थ मानवीय संबंधों के बिना अभिव्यक्ति पाता ही नहीं है। इस संदर्भ में अलका सरावगी जी के विचार आवश्यक जान पड़ते हैं-

> ''रघुवीर सहाय के लिए यथार्थ की धारणा मूलतः एक नैतिक धारणा है, क्योंकि इसमें यथास्थिति को बदलने का संकल्प निहित है, वे यथास्थिति अथवा प्रतिगामिता के लिए रचना को एक अपराध मानते हैं। एक ओर तो वे यथार्थ को अतिरंजित, विकृत और

सरलीकृत करने का विरोध करते हैं, तो दूसरी ओर वे ऐसे यथार्थ के चित्रण के विरुद्ध हैं जो यह प्रभाव उत्पन्न करता है कि सब कुछ इतना भयंकर है कि किसी भी आदर्श के लिए प्रयत्न तो दूर इच्छा भी व्यर्थ है।''[1]

रघुवीर सहाय की कहानियों में अभिव्यक्त यथार्थ को समझने में अलका जी के विचार महत्वपूर्ण हैं और उपयोगी भी। अलका सरावगी जी के इन विचारों से स्पष्ट होता है कि रघुवीर की यथार्थवादी अवधारणा किस प्रकार औरों से अलग थी। इनसे रघुवीर सहाय जी की कहानियों के प्रति रघुवीर जी की दृष्टि और उनकी अवधारणा दोनों को समझनें में सहायता मिलती है।

वस्तुत: रघुवीर जी की कहानियों और अन्य लेखों में आया हुआ यथार्थ अन्य कहानीकारों, रचनाकारों के यथार्थ से अलग ढंग का यथार्थ है। रघुवीर जी यथार्थ को मानवता की कसौटी पर कसने के पक्षधर रहे हैं।

इनकी एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण और मार्मिक कहानी है- 'सेब'। यह कहानी यथार्थ के धरातल पर लिखी हुई रघुवीर की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इसमें मानवता को संवेदना और यथार्थ के साथ बड़ी खूबसूरती के साथ रघुवीर सहाय जी ने शब्दबद्ध किया है। इस कहानी का संबंध एक छोटी-सी घटना के साथ जोड़ा गया है। इस प्रकार की घटनाएँ आम जिंदगी में घटती रहती हैं, जिन पर किसी का ध्यान नहीं जाता। लेकिन सहाय जी की यह अन्यतम विशेषता रही कि उन्होंने ऐसी साधारण-सी घटनाओं पर भी बड़ी ही मार्मिक और सार्थक कहानियाँ लिख डालीं। इस कहानी में रघुवीर जी ने 'गरीबी' का एक बिम्ब खींचने की कोशिश की है। गरीबी का जैसा व्याख्यान इस कहानी में किया गया है वह

---

1 रघुवीर सहाय, सं.-विष्णु नागर, असद जैदी, आधार प्रकाशन पंचकूला (हरियाणा), 1993, पृ. 152

सराहनीय है। रघुवीर जी ने किस प्रकार इस चित्र अथवा बिम्ब को शब्दबद्ध किया है, उसकी एक झलक देखने योग्य है-

> "मैंने सोचा, बस! मगर इसे काफी अफसोस की बात होनी चाहिए, क्योंकि एक तो गाड़ी वैसे ही ढचर-मचर हो रही थी, ऊपर से इसके नट के गिर जाने से वह बिल्कुल ठप हो जाएगी, क्या कहावत है वह- गरीबी में आटा गीला-कितना दर्द है इस कहावत में, और कितनी सीधी चोट है। आटा जरुरत से ज्यादा गीला हो गया और अब दुखिया गृहिणी परात लिए बैठी है- उसे सुखाने को आटा नहीं है यानी आटा है, मगर रोटियाँ नहीं पक सकतीं।"[1]

रघुवीर सहाय ने कितनी सहजता और चातुर्य के साथ गरीबी की सच्चाई को शब्द बद्ध किया है। इसीलिए सहाय जी की कहानियाँ अन्य कहानियों से हटकर हैं और कई मायनों में अच्छी भी। रघुवीर सहाय जी ने गरीबी को दिखाने के लिए जिस कहावत का सहारा लिया है, उससे सभी परिचित हैं। लेकिन रघुवीर जी ने इसे जिस सिद्दत के साथ मानवीयता से जोड़कर दिखाया है वह वास्तव में सराहनीय है।

वस्तुत: ग़रीबी और संवेदना में एक संबंध होता है। एक ग़रीब आदमी की स्थिति और बेबसी पर किसी को भी दया आ जाना स्वाभाविक है। यह एक कड़वी सच्चाई है कि किसी की बेबसी पर दया सभी को आ जाती है, लेकिन वर्तमान समय में कोई सहायता के लिए आगे नहीं आता है। किसी के पास इतना समय ही नहीं है कि किसी के काम आ सके। रघुवीर सहाय की सोच, उनकी दृष्टि विपरीत थी। वह मात्र संवेदना प्रकट करना ही नहीं जानते थे किसी की ज़रूरत के समय काम आना भी उनके व्यक्तित्व मे शामिल था। रघुवीर सहाय की कई कहानियों में भी इस बात को देखा जा सकता है।

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, सं.-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 53

'मेरे और नंगी औरत के बीच' कहानी इसी प्रकार के संदर्भ में देखी जा सकती है। एक औरत को ठंड से बचाने के लिए अपना कम्बल उसे ओढ़ा देना इसी बात की ओर इशारा करता है। इस कहानी में एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य से जो संबंध दिखाया गया है वह प्रशंसनीय है। रघुवीर सहाय की दृष्टि में मानव कल्याण सर्वोपरि भाव था जो इनकी कहानियों और साथ ही इनके लेखों में भी देखा जा सकता है।

वस्तुत: रघुवीर जी के मन में हमेशा दूसरों के लिए हमदर्दी का भाव रहा। उन्होंने हमेशा दूसरों की सहायता की। लेकिन एक बात जो महत्त्वपूर्ण है वह यह कि रघुवीर सहाय की दृष्टि में हमदर्दी और करुणा का जो रूप विद्यमान था, वह औरों से अलग हटकर था। वह हमदर्दी रखते थे, लेकिन उनके लिए जो वास्तव में हमदर्दी के हक़दार थे। कहने का अभिप्राय यह है कि रघुवीर सहाय हर उस व्यक्ति की मदद करना चाहते थे जो स्वयं की मद करना चाहता था। अर्थात् वह व्यक्ति जो मुसीबतों से घिरे रहने के बावजूद टूटा न हो, हार न माना हो और जो लगातार संघर्ष कर रहा हो; रघुवीर सहाय उसके प्रति पूरी हमदर्दी और करुणा रखते थे, फिर चाहे वह कोई व्यक्ति हो अथवा पशु-पक्षी। इसका प्रमाण है- 'एक जीता-जागता व्यक्ति'। ऐसी कहानियाँ अन्यत्र कम ही मिलती हैं। इस कहानी में रघुवीर सहाय ने एक चिड़िया के संघर्ष को दिखाया है। वह संघर्ष कर रही है- मौत से। वह चिड़िया जो सड़क पर पड़े कोलतार के कीचड़ में फँस गई है और उससे निकलने के लिए संघर्ष कर रही है। यह संघर्ष कई संघर्षों से बड़ा संघर्ष था, अर्थात् यह जीने की चाह को जगा रहा था। रघुवीर सहाय अथवा कहना चाहिए कि कहानीकार ने उस चिड़िया को छुड़ाना चाहा लेकिन फिर रुक गया। कहानीकार के रुकने का कारण उसी के शब्दों में देखिए-

''छुड़ा दूँ, मैंने सोचा। इसमें सोचने की क्या बात है? पर क्या वह खुद कोशिश नहीं कर रही है, उसे अपने-आप करने न दूँ? मैं समझ सकता हूँ कि खुद कोशिश करने का क्या अर्थ होता है और सहानुभूति एक जगह अनादर भी बन जा सकती है। वह इस समय एक महत्वपूर्ण संघर्ष कर रही है जैसे उसने जरूरी समझा है और जैसे वह ही कर सकती है।''[1]

स्पष्ट है कि रघुवीर सहाय 'सहानुभूति' और 'दया' के विषय में क्या विचार रखते हैं। दरअसल यदि व्यक्ति बिना किसी सहारे के खुद ही संभलकर खड़ा हो तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। उसमें संघर्ष की नई शक्ति पैदा होती है। वह भविष्य में संघर्ष करने का माद्दा रखता है। रघुवीर सहाय की सोच ठीक इसी प्रकार की थी जो इन कहानियों में देखी जा सकती है। कहानीकार बेशक उस चिड़िया को छुड़ा देता लेकिन उसमें (चिड़िया में) आने वाली खतरों के प्रति संघर्ष का भाव संभवत: कम हो जाता। लेकिन चिड़िया चूँकि खुद ही कोशिश कर रही है, अत: यह कोशिश उसमें आत्मसम्मान भरेगी और परिणाम भी सुखद होगा-

मैं केवल उसे भयभीत कर सका था और में कुछ कर भी नहीं सकता था, पर उसने अपनी सारी ताकि जुटा ली थी और यह सिर्फ वही कर सकती थी। मैंने मौन रहकर उसे आँखभर देखा। जैसे सम्मोहित होकर वह एक पल थिर आँखों से मुझे देखती रही, फिर-काँपकर ऐसे फड़फड़ाई जैसे यह उसका आखिरी फड़फड़ाना हो। फिर उसने पंख खोल दिए और उन्हें तान दिया। अचानक वह छूट गई।[2]

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, सं.-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 61-62

2 वही पृ. 62

यह संघर्ष मनुष्य को एक शक्ति देता है, उसे संघर्ष करने को प्रेरित करता है।

'गुब्बारे' कहानी में एक छोटे-से बच्चे को जीवन-संघर्ष में रत दिखाया गया है। एक छोटा-सा लड़का - रामू, जिसके अभी खेलने के दिन हैं, परिस्थितिवश वह भरी ठंड में सड़क पर नंगे पैर गुब्बारे बेचने पर विवश है। वह चूँकि अभी एक छोटा-सा बालक है, उसकी भी कुछ इच्छाएँ हैं, कामनाएँ हैं, परन्तु उन्हें वह पूरी नहीं कर पाता है। अपने पेट की भूख मिटाने के लिए उसे गुब्बारे बेचने पड़ते हैं। उसके प्रति करुणा का भाव पाठक के मन में आना स्वाभाविक है। इस कहानी में कहानीकार ने रामू को जिस प्रकार से संघर्ष करते हुए दिखाया है, वह औरों के लिए भी एक संदेश है, प्रेरणा है।

रघुवीर सहाय ने अपने कथा-साहित्य में अपनी कहानियों के माध्यम से पाठकों को जैसे एक संदेश, एक प्रेरणा दी है, और यह प्रेरणा कई मायनों में अहम् है। अतः रघुवीर सहाय की कथा-दृष्टि के लिहाज़ से यह कहानियाँ बड़ी ही महत्वपूर्ण हैं। श्री मनोहर श्याम जोशी जी ने रघुवीर सहाय की इसी दृष्टि की ओर इस वक्तव्य में पाठकों का ध्यान खींचने की कोशिश की है-

> "उसके मन में ऐसे हर शख्स के लिए हमदर्दी थी जो मुसीबतों में घिरे रहने के बावजूद अपनी मुसीबतों का रोना न रो रहा हो। भीतर से बिल्कुल टूट जाने के बावजूद अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए सतत् संघर्ष कर रहा हो।"[1]

---

[1] रघुवीर सहाय : रचनाओं के बहाने एक स्मरण, मनोहर श्याम जोशी, वाणी प्रकाशन-2003, पृ. 17

श्री मनोहर श्याम जोशी जी ने रघुवीर सहाय को बहुत करीब से जाना था। दोनों आपस में घनिष्ठ मित्र थे। रघुवीर सहाय ने जोशी जी की कई तरह से सहायता भी की थी। रघुवीर सहाय की दृष्टि में 'दया' का क्या स्थान था, श्री जोशी जी ने इसे इस प्रकार से व्यक्त किया है।

> ''दया चाहने और दया करने वाले तमाम इंसान उसे घटिया मालूम होते थे। इसीलिए वह बहुत सतर्क रहता था कि कहीं किसी जरूरतमंद से मेरी हमदर्दी दया का रूप न ले ले।''[1]

'मेरे और नंगी औरत के बीच', एक जीता-जागता व्यक्ति, सेब आदि कहानियों में श्री जोशी जी के वक्तव्य का समर्थन मिल जाता है। 'मेरे और नंगी और के बीच' कहानी से यह उदाहरण प्रस्तुत है-

> मैं इसे कम्बल क्यों देना चाह रहा हूँ? क्या मुझे इस पर दया आ रही है, क्योंकि इसके पास नहीं है और मेरे पास है? सावधान मैंने अपने को अपनी पिछली कहानियों की याद दिलाई - एक मानव को दूसरे पर दया करने का क्या अधिकार है?[2]

रघुवीर सहाय की दृष्टि विश्लेषणपरक थी। वह हर बात का हर पक्ष का विश्लेषण करते हैं और उस पर चिंतन करते हैं। इनके लिखे हुए लेख विश्लेषण परक दृष्टि का ही परिणाम हैं। वह पहले किसी बात का, समस्या आदि का विश्लेषण करते हैं, तभी किसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। 'क्या कठमुल्ला हिन्दू राज करेगा' से यह पंक्तियाँ देखिए-

> एक रचनाकार जब यथार्थ को समाज में सत्य और न्याय की अभिवृद्धि के उद्देश्य से पहचानने का प्रयत्न करेगा तो उसे कुछ

---

1 वही, पृ. 17

2 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, सं. सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 77

परंपरागत मूल्यों को स्वीकार करना और कुछ परंपरागत मूल्यों को अस्वीकार करना होगा।[1]

इन पंक्तियों में रघुवीर की विश्लेषणपरक दृष्टि का कुछ आभास जरूर मिल जाता है। उनकी सोच वस्तु की गहराई में जाकर उसको जाँचती है और उसका मूल्यांकन करती है।

इनका एक लेख है- यह किसका विश्वासघात था? यह लेख रघुवीर सहाय की विश्लेषणपरक दृष्टि का अनुपम उदाहरण है।

'जनसत्ता' अखबार में 1984-1990 ई. तक रघुवीर सहाय ने नियमित कॉलम 'अर्थात्' में अनेकों लेख लिखे। यह सभी लेख रघुवीर सहाय की विश्लेषणपरक-दृष्टि के ही प्रमाण हैं।

---

[1] अर्थात् (रघुवीर सहाय), संपादक-हेमंत जोशी, राजकमल प्रकाशन-1994, पृ. 7

अध्याय-3

रघुवीर सहाय की कहानियों की संवेदना

रघुवीर सहाय एक ऐसे व्यक्तित्व के मालिक थे जिसमें कवि, कहानीकार, निबन्धकार, पत्रकार आदि एक साथ विद्यमान थे। यह अलग बात है कि रघुवीर सहाय एक कवि के रूप में विख्यात हैं। लेकिन ध्यान रखना चाहिए रघुवीर जितने बड़े एक कवि थे उतने ही बड़े कहानीकार और उससे भी बढ़कर एक पत्रकार।

रघुवीर सहाय का सम्पूर्ण जीवन एक तपस्या थी जिसमें समाजसेवा और साहित्य-सेवा विद्यमान थी। उन्होंने आजीवन साहित्य साधना की। जब तक वह इस संसार में रहे तब तक वह अपनी इस साधाना से विमुख नहीं हुए।

रघुवीर सहाय और उनकी कहानियाँ

रघुवीर सहाय की कहानियाँ संख्या में अधिक नहीं हैं, लेकिन जितनी भी हैं, अपने आप में विशिष्ट हैं और महत्वपूर्ण भी। साहित्य- जगत के लिए यह कहानियाँ महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ हैं। यह दुर्भाग्य का विषय है कि रघुवीर सहाय की कहानियों के प्रति हिन्दी-साहित्य जगत में उदासीनता का भाव रहा है। इनकी कहानियाँ हिन्दी साहित्य जगत में लगभग उपेक्षित रही हैं। लेकिन इससे इन कहानियों की विशिष्टता अथवा महत्ता कम नहीं हो जाती। हिन्दी साहित्य जगत के लिए ये कहानियाँ उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं जितनी की अन्य कहानीकारों की कहानियाँ। बल्कि यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि इन कहानियों में कुछ कहानियाँ तो हिन्दी-साहित्य में बेजोड़ स्थान रखती हैं, जिनकी तुलना करना मुनासिब नहीं लगता। 'सेब' और 'विजेता' इसी तरह की कहानियाँ हैं।

रघुवीर सहाय की कहानियों को लेकर श्री विजय मोहन सिंह जी के विचार महत्त्वपूर्ण जान पड़ते हैं-

''रघुवीर सहाय जब से कविताएँ लिख रहे थे प्रायः तभी से कहानियाँ भी लिख रहे थे। यद्यपि उनकी कहानियाँ संख्या में अपेक्षाकृत कम हैं पर उनकी कविताओं के समानान्तर वे उतनी ही या वैसी ही महत्त्वपूर्ण हैं, जितनी शायद मुक्तिबोध की कहानियाँ।''[1]

वस्तुतः मुक्तिबोध की कहानियों से रघुवीर की कहानियों की तुलना करना अपने आप में एक बड़ी बात है। श्री विजय मोहन सिंह जी आगे कहते हैं-

''हालाँकि मुक्तिबोध की कहानियों और रघुवीर की कहानियों में उतना ही फर्क है जितना मुक्तिबोध की कविताओं और रघुवीर सहाय की कविताओं में है।''[2]

रघुवीर सहाय की कहानियों को ध्यान से देखने के पश्चात् पता चलता है कि ये कहानियाँ कहानी के पारंपरिक तत्त्वों के स्तर पर अन्य कहानियों से अलग हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि रघुवीर सहाय की कहानियाँ पारंपरिक कहानी तत्त्वों जैसे कथानक मध्य, आदि से इत्तफाक नहीं रखती। यानि रघुवीर जब कहानी लिखते हैं तो इन तत्वों की परवाह नहीं करते। बल्कि ध्यान से इन कहानियों पर गौर किया जाए तो पता चलता है कि कथानक पर तो रघुवीर जोर ही नहीं देते। रघुवीर की कहानियों का शिल्प भी अलग ही है।

रघुवीर सहाय एक बहुमुखी रचनाकार थे। इनकी कहानियों की संरचना विशिष्ट प्रकार की है। विशिष्ट प्रकार की इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि अन्य कहानियों से रघुवीर की कहानियों की संरचना एकदम अलग है। इसी कारण कई बार इन कहानियों पर लेखनुमा रचना होने का आभास होता है। यानि ये कहानियाँ

---

1 रघुवीर सहाय, संपादक-विष्णु नागर, असद ज़ैदी, प्रकाशन-आधार प्रकाशन पंचकूला (हरियाणा), 1993, पृ. 34

2 वही, पृ. 34

बल्कि कहना चाहिए कि कुछ कहानियाँ एक लेख अधिक लगती हैं, कहानियाँ कम।

इसके अलावा ये कहानियाँ आकार और स्वरूप दोनों में छोटी भी हैं। कुछ कहानियों का विषय तो अत्यंत साधारण-सा है, लेकिन फिर भी यह कहानियाँ असाधारण लगती हैं। रघुवीर सहाय की काबिलियत ने उन साधारण से विषयों में विशिष्टता भर दी है। इस संदर्भ में इनकी कहानी- 'गुब्बारे' को लिया जा सकता है। इस कहानी का विषय बहुत ही साधारण-सा लगता है, लेकिन रघुवीर सहाय ने एक बालमन की सूक्ष्म परतों को, उसकी भावनाओं को जिस प्रकार इस कहानी में दिखाया है वह अद्‌भुत है और विशिष्ट भी। इस कहानी की मूल संवेदना इसी बालमन और उसकी इच्छाओं को लेकर है जो रामू के माध्यम से कहानीकार ने दिखाई है-

> "रामू को स्वयं यह हवा में उड़ने वाले गुब्बारे बहुत पसन्द थे। हालाँकि उसके हाथ में रोज बीस-पच्चीस गुब्बारे रहते थे, किन्तु वह एक ऐसे गुब्बारे के लिए तरसा करता था जो उसका बिल्कुल अपना हो। वह चाहता था एक बड़ा-सा बैंजनी गुब्बारा उसका बिल्कुल अपना हो और वह उसके साथ जीभर खेलकर, एक बार उसे अपनी चुटकियों में पकड़कर छोड़ दे।"[1]

रघुवीर सहाय की कहानियों पर कुछ आक्षेप लगे हैं। इनमें मुख्य यह है कि इनकी कहानियाँ, कहानियाँ न होकर एक लेख के अधिक निकट हैं। जैसे 'कहानी की कला' कहानी। इसके अलावा कुछ और कहानियों को भी इसी संदर्भ में देखा जा सकता है।

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन 2000, पृ. 34

इस विषय में इतना कहना पर्याप्त होगा कि रघुवीर का नजरिया अथवा दृष्टिकोण कहानियों को लेकर जिस प्रकार का था, वह उसी के कारण है। यानी रघुवीर सहाय की कहानियों के प्रति सोच कुछ अलग प्रकार की थी। इनके विचार कहानी को लेकर कुछ अलग ढंग के थे। वह कहानियों में कहानी के तत्त्वों को अहमियत नहीं देते, बल्कि कहानी में 'जीवन की समझ' को परखते हैं। इसी वजह से रघुवीर कहानी के बने-बनाए ढाँचे को तोड़ते हैं। वह कहानी को परंपरागत बंधन से आजाद करते हैं। इस सन्दर्भ में रघुवीर सहाय के विचार जानना आवश्यक हो जाता है। वह कहते हैं-

> ''कहानी अन्य विधाओं की तरह जीवन की एक समझ पैदा करती है और जब नहीं कर पाती तो कहानी नहीं होती है, मगर जब कर पाती है तो उस पर यह बंधन भी नहीं रहता कि वह कहानी ही रहे।''[1]

रघुवीर सहाय के इन विचारों से अवगत होने के पश्चात् कहा जा सकता है कि इनकी कहानियाँ क्यों एक कहानी न लगकर एक लेख अधिक लगती हैं। यह सब रघुवीर के इसी नजरिये का परिणाम है। अत: रघुवीर सहाय की सोच कहानी को लेकर अलग ही तरह की थी।

रघुवीर सहाय वास्तव में कहानी को मात्र एक कहानी ही नहीं मानते, बल्कि उससे कुछ अधिक मानते हैं। वह कहानी में मानवीय संबंधों को अहमियत देते हैं। श्री सुरेश शर्मा जी के विचार इस सन्दर्भ में महत्वपूर्ण हैं-

> ''कहानी में उनका उद्देश्य है बदलती परिस्थितियों के बीच बदलते मानव-संबंधों की पहचान। अपनी कहानियों में वे इस 'पहचान' को

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन 2000, पृ. 9 (भूमिका से)

प्राथमिकता देते हैं। कहानी के अन्य तत्व उनके लिए ज्यादा महत्त्व नहीं रखते।''[1]

रघुवीर सहाय की कहानियों में मानव-संबंधों को बखूबी देखा जा सकता है। रघुवीर सहाय कहानी के तत्वों को तरजीह नहीं देते हैं, लेकिन इसके बावजूद वह अच्छी कहानी लिखने में सफल होते हैं। यह बात रघुवीर सहाय के महान रचनाकार होने की ओर इशारा करती है।

रघुवीर सहाय की कहानियों की संवेदना

रघुवीर सहाय मूलत: एक कवि हैं और इसी रूप में वह जाने भी जाते हैं। कहानियाँ लिखना शायद उनका शौक कभी नहीं रहा। लेकिन इन्होंने जितनी भी कहानियाँ लिखीं वह अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। श्री मनोहर श्याम जोशी जी ने इनकी कहानियों के लिखने का कारण बताते हुए कहा है-

''अगर आप रघुवीर की कहानियों की प्रकाशन-तिथियों पर ग़ौर करें तो आपको पता चलेगा कि उसने ज्यादातर कहानियाँ तब-तब लिखी हैं जब-जब उसे लिखकर पैसा कमाने की जरूरत पड़ी है।''[2]

आगे वह लिखते हैं-

तब पत्र-पत्रिकाएँ कहानी छापने पर ही पैसे देती थीं, कविताएँ छापने पर नहीं[3]

जोशी जी के इस वक्तव्य से रघुवीर की कहानियों के प्रति दिलचस्पी के विषय में अन्दाजा लगाया जा सकता है। लेकिन फिर भी रघुवीर का इतनी अच्छी कहानियाँ लिखना उनके महान साहित्यकार होने की ओर इशारा करता है।

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन 2000, पृ. 9 (भूमिका से)

2 रघुवीर सहाय, रचनाओं के बहाने एक स्मरण, मनोहर श्याम जोशी, वाणी प्रकाशन, 2003, पृ. 62

3 वही, पृ. 62

रघुवीर सहाय ने अपनी कहानियों में मानवीय-संबंधों के यथार्थ् को बड़े अच्छे ढंग से व्यक्त किया है। रघुवीर सहाय ऐसे व्यक्तित्व के व्यक्ति थे जिसमें सभी के लिए स्थान था। वह अजनबियों तक की बिना किसी स्वार्थ के सहायता करते थे। जोशी जी का यह वक्तव्य उल्लेखनीय है-

> ''मैं रघुवीर का यह आभार कभी नही भूल सकता कि केवल परिचित होते हुए भी उसने मेरा इस तरह स्वागत किया मानों मैं उसका मित्र ही नहीं, अनुज भी होऊँ।[1]

उस समय मनोहर श्याम जोशी जी नये-नये दिल्ली आए थे और किसी को जानते भी नहीं थे। रघुवीर जी से उनका कुछ परिचय अवश्य था। रघुवीर सहाय ने उन दिनों जोशी जी की कई प्रकार से सहायता की थी। इस बात का ज़िक्र जोशी जी अपनी पुस्तक ''रघुवीर सहाय : रचनाओं के बहाने एक स्मरण'' में करते हैं।

श्री विनय दुबे जी ने अपने एक लेख में रघुवीर की कविता के विषय में लिखा है-

> ''रघुवीर सहाय मनुष्य की करुणा के एक ऐसे कवि है जो उसकी भलाई और प्रगति के लिए अपनी तमाम सामाजिक एवं नैतिक जिम्मेवारियों के साथ सतत् चिंतित रहे हैं। उनकी यह काव्य-चिंता मानवीय रिश्तों की कोमलतम भाव-भूमियों की चिंता है।[2]

यही बात रघुवीर की कहानियों पर भी लागू होती है। इनकी कहानियों में मनुष्य के लिए करुणा का भाव विद्यमान है। लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि यह करुणा कहीं पर भी दया का रूप नहीं लेती है। दया पाने वाला मनुष्य

---

1 रघुवीर सहाय, रचनाओं के बहाने एक स्मरण, मनोहर श्याम जोशी, वाणी प्रकाशन, 2003, पृ. 12

2 रघुवीर सहाय, संपादक-असद जैदी, विष्णु नागर, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), 1993, पृ. 122

इससे स्वयं को हीन समझने लगता है। इसी कारण रघुवीर की कहानियाँ दया के विरूद्ध लिखी हुई हैं।

रघुवीर सहाय की कहानियाँ मानव-संबंधों की दृष्टि से विशिष्ट स्थान रखती हैं। इन कहानियों की मूल संवेदना मानव-संबंधों के अलगाव के पक्ष में न होकर उनके जुड़ने में हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि ये कहानियाँ मानवीय संबंधों को जोड़ती हैं, उन्हें मजबूत करती है।

रघुवीर सहाय की कहानियों में मनुष्य के साथ-साथ पशु-पक्षियों तक के लिए संवेदना भरी पड़ी है। यह संवेदना दया का रूप धारण नहीं करती है। श्री विजय मोहन सिंह जी ने अपने लेख 'दया के विरूद्ध' में रघुवीर के इसी नजरिए पर लिखा है-

> वे मनुष्य द्वारा मनुष्य पर ही की गई दया नहीं बल्कि मनुष्य द्वारा किसी भी प्रकार की 'दया' के विरोध की कहानियाँ हैं।[1]

इसके सन्दर्भ में हम रघुवीर की कई कहानियों को देख सकते हैं। इसके समर्थन में 'एक जीता-जागता व्यक्ति' कहानी को देखा जा सकता है। इस कहानी की इन लाइनों पर 'गौर' किया जाना आवश्यक हो जाता है-

> ''मैं समझ सकता हूँ कि खुद कोशिश करने का क्या अर्थ होता है और सहानुभूति एक जगह अनादर भी बन जा सकती है।''[2]

अतः रघुवीर सहाय 'दया' के विपक्ष में अपनी कहानियों को लिख रहे थे। इसे हम रघुवीर सहाय की खास विशेषता के रूप में इनकी कहानियों में देख सकते हैं। रघुवीर सहाय की कहानियाँ यथार्थ के धरातल पर लिखी हुई जान पड़ती हैं। यह यथार्थ मानवीय-संबंधों के जुड़ने का, उसके बनने का यथार्थ है। यह

---

1 रघुवीर सहाय, संपादक-असद जैदी, विष्णु नागर, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), 1993, पृ. 34

2 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन 2000, पृ. 61

यथार्थ एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से जोड़ता है। मानवीयता का यह रिश्ता सिर्फ व्यक्ति-व्यक्ति के बीच ही नहीं बनता है, बल्कि यह रिश्ता मनुष्य और पशु-पक्षियों के बीच भी कायम होता है।

'एक जीता-जागता व्यक्ति' इसी तरह की कहानी है। इसमें एक घरेलू चिड़िया सड़क पर पड़े कोलतार में फँस जाती है। वह चिड़िया उससे निकलने का प्रयास करती है, परन्तु सफल नहीं हो पा रही है। इस दृश्य को दो व्यक्ति यानी कथाकार और उसका मित्र देखते हैं। दोनों व्यक्तियों का चिड़िया को, और उसके संघर्ष को देखना उस चिड़िया और दोनों व्यक्तियों के बीच एक संबंध बनाता है। यह संबंध मानवीयता के कारण बनता है। कथाकार को पक्षी के प्रति संवेदना उत्पन्न होती है जिसके चलते वह उस पक्षी को छुड़ाने के विषय में सोचता है, लेकिन वह ऐसा कर नहीं पाता है। कथाकार चिड़िया के संघर्ष को अपनी करुणा से कहीं अधिक बड़ा समझता है, तभी कथाकार मात्र चिड़ियों को संघर्ष करते हुए देखता रहता है। और यह संघर्ष कोई साधारण संघर्ष नहीं है, बल्कि एक महत्त्वपूर्ण संघर्ष है, यह संघर्ष जिंदा रहने का संघर्ष है, खुद को बचाने का संघर्ष है। चिड़िया के संघर्ष को इस कहानी में दो रूपों में देखा जाना चाहिए। एक तो उसका जिंदा रहने के लिए मौत से संघर्ष और दूसरा चिड़िया के अन्दर अनायास उपजे डर से संघर्ष। यह डर चिड़िया का कोलतार में फंसे होने की वजह से ही नहीं था, बल्कि उसके अन्दर परिस्थितिगत वास्तविकता के कारण भी डर बना हुआ था, जिससे उसे जूझना पड़ रहा था। दरअसल चिड़िया के आस-पास कुछ कौए इकट्ठा हो गए थे और साथ ही कथाकार और उसका मित्र दोनों भी वहाँ थे। अतः चिड़िया का भयभीत होना स्वाभाविक था। जो भी हो, कथाकार का चिड़िया को देखकर रुक जाना और उसे छुड़ाने के विषय में सोचना एक मानवीय-संबंध का बनना है। यह अलग बात है कि चिड़िया अपने संघर्ष के बल पर बिना किसी की सहायता के छूट जाती है।

रघुवीर सहाय की एक ओर कहानी 'मेरे और नंगी औरत के बीच' इस संदर्भ में विशेष स्थान रखती है। इसमें रेलगाड़ी में बैठी स्त्री और व्यक्ति (कथाकार) जो उस स्त्री को कम्बल उढ़ाना चाहता है, के बीच एक विशेष प्रकार का रिश्ता बनता है। यहाँ इस रिश्ते को नाम देने में पाठक स्वयं को असमर्थ पाता है। इस कहानी में जो यथार्थ दिखाई देता है वह इस मानवीय-संबंध को और प्रगाढ़ बनाता है। इस कहानी में रघुवीर ने एक स्थान पर लिखा है-

> ''पता नहीं क्यों मूर्ख की भांति मैं आँखों से उसके उरोज खोजने लगा (तब तक मैं यही समझता था कि स्त्री का शरीर बिना उनके पूरा नहीं होता।)''[1]

रघुवीर ने इस कहानी में सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त किया है। लेकिन फिर भी इस प्रसंग में कही भी वासनात्मक गंध नहीं दिखाई देती। कथाकार ठंड में सिकुड़ती उस औरत को अपना कम्बल देने के लिए बेचैन हो उठता है और इसी उधेड़बुन में लगा रहता है कि वह उसे कम्बल उढ़ाए अथवा नहीं। इस कहानी में यह एक प्रकार के द्वन्द की स्थिति है। इसी द्वन्द के माध्यम से कहानी आगे बढ़ती है। यह द्वन्द रघुवीर सहाय का अपना द्वन्द है, किसी और का इससे कोई लेना-देना नहीं है। रघुवीर सहाय ने इस द्वन्द को अपनी कहानी के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया है-

> ''इसी का क्या प्रमाण है कि उसे सरदी लग रही है, या इतनी सरदी लग रही है कि वह तुमसे कम्बल लेना स्वीकार कर सकती है? क्या तुम्हारे और उसके कपड़ों में जो भीषण अन्तर है, उसी से तुम समझ रहे हो कि उसे सरदी लग रही है?''[2]

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन 2000, पृ. 61

2 वही पृ. 77

इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि समाज में कोई भी मुसीबत में हो अथवा किसी प्रकार की परेशानी में हो, तो व्यक्ति उसके प्रति दयालु हो उठता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति चाहेगा कि वह मुसीबत फँसे व्यक्ति की सहायता करे। चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अत: उसका ऐसा सोचना स्वभाविक भी है। यह मनुष्य की स्वभाविक प्रवृत्ति है। इसी से आदमी आदमी कहलाता है। रघुवीर सहाय की कहानियों में हम इस मनोभाव को आसानी से देख सकते हैं।

रघुवीर सहाय की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ को लेकर चलती हैं। यह सामाजिक यथार्थ इनकी कहानियों की संवेदना है, शक्ति है। यह रघुवीर सहाय की कहानियों की खास विशेषताओं में से एक है। यह पहले कहा जा चुका है कि यह सामाजिक-यथार्थ मानवीय संबंधों को जोड़ता है, मजबूत बनाता है। वर्तमान समय में जब सभी ओर स्वार्थ सिद्धि हो रही है, रघुवीर सहाय की कहानियाँ अपने आप में महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं और साथ ही प्रासंगिक भी।

उषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी' को देखें तो रघुवीर सहाय की कहानियों की विशेषता का अंदाजा स्वयं ही लग जाता है। 'वापसी' कहानी में मानवीय रिश्तों का जो कड़वा सच दिखाया गया है, वह पाठक को स्तब्ध कर देता है। इस कहानी में एक रेलवे कर्मचारी पूरी जिंदगी नौकरी करके मन में यह उमंग पाले घर जाता है, कि अब वह चैन और आराम से अपने परिवार के साथ रहेगा और जिंदगी का सुख भोगेगा। आज तक उसने पैसा कमाया है, अब वह अपने बीवी बच्चों के साथ घर पर सारी जिंदगी प्यार के साथ गुजारेगा। लेकिन घर वापस आकर उसकी सारी कल्पनाएँ धरी-की-धरी रह जाती हैं। उसके सारे सपने टूट जाते हैं।

अब यह बूढ़ा और रिटायर आदमी घरवालों को बोझ लगने लगता है। सभी घरवाले और यहां तक कि उसकी बीवी भी उससे अजीब-सा, अटपटा-सा व्यवहार

करने लगते हैं। अंततः उस रिटायर आदमी को यह अहसास होता है कि अब इन्हें उसकी कोई जरूरत नहीं रह गई है। जब तक वह नौकरी करता था, सब उससे लगाव रखते थे। जब वह छुट्टियों में घर आता था तो घर में उसका बड़ा मान होता था। लेकिन आज वह रिटायर होकर घर आया है, इसलिए आज ऐसा नहीं होता। समय बदल गया है, वह रिटायर हो गया है, अब चूँकि वह पैसे कमाने की मशीन नहीं रह गया है। अब किसी को उसकी जरूरत नहीं है। अन्ततः स्थिति यह पैदा हो जाती है कि रिटायर और बूढ़ा आदमी फिर से कहीं काम करने चल देता है। फिर से उसकी वापसी हो जाती है। इस कहानी की मूल संवेदना इसी वापसी में है। वह सोचता था कि वह वापस अपने घर जा रहा है, लेकिन वह वापस काम के लिए चल पड़ता है।

वस्तुतः इस कहानी का सामाजिक यथार्थ, मानवीय-संबंधों के टूटने का यथार्थ है। यहाँ रिश्तों में कड़वाहट पैदा हो रही है जबकि रघुवीर सहाय की कहानियों का सामाजिक यथार्थ मानवीय-संबंधों के बनने का यथार्थ है। रघुवीर की कहानियाँ इस दृष्टि से विशिष्ट हैं।

वास्तव में रघुवीर सहाय मानवीय-संबंधों को लेकर सतर्क दिखते हैं और साथ ही चिंतनशील भी। वह रिश्तों के बनने में विश्वास करते हैं, उनके टूटने में नहीं।

भीष्म साहनी की कहानी 'अमृतसर आ गया' हिन्दुस्तान-पाकिस्तान बँटवारे पर लिखी हुई एक मार्मिक कहानी है। इस कहानी में आदमी के वहशीपन को दिखाने की कोशिश की गई है। वह वहशी जो बिना किसी वजह के दूसरे व्यक्ति की जान ले लेता है। इस कहानी की मूल संवेदना उस वातावरण में छिपी दिखाई देती है, जिसमें आदमी इन्सानियता को भूल जाता है और दरिन्दगी पर उतर आता है। इस कहानी में व्यक्ति का व्यक्ति से कोई संबंध दिखाई ही नहीं देता। देता भी है तो घृणित सच्चाई के साथ, वह सच्चाई है ईर्ष्या, घृणा, नफरत आदि।

इधर रघुवीर सहाय की कहानियों में जो यथार्थ दिखता है, वह मानवता के रूप में सामने आता है। रघुवीर सहाय मानवता में और मानवीय-रिश्तों में विश्वास रखते थे। इनकी कहानियाँ इसी मानवता के आधार पर लिखी हुई हैं। 'रास्ता इधर से है' कहानी-संग्रह की भूमिका में रघुवीर सहाय ने लिखा है-

> ''राज्य और व्यक्ति के संबंध को अधिकाधिक समझना आधुनिक संवेदना की शर्त है। इस शर्त से कतराना मनुष्य की आज की अवस्था को मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर मानकर चलने के बराबर है; वैसा मान लें तो फिर कुछ रचने को रह ही नहीं जाता।''[1]

रघुवीर सहाय की कहानियाँ अपने आप में अनूठी हैं। जिन विषयों की तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता, रघुवीर उन विषयों को इतना जीवन्त रूप दे देते हैं कि वह श्रेष्ठ कहानी की सामग्री बन जाता है। 'सेब' कहानी को इस सन्दर्भ में देखा जा सकता है। देखने में यह विषय अत्यंत साधारण-सा लग सकता है, लेकिन रघुवीर सहाय ने इस कहानी में जीवन के प्रति जिस मोहभाव को दिखाया है वह असाधारण है। यह कहानी जीवन में संघर्ष की प्रेरणा देती है। इस कहानी में पाठक के लिए बहुत कुछ मिल जाता है।

यह कहानी सामाजिक असमानता की ओर भी पाठक जगत का ध्यान खींचती है। इस कहानी में एक बाप का अपनी बीमार बेटी के प्रति जो प्यार है, स्नेह है वह यथार्थ के धरातल पर है। वस्तुतः इस कहानी में एक बाप और उसकी बेटी के बीच जो मानवीय-संबंध (बाप-बेटी के रिश्ते की ओर इंगित है।) मिलता है, वह किसी की करुणा का मोहताज बिल्कुल नहीं है। उन्हें किसी की हमदर्दी की भी आवश्यकता नहीं है। इस कहानी की मूल संवेदना इसी संबंध पर आधारित है। कहानी की अन्तिम पंक्तियों को कहानीकार ने इस प्रकार पेश किया है-

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन 2000, पृ. 25-26

"बीमार लड़की धैर्य से अपने सेब को पकड़े रही। उसने खाने के लिए जिद नहीं की। चमकती हुई काली-सफेद चूड़ियों से उसकी कलाईयाँ खूब ढँकी हुई थीं। मुट्ठी में वह लाल चिकना छोटा-सा सेब था जो उसे बीमार होने के कारण नसीब हो गया था और इस वक्त उसके निढाल शरीर पर खूब खिल रहा था।[1]

इस सेब का लड़की को नसीब होना बड़ी बात है। बड़ी बात इसलिए क्योंकि एक निहायत ग़रीब आदमी सेब जैसी मंहगी वस्तु खरीद पाने में असमर्थ होता है। एक गरीब आदमी अपना पेट ही भर ले यही बड़ी बात होती है। इससे पता चलता है कि लड़की और उसका बाप अत्यंत ग़रीब थे। बीमार होने पर अपनी बच्ची को एक सेब दिलाना पाठक में उनके प्रति करुणा का भाव जगाता है। इस कहानी की मूल संवेदना बाप-बेटी के बीच रिश्ते के साथ-साथ बीमारी में बच्ची को सेब नसीब होने में भी दिखती है। यह कहानी सामाजिक असमानता को भी एक बारगी प्रकट कर देती है।

सामाजिक असमानताओं पर रघुवीर सहाय ने अनेक कहानियाँ लिखी हैं। आधीरात का तारा, गुब्बारे, कोठरी आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। 'आधी रात का तारा' सामाजिक असमानताओं पर लिखी हुई एक सशक्त कहानी है। इस कहानी में कथाकार का सर्वथा अभाव है। कहानी का आरंभ बेशक कुछ अजीब तरह से होता है, लेकिन अन्त उतना ही मार्मिक और सशक्त। कहानीकार ने इस कहानी में दो दृश्यों को दिखाने की कोशिश की है, बल्कि कहना चाहिए कि दो वर्गों को रघुवीर ने इस कहानी में दिखाया है। पहला वर्ग वह है जो हर तरफ से खुशहाल है। उसके पास सुविधाओं के अनेकों साधन हैं। दूसरी तरफ एक वर्ग ऐसा भी है जिसके पास दो वक्त की रोटी तक मयस्सर नहीं है। वह वर्ग हर तरफ से बेहाल

---

[1] रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन 2000, पृ. 33

है। इस कहानी की मूल संवेदना अमीरी और गरीबी के बीच का फासला है जो शायद नियति बन चुका है। इस कहानी की अन्तिम पंक्तियाँ बड़ी ही मार्मिक हैं-

> ''वह भूखा प्राणी अभागा चोर आज खाली हाथ घर लौटा था। इस रात कहीं भी अवसर नहीं लगा। बड़ी मनहूस रात थी वह। कोठरी में घुसकर उसने एक बार निरीह बच्चे की उन आँखों मे देखा जो कह रही थी- ''मैं कुछ नहीं जानता''- फिर निर्लिप्त होकर बैठी पत्नी की ओर बरबस दृष्टि को दूसरी ओर फेरकर वह बोला- ''जान पड़ता है अपनी किस्मत का तारा टूट गया है।''[1]

इस प्रकार की, एक प्रकार से अलग ढंग की कहानियाँ शायद ही किसी कहानीकार ने लिखी हों। रघुवीर सहाय ने अपनी रचनाओं में बारीक से बारीक चीज़ को बड़े ही सशक्त ढंग से स्थान दिया है। रघुवीर जी छोटी से छोटी उस बात अथवा घटना पर ध्यान देते हैं जिसकी ओर किसी का ध्यान तक नहीं जाता है। 'आधी रात का तारा' कहानी की कुछ लाइनें इस सन्दर्भ में देखी जा सकती हैं-

> ''यहाँ के टूटे-फूटे सींकचोंवाले रोशनदानों में से आता हुआ प्रकाश भी मानों आवश्यकता से अधिक है, इसलिए मकड़ियों ने उस पर जाला बुन डाला है।''[2]

यहाँ व्यंग्यात्मक ढंग से रघुवीर ने गरीबी और जहालत का चित्र खींचा है।

रघुवीर सहाय की कहानियों में यथार्थ-बोध किसी प्रकार के प्रतीकात्मक रूप में नहीं आता। वह पाठक के सामने अपनी समस्त संवेदनाओं के साथ प्रत्यक्ष रूप में उपस्थित होता है। यही कारण है कि इनकी कहानियों में मानव-संबंध बनता हुआ चलता है, टूटता हुआ नहीं। इनकी 'घरौंदा' कहानी में जरूर मानवीय

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन 2000, पृ. 33

2 वही, पृ. 32

रिश्ते टूटते हुए नजर आते हैं, लेकिन इस कहानी को मानवीय-रिश्तों के संबंध में अपवाद कहा जा सकता है। इनकी अन्य सभी कहानियाँ मानव-संबंध को बनाती हुई चलती हैं।

रघुवीर सहाय के रचना-संसार मे स्त्री-चेतना का विशेष स्थान है, वह चाहे कविता हो, कहानी हो अथवा अन्य कोई और रचना। रघुवीर सहाय अत्यंत संवेदनशील और भावुक व्यक्ति थे। इसी कारण इनकी कहानियाँ भावुकता, मार्मिकता, संवेदना आदि को अपने अन्दर समेटे हुए हैं जिसे पढ़कर पाठक भी इनके साथ बहने लगता है। दरअसल रघुवीर सहाय स्वयं मानते थे कि उनकी रचनाओं में भावुकता और भावना का बहुत गहरा स्थान है। इस बात को उन्होंने स्वयं ही स्वीकार किया है। रघुवीर सहाय ने विष्णु नागर, प्रयाग शुक्ल, मंगलेश डबराल और असद ज़ैदी से की गई बातचीत में इस बात को स्वीकारा है। रघुवीर जी कहतें हैं-

> ''मुझ लगता है कि मेरी बनावट में भावना और भावुकता का बहुत ही केन्द्रीय स्थान है। मेरी जो सारी सीढ़िया हैं अपने अन्दर के विकास की वे इन्हीं में से होते हुए गई हैं।''[1]

इसी कारण रघुवीर सहाय की कहानियों में हमें संवेदना और भावुकता की गंगा बहती हुई दिखाई देती है।

स्त्रियों की दशा को लेकर रघुवीर सहाय अत्यंत भावुक दिखाई देते हैं। रघुवीर ने स्त्रियों की दयनीय दशा को लेकर कविता और कहानी दोनों में चिंता प्रकट की है। इनके लेखों में भी स्त्री के प्रति चिंता का भाव मिलता है।

रघुवीर की एक कविता है, 'चढ़ती स्त्री।' यह एक छोटी सी कविता है, मात्र 4 लाइनों की। लेकिन इस कविता का मर्म बड़ी-बड़ी कविताओं से भी ज्यादा

---

[1] रघुवीर सहाय, संपादक-विष्णु नागर, असद जैदी, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), 1993, पृ. 176

प्रभाव डालता है। इस कविता को पढ़कर पाठक अभिभूत हो उठता है।

उदाहरणार्थ-

बच्च गोद में लिए
चलती बस में
चढ़ती स्त्री
और मुझमें कुछ दूर तक घिसटता जाता हुआ[1]

इस कविता की अंतिम पंक्ति मार्मिक है और संभवतः इस कविता की मूल संवेदना को स्पष्ट भी करती है। रघुवीर सहाय के अन्दर 'कुछ' दूर तक घिसटता हुआ जाता है। यह 'कुछ' क्या है? शायद रघुवीर सहाय की संवेदना की चरम अभिव्यक्ति। यह संवेदना इसलिए है क्योंकि स्त्री की गोद में एक बच्चा है और वह चलती बस में चढ़ती है। यह कविता पाठक को भी कहीं दूर तक 'टीस' पहुँचाती है और वह भी कवि के घिसटने के साथ सम्मिलित हो जाता है। इसके अलावा 'दयावती का कुनबा', 'किले में औरत', 'पढ़िए गीता' आदि कविताएँ भी स्त्रियों के प्रति संवेदना पैदा करती हैं।

रघुवीर सहाय की कहानियों में भी स्त्रियों के प्रति संवेदना प्रकट की गई है। रघुवीर सहाय ने स्त्रियों की दशा को लेकर अनेक कहानियाँ लिखी हैं। इन कहानियों में पाठक यथार्थ-बोध के साथ-साथ स्त्री के प्रति करुणासिक्त हो उठता है। यह स्वाभाविक भी है।

रघुवीर सहाय ने स्त्रियों की दशा को लेकर कई कहानियाँ लिखी हैं। एक कहानी है- 'किले में औरत' यह कहानी संवेदना की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है। रघुवीर ने इसमें एक ऐसी महिला को चित्रित किया है जो अपने वस्त्र तक उतारने के लिए विवश है। यह अत्यंत खेदजनक बात है कि आज भी स्त्री की स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ है। जिस प्रकार सामंती-युग में स्त्री को मनोरंजन का साधन समझा जाता था, आज भी स्थिति कुछ-कुछ ऐसी ही बनी हुई है।

---

[1] रघुवीर सहाय संचयिता, संपादक-कृष्ण कुमार, राजकमल प्रकाशन-2003, पृ. 66

रघुवीर सहाय ने इस कहानी के माध्यम से नारी की बेबसी और लाचारी को समाज के सम्मुख दिखाने की सफल कोशिश की है। कुछ लोग आज भी नारी को मात्र मनोरंजन का साधन मानते हैं।

इस कहानी में कहानीकार अपने काम के सिलसिले में एक होटल में आकर ठहरता है। यह स्थान (शहर) बड़ा भयानक है क्योंकि यहाँ अक्सर हत्याएं होती रहती हैं। कहानीकार के अनुसार यह उसकी मजबूरी है कि उसे इस शहर में कुछ दिन रहना होगा। अत: वह एक होटल में ठहरता है जो सुरक्षा की दृष्टि से कुछ ठीक है। कहानीकार कहता है-

> ''उस शहर में मुझे सिर्फ तीन दिन रहना था।''[1]

इस होटल में कहानीकार एक स्त्री को देखता है जो यहाँ नाचने का कार्य करती है। लेकिन उसे सिर्फ नाचना ही नहीं है बल्कि एक-एक कर अपने वस्त्रों को भी उतारना है, ताकि वहाँ मौजूद लोगों का दिल बहल सके।

वास्तव में यह एक विडम्बनात्मक स्थिति है कि जहाँ एक ओर तो हम नारी को पूजते हैं तो दूसरी ओर उसे नंगी होने पर भी मजबूर करते हैं। इस कहानी की मूल संवेदना भी यही है जिसे रघुवीर सहाय प्रकारांतर से दिखाना चाहते हैं। कहानीकार नहीं चाहता कि स्त्री अपने कपड़े उतारे-

> ''मेहरबानी करके कपड़े पहने रहो, मैं उससे कहना चाहता था, ऐसे ही गनीमत है। कपड़े पहने हुए तुम एक भरी-पूरी औरत मालूम होती हो। तुम्हारे साथ बातचीत भी की जा सकती है।[2]

लेकिन औरत अपने कपड़े उतारने के लिए मजबूर है-

> ''औरत ने साये के अन्दर से एक जाँघिया निकालकर दोनों हाथों में लेकर उसका आकार सबको दिखाया। उसे हवा में नचाकर उसने

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 120

2 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, सं.-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 123

फैंक दिया। गिटार बजानेवाला एक आदमी बड़ी अदा से उठाकर ले गया। औरत ने साया समेटकर एक जाँघ दिखाई।''[1]

और अन्त में स्त्री नंगी खड़ी दिखती है-

''अगले दस मिनट में औरत ने एक-एक करके सब कपड़े उतारे। अंतिम कपड़ा एक लंगोट उतारने के साथ लाल-पीली रोशनियाँ बुझ गई। धुँधले उजास में वह नंगी खड़ी थी।''[2]

निश्चित तौर पर औरत का कपड़े उतरना शौक नहीं है, उसकी मजबूरी है। लेकिन आखिर उसकी मजबूरी क्या है? आखिर क्यों उस औरत को अपना सब-कुछ दाँव पर लगाना पड़ता है? क्यों वह अपना स्वत्व लुटाने पर मजबूर है? इसका जवाब शायद उस पुरूष समाज से पूछना होगा जो उसे ऐसा करने पर मजबूर करता है। उस औरत को जिंदा रहने के लिए कुछ-न-कुछ तो करना ही पड़ेगा। और उसे इसके लिए स्वयं को बेआबरू करना पड़ता है।

गौर किया जाए तो इसका एक कारण शायद शासन-व्यवस्था भी है। यह हमारी व्यवस्था (सामाजिक व्यवस्था) की बड़ी चूक है कि एक स्त्री को अपना स्वत्व लुटाने पर मजबूर होना पड़ता है। यह विडम्बना ही है कि हमारा शासन औरत को इस क़दर नंगा कर देता है कि उसकी अपनी कोई पहचान ही नहीं दिखती, वह मात्र एक नंगा शरीर दिखता है।

इस कहानी की संवेदना हमारे अन्दर ऐसे समाज के खिलाफ आक्रोश भरती है। कोई भी सहृदय पाठक ऐसी स्थिति पर बौखला सकता है। उसके मन में ऐसी सड़ी-गली व्यवस्था के प्रति घृणा और आक्रोश का आना स्वाभाविक है।

इसी सन्दर्भ में रघुवीर की एक ओर सशक्त कहानी हमारे सामने आती है- 'मेरे और नंगी औरत के बीच'। यह औरत भी लगभग नंगी है और कड़ाके की

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, सं.-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 123

2 वही, पृ. 123

ठण्ड में रेलगाड़ी में बैठी हुई है। ठंड का मौसम और चलती हुई ट्रेन, ऐसे में थोड़ी सी हवा भी ठिठुरा देती है।

कहानीकार के मन में उस स्त्री के प्रति करुणा का भाव जागता है और वह चाहता है कि उस औरत को सर्दी से बचाने के लिए अपना कम्बल दे दे। लेकिन उसे इस बात का भय भी है कि रेलगाड़ी में बैठे अन्य मुसाफिर न जाने क्या सोचने लग जाएँ। वह असमंजस में पड़ जाता है कि क्या करे।

यह कहानी कहानीकार के स्वयं से ही वार्तालाप के बीच आगे बढ़ती है। अन्त में वह स्त्री को कम्बल उढ़ाने में सफलता पा जाता है। कम्बल एक प्रकार से करुणा का प्रतीक है। जब उसका (कहानीकार) स्टेशन आता है तो वह उस स्त्री पर से कम्बल उतार लेता है, यानी अपनी करुणा वापस ले लेता है। यहाँ कहानी पाठक को एक तीव्र झटका देती है।

इस कहानी में मात्र एक ही मुख्य घटना है- कम्बल उढ़ाना। लेकिन कहानीकार ने जिस ढंग से कहानी को लिखा है, वह अद्‌भुत और सराहनीय है। कहानीकार में इस कहानी के अन्तर्गत एक कश्मकश चलती रहती है अंततः -

> ''मैंने कम्बल को उठाया। वह फूल जैसा हल्का था। एक बार आँख भरकर मैंने देखा, वह मानव रूपाकार अपनी समस्त सुन्दरता के साथ जड़ हुआ अपने आकार में अर्थमय, पर भाषा के लिए अर्थहीन मेरे सामने था; जैसे ही वह अपने चारों ओर के आकाश से फूटकर मेरी ओर उमँगा, मैंने उस औरत पर कम्बल डाल दिया।''[1]

यह कहानी निश्चित तौर पर स्त्री के प्रति करुणा का भाव पाठक के मन में जागृत करती है। कहानीकार का स्त्री को कम्बल उढ़ाना अपनी करुणा देना है जिसे वह बाद में वापस ले लेता है। कम्बल को कहानीकार की संवेदना के तौर पर देखा जा सकता है।

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, सं.-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 79

'रास्ता इधर से है' कहानी संग्रह में औरत के संघर्ष और उसके वजूद को बड़े सशक्त ढंग से पेश करती एक कहानी है- 'कोठरी'।

यह कोठरी औरत के लिए वह मज़बूत किला है जिसमें वह पूरी तरह से सुरक्षित है और उसी के सहारे वह अपने हक़ के लिए लड़ भी रही है। रघुवीर सहाय ने इस कहानी को जिस प्रकार से संरचना के साँचे में ढाला है, वह रघुवीर जैसे सशक्त रचनाकार के ही वश की बात थी।

इस कहानी में एक ऐसी स्त्री के प्रति संवेदना व्यक्त की गई है जिसकी जिंदगी एक कोठरी के सहारे ही कट रही है। उसका जीवन एक छोटी-सी कोठरी में ही सिमट कर रह गया है। संभवत: वह बाहर कम ही निकलती है। कहानीकार के अनुसार उसने उसे कभी ध्यान से देखा तक नहीं है। वह उस छोटी-सी कोठरी में अपने ससुर के साथ रहती है। शायद उसका पति मर चुका है अथवा मार दिया गया है, लेकिन वह औरत अपने पूरे स्वाभिमान के साथ कोठरी में अडिग है, और एक प्रकार से संघर्ष कर रही है-

> ''वह तो लंबी और जायज़ लड़ाई लड़ रही थी- कोठरी और कड़ाहियों और कूड़ों की संपत्ति में अपने कानूनी हक़ की लड़ाई- जो वह इसी कोठरी में कैद होकर लड़ सकती थी और जीतने की उम्मीद भी तभी तक रख सकती थी जब तक वह कोठरी में सोती और बर्तनों को माँजती रहे।[1]

निश्चित रूप से यहाँ एक आशावाद की छोटी सी धारा फूटती दिखाई दे रही है। रघुवीर की कहानियों में यह आशावाद एक प्रकार से प्राणतत्व बनकर उपस्थित होता है। यही आशावाद शायद इन कहानियों की ताकत भी है।

---

[1] रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, सं.-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 101

स्त्रियों के प्रति करुणा रघुवीर सहाय की कविताओं में भी है और कहानियों में भी। लेकिन रघुवीर इस बात का ख़्याल अच्छी प्रकार से रखते हैं कि कहीं यह करुणा किसी दूसरे व्यक्ति को अपमानित तो नहीं कर रही है उसको कमजोर तो नहीं कर रही है। रघुवीर सहाय की कहानियों में इस प्रकार की सस्ती करुणा के प्रति सचेतता मिलती है।

बाल-मन का सूक्ष्म चित्रण

रघुवीर सहाय एक ऐसे रचनाकार थे जिनकी आंतरिक दृष्टि बालपन के सूक्ष्म मन को पकड़ने में समर्थ थी। यही कारण है कि इनकी कहानियों में हमें बालमन के सूक्ष्म चित्र भी देखने को मिलते हैं।

'लड़के' कहानी को इस सन्दर्भ में देखा जा सकता है। यह कहानी 'सीढ़ियों पर धूप में' संग्रह में शामिल है। इसमें दो भाईयों को एक पतंग के लिए झगड़ते हुए चित्रित किया गया है जिसे वह अन्त में फाड़ देते हैं। दो भाईयों का लड़ना लड़कपन के दृश्यों को पाठक के समक्ष उजागर कर देता है। यह लड़ना बहुत ही जीवन्त लगता है। पाठक एक बारगी तो स्वयं बचपन के अपने दिनों में खो जाता है।

'लड़के' दो ऐसे भाइयों की लड़ाई की कहानी है जो मात्र एक कागज़ की पतंग पर अपना-अपना अधिकार जमाने हेतु आपस में झगड़ा कर रहे हैं। एक ने इकन्नी दी है और दूसरे ने अधन्ना। अब उसे उड़ाने का पहला अधिकार है किसका! इस पर दोनों में ठनी हुई है। कहानी में इस चित्र को बड़े ही सुन्दर ओर सजीव ढंग से पेश किया गया है। इस लड़ाई का कुछ अंश देखिए-

> ''बड़ा छोटे को घिर्राता हुआ बड़ी दूर तक घास में ले गया। वहाँ जाकर छोटे ने बड़े जोर से चीख मारी- ''छोड़ दे, आः।'' बड़े ने घबराकर उसे छोड़ दिया। दूसरे क्षण कूदकर छोटे ने बड़े के दो घूँसे जमाए ओर दोनों फिर गुत्थम गुत्था हो गए।''[1]

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, सं.-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 51

यह बाल-लड़ाई यथार्थ के धरातल पर लिखी हुई जान पड़ती है। लड़ाई का एक और दृश्य देखिए-

''मार डालूँगा साले''... ''तेरी ऐसी कम तैसी''...

''हूँ, और ले, और ले''... फिर घमाघम दो-तीन घूँसे।[1]

वास्तव में रघुवीर बालमन के सुन्दर चितेरे थे। बालमन की ऐसी भावनाओं को इस कहानी की मूल संवेदना के रूप में देखा जा सकता है। इस कहानी की तुलना हम प्रेमचन्द की कहानी 'ईदगाह' से कर सकते हैं। 'ईदगाह' में भी बालमन के बड़े सुन्दर चित्र प्रेमचन्द जी ने खींचे हैं। इस कहानी में प्रेमचन्द जी ने बालमन का जो चित्रण किया है, वह तारीफ़ के योग्य है। एक उदाहरण देखिए-

> ''उसे ख़याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है; अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होगी? फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज़ हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा। व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं।[2]

अत: हामिद खिलौने न लेकर चिमटा खरीद लेता है। इस कहानी की मूल संवेदना भी यही बालमन है जिसे खिलौनों से ज्यादा अपनी दादी के हाथ जलने की चिंता है।

'गुब्बारे' कहानी में गुब्बारे बेचने वाला एक छोटा-सा लड़का रामू है जो ठंडी सड़क पर नंगे पैर गुब्बारे बेच रहा है। इस कहानी में हमें बेबस बचपन की मासूम तस्वीर दिखती है। हर छोटे बच्चे की भांति रामू की भी कुछ इच्छाएं हैं, कामनाएं हैं। उसका दिल भी गुब्बारे से खेलने का करता है। उसकी भी इच्छा है

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, सं.-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 51

2 कहानी संचयन (मूलटेक्स्ट), संपादक-डॉ. मुकुन्द द्विवेदी, के.एल. पचौरी प्रकाशन-2002, पृ. 17

कि उसके पास भी उसका सिर्फ उसका अपना निजी गुब्बारा हो जिससे वह जीभर खेल सके। लेकिन परिस्थितिवश वह अपनी इच्छा पूरी नहीं कर पाता। अगर उसे अपनी भूख मिटानी है तो उसे गुब्बारों से खेलने की बजाय उन्हें बेचना ही पड़ेगा। इस कहानी में कहानीकार ने रामू का परिचय भी कुछ इसी रूप में दिया है-

> ''इस छोटे बालक का नाम था रामू। सादा और साधारण, अभी वह बच्चा था, अथवा यदि वह सोच सकता तो उसे ज्ञान होता कि उसका यह नामकरण करने के पीछे एक असहाय और लाचार दर्द छिपा था। ठीक वैसा ही जिसके कारण हमें भगवान को नाम लेकर पुकारने की आवश्यकता पड़ती है।''[1]

बच्चे के नामकरण के पीछे ही कहानीकार ने एक लाचारी और दर्द को दिखाया है। बच्चे के नाम से ही पाठक को बच्चे के प्रति संवेदना पैदा होती है।

रघुवीर सहाय की कहानियाँ संवेदना की दृष्टि से उत्कृष्ट कहानियाँ हैं। कई कहानियाँ तो जैसे पाठक को मंत्रमुग्ध कर देती हैं।

संवेदना की दृष्टि से रघुवीर की एक बड़ी ही सशक्त कहानी है- 'विजेता'। यह कहानी आज भी उतना ही प्रासंगिक लगती है। इस कहानी में कहानी मात्र इतनी ही है कि दम्पत्ति अभी कोई सन्तान नहीं चाहती। स्त्री हालांकि इस निर्णय को लेकर कुछ असमंजस में है क्योंकि वह माँ है। इस एवज़ में दवाएँ इस्तेमाल की जाती हैं, ताकि गर्भ में पल रहा बच्चा नष्ट हो जाए। लेकिन इन सबके बावजूद बच्चा जन्म लेता है ओर पूर्णत: स्वस्थ भी है। वह जिंदगी की जंग जीतकर इस दुनियाँ में आया है, अत: वह 'विजेता' है-

> ''लाल मुट्ठियाँ बन्द किए हुए और उसकी स्त्री का स्तन मुँह में लिए वह अनायास अपना अधिकार भोग रहा था। न, उस पर कहीं कोई निशान न था, न कोई खरोंच या दाग़ कुछ नहीं।[2]

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, संपादक-सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 34

2 वही, पृ. 82

अध्याय-4

रघुवीर सहाय की कहानियों का शिल्प

शिल्प की अवधारणा

किसी भी साहित्यिक रचना, जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, रेखाचित्र, संस्मरण आदि के लिए शिल्प की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। बिना शिल्प के रचना का सौंदर्य, उसका आकर्षण फीका ही होता है। शिल्प रचना में एक प्रकार से आकर्षण का कार्य करता है। कविता के लिए तो शिल्प की महत्ता:अधिक बढ़ जाती है।

शिल्प का संबंध सिर्फ साहित्यिक लेखन से ही नहीं होता, बल्कि भवन निर्माण, मूर्तिकला आदि से भी शिल्प का गहरा संबंध होता है। दूसरे अर्थों में कहा जाए तो कोई भी भवन, इमारत, मूर्ति आदि बिना शिल्प के अधूरे ही होते हैं। वास्तव में शिल्पकार शिल्पकला के जरिए अपनी रचना को सौन्दर्य प्रदान करता है। जितना अच्छा शिल्पी होगा, रचना उतनी ही सुन्दर और आकर्षक होगी।

पुराने समय में पत्थरों पर नक्काशी का कार्य किया जाता था। राजा, बादशाह आदि कला प्रेमी हुआ करते थे। जहांगीर, शाहजहाँ आदि तो कला को अत्यधिक पसन्द करते थे। इनके समय में भव्य इमारतें बनीं, जिनका सौन्दर्य आज भी लोगों के सिर चढ़कर बोलता है। ताजमहल इसका अनुपम उदाहरण है। ताजमहल में जिस प्रकार की नक्काशी है, बेल-बूटे हैं, वह सब शिल्पकला के सुन्दर उदाहरण हैं। इस रूप में ताजमहल शिल्प कला का बेजोड़ नमूना है।

साहित्य की विविध विधाएँ भी इसी प्रकार शिल्पकला के प्रयोग से सजीव हो उठती हैं, सौन्दर्यमय हो उठती हैं। अत: शिल्प की अवधारणा किसी भी रचना के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होती है।

रघवीर सहाय की कहानियों में शिल्प

रघुवीर सहाय की कहानियाँ हिन्दी साहित्य-जगत में लगभग उपेक्षित रही हैं। इसका एक बड़ा कारण शायद इन कहानियों की वह शैली है जिसे रघुवीर सहाय लिखते समय अपनाते हैं। रघुवीर सहाय जिस अंदाज़ में, जिस शैली में कहानियाँ लिखते हैं उससे वह कहानियाँ वास्तव में कहानी कम एक लेख अथवा निबंध अधिक लगती हैं। 'स्पष्टवादिता' तथा 'कहानी की कला' इसी प्रकार की कहानियाँ हैं। 'स्पष्टवादिता' कहानी तो एक प्रकार से व्यंग्यात्मक निबन्धनुमा रचना अधिक लगती है।

रघुवीर सहाय की कहानियाँ कहानी के तत्त्वों को दरकिनार करती हुई चलती हैं। वास्तव में रघुवीर सहाय कहानी में कहानी के तत्त्वों पर ज़्यादा ध्यान ही नहीं देते। रघुवीर सहाय कहानियों को एक उद्देश्य के तहत लिखते हैं, इस उद्देश्य को वह भूलते नहीं हैं। अपनी कहानियों के माध्यम से रघुवीर सहाय एक सम्पूर्ण मनुष्य बनाने की कोशिश करते हैं, वह पाठकों में परिवर्तन की इच्छा और सामर्थ्य पैदा करना चाहते हैं।

कथानक की दृष्टि से रघुवीर सहाय की कहानियों को देखना वस्तुत: ज्यादा संगत नहीं लगता। इसका कारण यह है कि इन कहानियों में कथानक का निर्वाह नहीं किया गया है। संभवत: रघुवीर सहाय कथानक को कहानी के लिए अनिवार्य नहीं मानते हैं। वह कथानक से अधिक ध्यान उस घटनाक्रम पर देते हैं जिसे वह पेश कर रहे होते हैं। इन घटनाओं का वास्तविक अर्थ पाठकों तक पहुँचे, यही रघुवीर जी का अभीष्ठ था। श्री सुरेश शर्मा जी इस विषय में कहते हैं-

> ''रघुवीर सहाय कहानी के लिए सुनिश्चित कथानक की अनिवार्यता नहीं मानते। कथानक आदि से अलग जो तत्व कहानी को कहानी

बनाते हैं उन पर वे अधिक ध्यान देते हैं। कहानी में उनका उद्देश्य कथानक कभी नहीं रहता।[1]

वस्तुत: सच्चाई यही है कि रघुवीर सहाय अपनी कहानियों में कथानक पर ध्यान नहीं देते।

इनके प्रमाण स्वरूप इनकी कहानी 'सपने और सवेरा' को देखा जा सकता है। इसमें मात्र कुछ घटनाएँ हैं जो सपनों के जरिए आगे बढ़ती हैं। 'आधी रात का तारा' कहानी भी ऐसी ही कहानी है। यह कहानी रात के अंधकार से आरंभ होती है और उसी में इसका अन्त भी हो जाता है। इसमें मात्र एक घटना दिखती है- चोर का खाली हाथ घर वापस आना! यानी चोर के हाथ इस रात कुछ नहीं लगा है, जिसकी वजह से वह कहता है-

'जान पड़ता है, अपनी किस्मत का तारा टूट गया है।'[2]

रघुवीर सहाय की कहानियों की शैली अलग ढंग की दिखती है। इन कहानियों की शुरूआत से लगता ही नहीं है कि कहानी अभी आरंभ हुई है, बल्कि ऐसा लगता है कि कहानी बहुत समय पहले से चल रही है। 'कुत्ते की प्रतीक्षा' मुक्ति का एक क्षण, फुटबॉल आदि इसी तरह की कहानियाँ' हैं।

'कुत्ते की प्रतीक्षा' कहानी की आरंभिक पंक्तियाँ इस प्रकार से हैं-

''दीर्घकाल तक लोप रहने के उपरांत वह मोहल्ले में लौटा। उसके बदनभर में भयंकर खुजली हो गई थी और एक अत्यंत दुर्गन्ध उसके साथ-साथ ऐसी फैली हुई थी जैसे मकड़ी के इर्द-गिर्द उसका जाला।[3]

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 10

2 वही, पृ. 33

3 वही पृ. 38

इस कहानी की शुरूआत से ऐसा लगता है जैसे यह कहानी पहले से चल रही थी। 'वह' से तात्पर्य उस 'कुत्ते' से है जो संभवत कहीं चला गया था और बहुत समय के बाद वह कहानीकार के मोहल्ले में वापस आया था। उस समय उसके शरीर पर खुजली हो गई थी। 'मुक्ति का एक क्षण' कविता का आरंभ भी इसी तरह की शैली से होता है। इस कहानी का आरंभिक अंश देखिए-

वह कबूतर आज फिर आ गया।[1]

पाठक इस प्रकार की शुरूआत से जैसे सोच में पड़ जाता है कि आखिर इस कबूतर के आने में क्या खास बात है। पाठक इस कबूतर के विषय में और जानने के लिए कहानी को पूरा पढ़ने पर एक प्रकार से विवश हो जाता है। रघुवीर सहाय की यह विशेष शैली इनकी कहानियों को विशेष बनाती है।

रघुवीर सहाय की अन्य कई कहानियाँ भी इसी ढंग से लिखी गई हैं। 'एक छोटी-सी यात्रा' कहानी की शुरूआत भी इसी तरह से होती है। इसमें कहानीकार बस में चढ़ने के प्रसंग से इस कहानी की शुरूआत करता है। हिन्दी के एक संपादक से भेंट, कीर्तन, प्रेमिका आदि कहानियाँ भी इसी ढंग की कहानियाँ है।

रघुवीर सहाय की कहानियों की एक और शिल्पगत विशेषता को लक्ष्य किया जाना आवश्यक है, वह है स्वयं कहानीकार का प्रमुख भूमिका में दिखाई देना। यानी कहानीकार स्वयं इन कहानियों में प्रमुख भूमिका के रूप में खड़ा दिखाई देता है। इन कहानियों में कहानीकार एक गाइड के रूप में अथवा कथावाचक के रूप में पाठकों को परिस्थितियों से परिचित कराता चलता है। 'मैं' स्वयं कहानीकार (रघुवीर सहाय) का मैं है।

'मैं' के रूप में स्वयं रघुवीर सहाय कहानी की घटनाओं का, उसकी परिस्थितियों का वर्णन करते हैं। कहानी की शुरूआत अक्सर इस 'मैं' अथवा कभी-कभी 'हम' से शुरू होती है।

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 67

'सीमा के पार का आदमी' कहानी इसी तरह की कहानी है जिसमें रघुवीर सहाय एक प्रकार से आँखों देखी घटनाओं का वर्णन करते चलते हैं। इस कहानी में रघुवीर सहाय भारत-पाकिस्तान युद्ध के समाप्त होने के बाद के दृश्यों को, घटनाओं को कहानी के रूप में पेश करते हैं। इस कहानी में 'मैं' को सहज ही लक्ष्य किया जा सकता है-

> ''जिस अखबार के लिए मैं काम किया करता था उसमें हर युद्ध के समय छापा जाता था कि भारतीय सिपाही अदम्य साहस से लड़े।''[1]

यहाँ 'मैं' शब्द स्वयं रघुवीर सहाय का ही मैं है। इस कहानी में व्यंग्यात्मक स्वर को आरंभ से ही महसूस किया जा सकता है। कहने का अभिप्राय यह है कि इस कहानी में व्यग्य का स्वर शुरू से ही मौजूद है।

इस कहानी का शिल्प की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। इस कहानी में वातावरण स्वयं एक चरित्र के रूप में देखा जा सकता है। इस कहानी का परिवेश जैसे सारी स्थिति स्वयं ही बयाँ करता हुआ चलता है। एक उद्धरण को इसके प्रमाण स्वरूप देखा जा सकता है-

> ''गाँव में घुसते ही एक लंबी गली में क़दम पड़ा। इसमें यहाँ से लेकर वहाँ तक बीचोबीच एक साफ़-सुथरा रास्ता बना हुआ था जैसा मंत्रियों के कहीं जाने पर बनाया जाता है। यह रास्ता विचित्र भी था और किसी क़दर भयानक भी, क्योंकि वह जली हुई धन्नियों, चौखटों और 'झुलसी' हुई ईंटों का मलबा दोनों तरफ सरका कर बनाया गया था। हमें बताया गया कि मलबे के नीचे अब कोई लाश नहीं है। यह सच था, पर एक दिन पहले पानी पड़ चुका था और झुलसे हुए अनाज और काठ से उठकर एक गंध-भरा सन्नाटा

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 125

हवा में छा गया था। इसमें लाशों की जो गंध कल तक रही होगी वह आज भी कहीं अटकी लटक रही थी।[1]

इस कहानी को पढ़ते हुए पाठक भी जैसे कथावाचक के साथ ही मुआयने पर निकल पड़ता है जहाँ वह झुलसी हुई ईंटों के बीच से होकर गुजरता है। यहाँ वातावरण स्वयं एक चरित्र के रूप में खड़ा हुआ दिखाई देता है जो चीख-चीखकर युद्ध के कारण हुई तबाही की ओर ध्यान आकर्षित करता है। यह कहानी एक प्रकार से राष्ट्रीयता और सीमाओं की रक्षा जैसे उद्घोषों का भी व्यंग्य के माध्यम से मज़ाक उड़ाती हुई दिखाई देती है।

'मेरे और नंगी औरत के बीच' कहानी में भी कथावाचक मुख्य भूमिका के रूप में दिखाई देता है। इस कहानी में अन्य चरित्र तो दिखाई ही नहीं पड़ते हैं। इस कहानी की शुरूआत में कथावाचक कहता है-

> ''औरों की ही तरह मैं भी आमतौर से किसी असाधारण व्यक्ति को देखकर प्रभावित हो जाता हूँ, पर कभी भी वह प्रभाव मुझे अनुमति नहीं देता कि उस व्यक्ति को एक चरित्र बनाकर प्रस्तुत कर सकूँ।''[2]

रघुवीर सहाय की कहानियाँ इस प्रकार से अन्य कहानीकारों की कहानियों से एकदम अलग नज़र आती है। इसका कारण है इन कहानियों की शिल्पगत विशेषता। इन कहानियों को पढ़कर सहज ही कहा जा सकता है कि इन कहानियों में कथावाचक स्वयं ही मुख्य भूमिका अदा करता है, जिसका साथ देता है- वातावरण। वातावरण कहीं-कहीं चरित्रगत विशेषता धारण कर लेता है और पाठक के सम्मुख खड़ा हो जाता है। 'कूड़े के देवता' कहानी से यह उद्धरण प्रमाण स्वरूप दिया जा सकता है-

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 126

2 वही, पृ. 75

"अगले दिन उसी ढेर पर टीन के दो पिचके हुए डब्बे और एक चिथड़ा, एक फटी चप्पल भी दिखाई दी। तीसरे दिन तक ये छिलके पैरों से कुचल गए और मिट्टी में मिल गए। केले के छिलके पर कोई रपटा नहीं था मगर दस-बारह क़दम तक वे बिखर गए थे। अगले दस दिन में कूड़े के ढेर ने बहुत शक्ल बदली। उसका एक व्यक्तित्व बन गया।"[1]

स्पष्ट है कि इन कहानियों में वातावरण स्वयं भी एक चरित्र के रूप में देखा जा सकता है।

इन कहानियों में इनके अलावा बच्चे, पक्षी आदि भी चरित्रगत विशेषता के रूप में देखे जा सकते हैं। एक मुख्य बात जो ग़ौर करने लायक है, वह यह है कि इन कहानियों के लगभग सभी पात्र गरीबी की हालत में दिखाई देखे हैं। 'सेब' कहानी में लड़की और उसका पिता गरीबी और 'लाचारी' में जी रहे हैं। 'आधी रात का तारा' कहानी में 'चोर' की स्थिति तो और भी दयनीय दिखाई देती है। 'गुब्बारे' कहानी में रामू की आर्थिक स्थिति भी कुछ इसी प्रकार की दिखती है।

रघुवीर सहाय की दृष्टि की एक खास विशेषता रही। यह थी- व्यंग्यात्मकता अथवा व्यग्य-दृष्टि। इन्होंने चाहे कविता लिखी अथवा कहानी या फिर कोई और रचना, सभी में इनकी व्यंग्य-दृष्टि मिलती है। इनकी कई कहानियाँ व्यंग्य पर ही आधारित है।

'स्पष्टवादिता' कहानी एक व्यंग्यात्मक कहानी है। इस कहानी के माध्यम से रघुवीर सहाय जी ने लोगों के नकाब के पीछे-छिपे चेहरों को दिखाने की कोशिश की जिसके लिए व्यंग्य का सहारा इन्होंने लिया है। 'स्पष्टवादिता' कहानी समाज को आईना दिखाने का काम करती है। दुकानदार और ग्राहक के बीच हुए वार्तालाप से दुकानदारों की धोखाधड़ी और चालाकी को रघुवीर सहाय ने इंगित किया है।

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 151

रघुवीर इस कहानी के माध्यम से कहना चाहते हैं कि यदि सब स्पष्टवादी हो जाएँ तो इसका परिणाम भयंकर भी हो सकता है। एक दुकान का उदाहरण देते हुए वह कहते हैं कि एक बार वह किसी दुकान पर गए, जहाँ स्पष्टवादी दुकानदार ने उनका स्वागत किया और कहा कि इस दुकान का जो भी कूड़ा निकलता है वह सब आप जैसे लोगों के मत्थे ही तो मढ़ दिया जाता है। दरअसल वह दुकानदार उस समय अपनी दुकान की सफाई कर रहा था। जब कथावाचक (रघुवीर सहाय) और उनका एक मित्र इस दुकान के अन्दर जाते हैं तो वहाँ कुछ ऐसे विज्ञापन देखते हैं जो दुकान के सामान के विषय में स्पष्टता जाहिर करते हैं।

जैसे-

> ''सब साफ़, विशुद्ध चरबी से निर्मित सर्वोत्कृष्ट साबुन। मैल भी काटता है, कपड़ा भी।''[1]

तथा-

> ''महक मनोहर महुआ हेअर आयल, लंबे केशों का काल। रेशमी बालों को मानिन्द जूने के बनाता है।''[2]

इस प्रकार के विज्ञापनों को दिखाने के पीछे रघुवीर सहाय की मंशा साफ जाहिर है। वह ऐसे मिलावट करने वाले दुकानदारों की हकीकत को समाज के सामने लाना चाहते हैं। इसके लिए रघुवीर जी ने व्यंग्य का सहारा लिया है।

स्पष्टवादिता को लेकर रघुवीर सहाय के मन में असमंजस की स्थिति भी दिखाई देती है। वह कहते हैं-

> ''यह बताना दरअसल मुश्किल है कि स्पष्टवादिता एक शाप है या एक वरदान है। यह बताना स्पष्टवादी होने से भी ज्यादा मुश्किल है।''[3]

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 57

2 वही पृ. 57

3 वही, पृ. 56

इस सम्पूर्ण कहानी में रघुवीर ने व्यंग्य का बड़ा ही सुन्दर प्रयोग किया है। दुकानदार से हीटर खरीदने वाला प्रसंग व्यंग्य की दृष्टि से बहुत ही सफल है और साथ ही दुकानदार की चालाकी को भी बखूबी उजागर कर देता है।

वस्तुतः इस प्रसंग में रघुवीर सहाय ने यह बताने की कोशिश की है कि एक दुकानदार कैसे ग्राहकों को मूर्ख बनाता है और असली के नाम पर नकली माल बेचता है। ग्राहकों का दुकानदार से वस्तु (हीटर) का दाम बढ़ाने की जिद करना व्यंग्यात्मक दृष्टि से सफल है।

'कूड़े के देवता' कहानी भी व्यंग्य की दृष्टि से सफल कहानी है। इसमें रघुवीर सहाय खाली पड़ी जगहों पर किए जाने वाले अवैध कब्जों पर फ़ब्तियाँ कसते हैं। इस सन्दर्भ में कहीं भी छोटा-मोटा मंदिर बन जाने वाला प्रसंग व्यंग्य की दृष्टि से सफल बन जाता है-

> ''पहले एक लाल सिन्दूर से पुती दीवार होती है, फिर चहारदीवारी उठ जाती है, छह महीने में चबूतरा बन जाता है और पुजारी जी की कोठरी एक साल में। फिर यह राजनीति के ऊपर निर्भर है कि वहाँ कितनी बड़ी और कैसी समस्या जमीन को, सड़क को या पुजारी को लेकर खड़ी हो और कौन से नेता उसमें दिलचस्पी लें।''[1]

खाली पड़ी जगह में अवैध कब्जा और फिर उस पर राजनीतिक दाँव-पेंच, कहानीकार ने बड़े ही सहज़ लहजे में और बड़ी चतुराई के साथ इस बात को व्यंग्यात्मक ढंग से शब्दबद्ध किया है।

'रास्ता इधर से है' कहानी भी व्यंग्य की दृष्टि से एक अच्छी कहानी है। इसमें पेशाबघर के इस्तेमाल को लेकर रघुवीर सहाय ने ऊँच-नीच के भेदभाव को रेखांकित किया है। इस कहानी के माध्यम से रघुवीर सहाय एक विचित्र-सी

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन-2000, पृ. 152

व्यंग्यात्मक स्थिति की ओर इशारा कर रहे हैं जहाँ पेशाबघर जैसी जगह भी अफसरों के लिए अलग है तथा और लोगों (साधारण आदमी) के लिए अलग।

इन्टरव्यू क दौरान आए हुए उम्मीदवार बाहर जाते समय ग़लती से पेशाबघर का दरवाज़ा ही खोलते हैं, जिसपर ऑफिसर लोग चिल्लाकर कहते हैं- रास्ता इधर से है। यह कहानी व्यंग्यात्मक तरीके से समाज में फैली असमानता पर अपना आक्रोश व्यक्त करती है। यह आक्रोश वास्तव में स्वयं रघुवीर सहाय का आक्रोश है। इस कहानी के विषय में अलका सरावगी जी के विचार अवलोकनीय हैं-

> ''पेशाबघर के इस्तेमाल में भी किस प्रकार ऊँचे और नीचे का भेद काम कर रहा है, इसे बताकर वे एक विचित्र व्यंग्यात्मक स्थिति के जरिए गैर बराबरी पर टिकी इस संपूर्ण व्यवस्था की परतें उघाड़ते हैं।[1]

इसके अलावा 'मूँछ' जैसी कहानियों में भी व्यंग्यात्मकता देखी जा सकती है।

भाषा

'रास्ता इधर से है' संग्रह की भूमिका में रघुवीर सहाय ने लिखा है-

> ''मैंने कविता लिखते हुए अपने माध्यम भाषा के साथ जो कुछ किया उससे बहुत कुछ मालूम हुआ। सबसे बड़ी बात जो कविता ने मुझे सिखाई वह है शब्दों की फिजूलखर्ची की निरर्थकता। कहानी लिखते हुए मुझे इससे मदद मिली।[2]

स्पष्ट है कि भाषा के अन्तर्गत रघुवीर सहाय शब्दों की फिजूलखर्ची को उचित नहीं मानते। अत: वह शब्दों का सही इस्तेमाल करते हैं। बेवजह शब्दों की

---

1 रघुवीर सहाय, संपादक, विष्णु नागर, असद ज़ैदी, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), 1993, पृ. 157-158

2 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2000, पृ. 26

भरमार कर देना रघुवीर सहाय को जैसे पसन्द ही नहीं था। इसी कारण वह अपनी रचनाओं में शब्दों का सोच समझकर इस्तेमाल करते हैं। कहानियों की भाषा से यह बात स्पष्ट हो जाती है। रघुवीर सहाय ने जितना उचित समझा उतना ही कहा। 'सपने आर सवेरा' कहानी में इस बात के प्रमाण देखे जा सकते हैं-

> ''फिर एक दिन उसे देखा। एक तनिक साँवली-सी, छोटी-सी, चपल नवयुवती। अधखुले ओठों पर आधी कही बात-जैसी मुस्कान। आँखों में लाज का काजल। सुघर, सलोना मुख, बहुत भोला।...[1]

इस प्रसंग में एक नवयुवती की सुन्दरता का रघुवीर सहाय ने कितने कम शब्दों में और सार्थक वर्णन कर दिया है, यहाँ स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि रघुवीर सहाय ने शब्दों का इस्तेमाल किस प्रकार सोच-समझकर किया है।

वस्तुत: रघुवीर सहाय ने अपनी कहानियों में शब्दों की भरमार न करके कम और उचित शब्दों का ही प्रयोग किया है। वह कहीं भी शब्दों की फिजूलखर्ची से बचते रहे हैं।

भाषा को लेकर रघुवीर सहाय अत्यंत सतर्क थे। वह एक कहानीकार होने के साथ-साथ एक पत्रकार भी थे, अत: वह शब्दों का मूल्य अच्छी तरह पहचानते थे। भाषा के अन्तर्गत रघुवीर सहाय एकदम सतर्क थे।

'रास्ता इधर से है' की भूमिका में रघुवीर सहाय भाषा के विषय में कहते हैं-

> ''भाषा लेखक के साथ मनमानी किया करती है और लेखक उसे मनमानी करने से रोकता रहता है। जो कहना है, वह न कहकर कुछ और कह रहा है, इस खतरे से उसकी हर वक्त कुश्ती होती रहती है।''[2]

स्पष्ट है कि रघुवीर सहाय भाषा के प्रति कितने सजग थे। वह जानते थे

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2000, पृ. 37

2 वही, पृ. 25

कि भाषा के अनेक खतरे हो सकते हैं। इन खतरों से लेखक को हमेशा सावधान रहना चाहिए। 'दो अर्थों का भय' नामक कविता कुछ इसी प्रकार की है।

वास्तव में रघुवीर सहाय कम शब्दों में अधिक बात कहने का हुनर रखते थे। शब्दों का इस्तेमाल रघुवीर सहाय बड़ी चतुराई और खूबसूरती से के साथ करते हैं-

> यह रात है। गाँव में रात है, शहर में रात है।[1]

रघुवीर सहाय ने रात की गंभीरता यानी अंधकार के साम्राज्य की ओर इशारा किया है। कहने का अभिप्राय यह है कि वह रात की विराटता को दिखाने का प्रयास कर रहे हैं।

रघुवीर सहाय मूलत: एक कवि थे। उनका मन एक कवि का मन था। अत: काव्यात्मकता उनकी भाषा का एक विशेष गुण था जो कहानियों में भी देखा जा सकता है। 'इन्द्रधनुष' कहानी काव्यात्मकता की दृष्टि से देखी जा सकती है-

> ''आसमान में कुछ हो रहा था। इस बीच एक बहुत असाधारण बादल घिर आया था और इस तरह से अपने को खोल और समेट रहा था कि मैं उसे देख लूँ। बरसेगा, मैंने कहा।''[2]

'इन्द्रधनुष' कहानी में रघुवीर सहाय ने अपनी काव्यात्मक दृष्टि का प्रयोग किया है। इस कहानी में कई जगह हम इसे देख और महसूस कर सकते हैं। एक और प्रसंग इसके प्रमाण स्वरूप दिया जा सकता है-

> ''किसी रंगीन दुकान से दो औरतें निकलीं और तेजी से एक ओर निकलती चली गईं... अपनी साधारणतया स्त्रियोचित चाल का एक द्रुततर छंद बनाती हुईं... ग़ौर करने पर देखा जा सकता था कि

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2000, पृ. 31

2 वही, पृ. 163

उसकी मौलिक ताल क्या है- मैंने देखा और आनन्द देते हुए उन्हें दूर तक चलते चले जाने दिया।''[1]

अत: काव्यात्मकता को इनकी कई कहानियों में सहज ही देखा जा सकता है।

रघुवीर सहाय की भाषा की एक और विशेषता है जो विशेष गौर करने लायक है। वह है- आम बोलचाल की भाषा। श्री मनोहर श्याम जोशी जी ने रघुवीर की भाषा के प्रति जो विचार व्यक्त किए हैं, उन्हें देखना लाभदायक होगा-

''रघुवीर की 'साँस की लय' को लेकर लोगबाग दो अन्य कारणों से भी हैरान-परेशान थे। पहली यह कि उसे बोलचाल की भाषा बेहद पसन्द थी। दूसरी यह कि उसकी साँस की लय में जो छन्द बसे हुए थे वे ज्यादातर 'ढम्मर-ढम्मर ढोल बजाते' छन्द थे।''[2]

श्री जोशी जी ने यह सब रघुवीर सहाय जी की कविता की भाषा के लिए कहा था। लेकिन यही बात रघुवीर की कहानियों पर भी लागू होती है। इनकी कहानियों में हम आसानी से आम बोलचाल की भाषा को देख सकते हैं। इन्द्रधनुष कहानी में हम इस तरह की भाषा को देख सकते हैं-

''कीचड़-भरी पिछवाड़े की गली में दीवाल से सटे-सटे मैं जाने लगा। थोड़ी दूर पर, मैं जानता था कि बाज़ार के बीच वाला खेल का मैदान है और पक्की सड़क भी वहीं से मोड़ लेती है।[3]

इसके अलावा रघुवीर सहाय की अनेक कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें आम बोलचाल के शब्द बहुत मिल जाएंगे।

---

1 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2000, पृ. 64

2 रघुवीर सहाय : रचनाओं के बहाने एक स्मरण, मनोहर श्याम जोशी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-2003, पृ. 22

3 रघुवीर सहाय रचनावली, खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2000, पृ. 63

उपसंहार

रघुवीर सहाय मूलतः एक कवि थे। उनका मन एक कवि-मन था। इस कवि-मन का प्रभाव इनकी कहानियों पर भी पड़ा। यह स्वाभाविक भी था। रघुवीर सहाय 'रास्ता इधर से है' कथा-संग्रह की भूमिका में स्पष्ट तौर पर कहते भी हैं कि वह लिखने तो बैठते हैं कविता, लेकिन लिख जाते हैं कहानी। इसके बावजूद वह अच्छी कहानियाँ लिखते हैं। यह उनके महान साहित्यकार होने का प्रमाण है।

रघुवीर सहाय इन कहानियों में जीवन की एक नई समझ पैदा करने की कोशिश करते हैं। उनका उद्देश्य अपनी कहानियों के माध्यम से पाठक वर्ग में 'परिवर्तन की इच्छा' जगाना है, उनमें सामर्थ्य पैदा करना है।

इन कहानियों की मुख्य विशेषता यह है कि यह कहानियाँ दया के विरोध में लिखी हुई कहानियाँ हैं। इसका कारण है रघुवीर सहाय की अपनी सोच, उनका दृष्टिकोण। रघुवीर सहाय ने इन कहानियों में दया को एक प्रकार से अपमान के रूप में प्रस्तुत किया है। सेब, एक जीता-जागता व्यक्ति, मेरे अैर नंगी औरत के बीच, आदि कहानियाँ इस बात का प्रमाण है।

इन कहानियों में रघुवीर सहाय कला, वस्तु, रचना एवं शिल्प आदि को समझने की प्रक्रिया में मानवीय, संबंधों को समझने का प्रयास करते हैं। यह प्रयास इन कहानियों की विशेषता भी है और उन्हें ताकत भी देता है।

शिल्प के संदर्भ में देखें तो इन कहानियों का शिल्प नया भी है और विशिष्ट भी। नया इसलिए क्योंकि यह कहानियाँ जिस ढंग से लिखी गई हैं, वह ढंग इससे पहले की कहानियों में नहीं दिखता। इन कहानियों की शुरूआत से ही

इस तथ्य को देखा जा सकता। इन कहानियों की शुरूआत ही विशिष्ट ढंग से होती है। इन कहानियों की सम्पूर्ण रचना-प्रक्रिया ही विशष्ट प्रकार की है। कहानी की कला, सीमा के पार का आदमी, प्रेमिका, उमस के बाहर, मुक्ति का एक क्षण आदि कहानियों को इनके प्रमाण स्वरूप देखा जा सकता है।

रघुवीर सहाय ने कहानियों में गद्य को भी जगह-जगह तोड़ा है और एक प्रकार से कहे तो तोड़-मरोड़कर पेश किया है। लेकिन फिर भी इन कहानियों में किसी प्रकार की त्रुटि दिखाई नहीं देती, बल्कि इससे इन कहानियों की भाषा अधिक अभिव्यक्तिपूर्ण हो जाती है।

व्यंग्य की दृष्टि से भी इन कहानियों का महत्त्व कम नहीं है। इन कहानियों का व्यंग्य यथार्थ के संदर्भ में देखना चाहिए। स्पष्टवादिता कहानी में जिस व्यंग्य को अभिव्यक्ति दी गई है, वह वास्तविकता के ही संदर्भ में पाठक को यथार्थ का चेहरा दिखाती है। दुकानदारों की असलियत को यह कहानी बखूबी बयाँ करती है।

रघवीर सहाय की कहानियाँ देखने में छोटी जरूर है, लेकिन इनका प्रभाव छोटा नहीं। यह कहानियाँ वस्तुतः पाठक वर्ग के अंतश्चेतन को कहीं-न-कहीं बेचैन करती हैं।

आधार-ग्रंथ

1. रघुवीर सहाय रचनावली खण्ड-2, संपादक सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, पहला संस्करण-2003

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. अज्ञेय (सं.), दूसरा सप्तक, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड़, नई दिल्ली, छठा संस्करण : 1996

2. कृष्ण कुमार (सं.), रघुवीर सहाय संचयिता, राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2003

3. गजानन माधव मुक्तिबोध, कामायनी : एक पुनर्विचार, राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1950, पंचम संस्करण : 1991, चौथी आवृत्ति : 2007

4. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-1, संस्करण : 2004

5. नन्दकिशोर नवल, समकालीन काव्य-यात्रा, राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, संस्करण : 2004

6. मुकुन्द द्विवेदी, लालसिंह चौधरी, (संपादक), कहानी संचयन, के.एल. पचौरी प्रकाशन 8/डी, ब्लाक एक्सटेंशन, इन्द्रापुरी, लोनी, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण : 2002

7. मनोहर श्याम जोशी, रघुवीर सहाय : रचनाओं के बहाने एक स्मरण, वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2003

8. राजीव सक्सेना (संग्रहकर्ता), मैथिलीशरण गुप्त : एक मूल्यांकन, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, फरवरी-1988

9. रामचन्द्र शुक्ल, चिंतामणि भाग-I, प्रकाशन संस्थान, 4715/21, दयानन्द मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण : 2007

10. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, भूमिका - डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-I, तृतीय संस्करण : 2004

11. रामविलास शर्मा, नई कविता और अस्तित्वाद, राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 1993, आवृत्ति-2003

12. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, पहला छात्र संस्करण : 1992, आवृत्ति-2009

13. विष्णु नागर, असद ज़ैदी (संपादक), रघुवीर सहाय, आधार प्रकाशन, 372/सेक्टर-17, पंचकूला (हरियाणा), प्रथम संस्करण : 1993

14. सत्यदेव चौधरी, भारतीय काव्यशास्त्र : सुबोध विवेचन, अलंकार प्रकाशन, 3611, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण : 2003

15. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, मूल संस्करण : 1952, आठवी आवृत्ति-2007

16. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, संस्करण : 2008

17. हेमंत जोशी (संपादक), अर्थात् : रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 1994

अनुदित पुस्तकें

1. अशोकमित्रन (संकलकर्ता) आधुनिक तमिल कहानियाँ, अनुवादक के.ए. जमुना, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, ए-5, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 1993, तीसरी आवृत्ति-2005

2. माहेश्वर (अनुवादक), महाश्वेता देवी की श्रेष्ठ कहानियाँ, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, ए-5, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 1993, पांचवीं आवृत्ति-2007

पत्र-पत्रिकाएँ

1. नन्दकिशोर नवल (संपादक), कसौटी, रेनबो पब्लिशर्स लिमिटेड, ए-19, सेक्टर-56, नोएडा, अंक-6

2. नन्दकिशोर नवल (संपादक), कसौटी, रेनबो पब्लिशर्स लिमिटेड, ए-19, सेक्टर-56, नोएडा, अंक-8

3. नन्दकिशोर नवल (संपादक), कसौटी, रेनबो पब्लिशर्स लिमिटेड, ए-19, सेक्टर-56, नोएडा, अंक-10

4. नन्दकिशोर नवल (संपादक), कसौटी, रेनबो पब्लिशर्स लिमिटेड, ए-19, सेक्टर-56, नोएडा, अंक-11

5. नन्दकिशोर नवल (संपादक), कसौटी, रेनबो पब्लिशर्स लिमिटेड, ए-19, सेक्टर-56, नोएडा, अंक-12

6. रघुवीर सहाय, (संपादक), दिनमान, मार्च, 1983